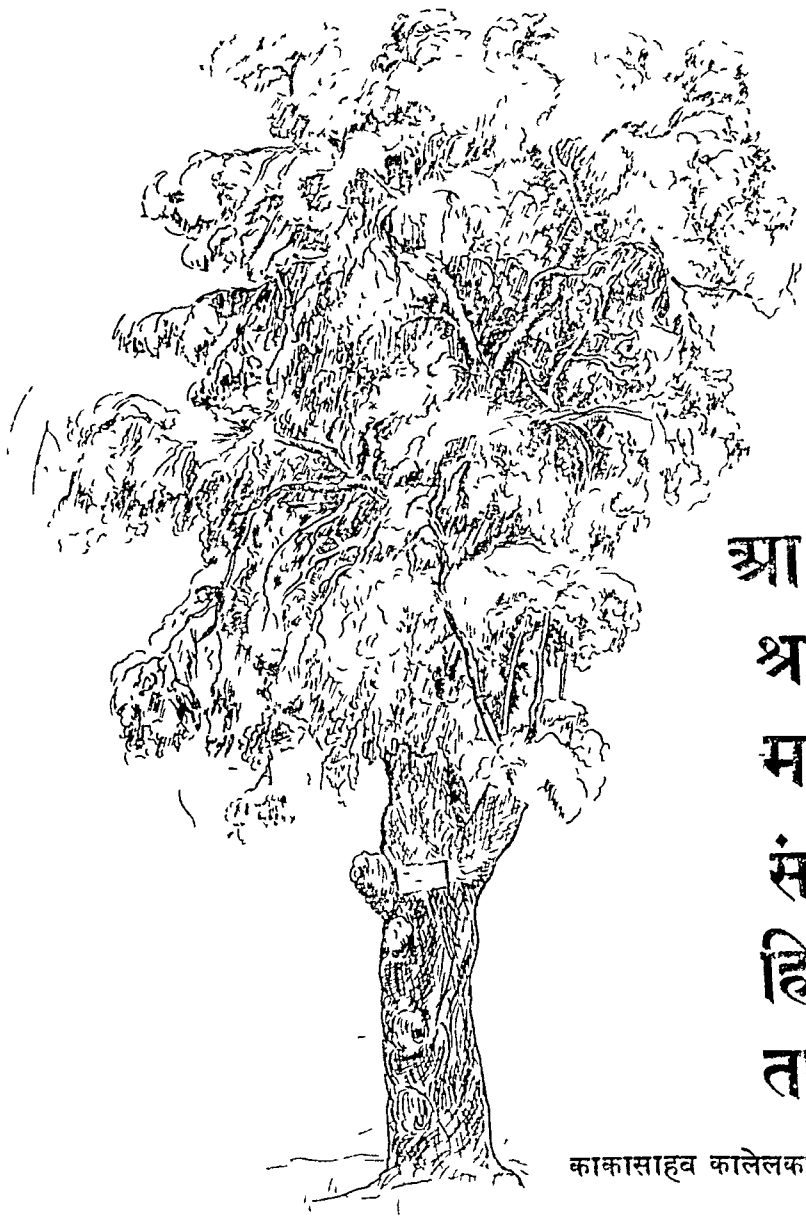


आश्रम-सहिता



आ
श्र
म
सं
हि
ता

काकासाहव कालेलकर

प्रकाशक

श्री अमृतलाल नाणायकी
गांधी हिंदुस्तानी साहित्य समा,
राजघाट, नयी दिल्ली १



आश्रमके प्रवेशद्वारके पास जो पुराण पुरुष अमली-वृक्ष खडा है,
जो वहाँ आश्रमकी स्थापनाके पहले भी था,
आश्रम-जीवनके दिनोंमे जिसने अतिथियोको प्याभूका काम दिया
और जो आज फैलकर आश्रमके दिनोंका स्मारक बना है,
भुसीको यह
आश्रम-संहिता
प्रेममे अर्पण करनेको जी चाहता है ।

प्रास्ताविक

जब गाधीजी दक्षिण आफ्रिकाका अपना काम पूरा करके भारतमे रहनेके लिये और स्वराज्यमेवाके लिये आये तब उनके मनमे आदर्श जीवन-निर्माणकी बात थी ही। वृष्णव जैन आदि हिन्दू मन्कार तो उनके खूनमे ही थे। मुसलमानोके साथका परिचय भी उनके पाम काफी था। विलायतमे(और आफ्रिकामे भी) क्रिश्चन लोगोमे अन्हे गहरा नपर्क मिला। और उनमे औञ्चर-प्राप्तिकी, मोक्ष-साधनाकी और निष्काम सेवाके लिये कर्मयोग चलानेकी महन्वाकाशा जाग्रत हुआ। स्वराज्य-प्राप्ति उनके मन केवल अस्स आदर्श जीवनका एक अनिवार्य साधन ही था। अस्सलिये भारत लौटते ही अन्होने यहाँ एक आश्रम खोलना चाहा। उनके पहले भी उनका निजी जीवन आश्रममय था ही। अन्होने एक आश्रम खोलनेका अपना सक्न्त जाहिर किया और लोगोमे विधायक सन्त ह-सूचना मांग ली।

गाधीजीकी जीवन-साधनाका यह एक बडा वैशिष्ट्य है कि वे बोझी भा प्रवृत्ति अकेले नहीं करते थे। वान व्यवहारकी हो या आध्यात्मिक साधनाकी, समानधर्मा लोगोको दृष्टना, उनको बुलाना, उनमे सन्त ह-सूचना लेना और वन सके तो उनका सहयोग भी लेना—यह प्रवृत्ति गाधीजीके मनमे और हृड्डीमे थी ही। अस्सलिये अन्होने दो-तीन जगह व्याख्यान देकर अपनी आश्रमकी कल्पना, अर्ह्य और कार्यपद्धति लोगोको समझाओ और देशमे एक दके ध्मनेके वाद अहमदावादमे एक छोटा-सा आश्रम खोला।

जा चाज भारतकी सम्बृतिम प्राचान कालम पनपता जायी है असाका अक प्रयाग अक मुयोग्य यकितके द्वारा हानवाला है असा पता चलते ही कआ लाग बिना बुग्य गाधीजीक पास पहुच गय । दक्षिण जाविकाके अनक माषा ता अनक पास थ हा । असत स्वत गाधीजीका स्वराज्य मवा जीर जात्रम प्रवति दोना वर गओ । जावन परिवतनके साथ ममाज-मुधार ता आ हा गया । बच्चाका शिक्षाक तारा राजनीतिक, सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक औद्योगिक जीर कलात्मक सब पहलू आधमक तारा यकन हान लग । सत्याग्रहाधम गुरुन हा मवाधम था जीर आखिर तर मवाधम हा रहा । मवाक लिअ विद्या, सेवाके लिये ग्रामाशाग मवाक त्रिय मता और गारक्षा और मवाक त्रिय ही जसह याग जीर सत्याग्रह यह था गाधीजीके सत्याग्रहात्रमका स्वरूप ।

मान राष्ट्रको स्वराज्यका साधना करनी थी । अमक लिय राष्ट्रन अस्मिन् भारताय मवसग्राहक अक सस्था स्थापित की थी जिमका नाम था अिण्डियन नेशनल काग्रम । गाधीजीने जिम सस्थाका हायम कर अम कपनातान वर त्रिया और अुसक द्वारा अपन जातजा भारतको आत्रात्र बनाया । अिम मस्थाके सामन गाधीजीका निजी सस्था सया प्रनाधम छाटा बन गया । जात्रमका व्यापक बनानक लिअ त्री जमना त्रान्तजान गाथा सेवा-मषका स्थापना की । गाधीजीन यथाममय सत्याग्रहाधमका विमजन किया । गाथा-सेवामषका भा विमजन किया और स्वराज्य पान हा अिण्डियन नेशनल काग्रमका रूपान्तर कर अम त्रान्त मवा मषका रूप त्रनका बान मुताया ।

कारमका अिन्तियम त्रान्त सामन है हा । सत्याग्रहात्रमका अिन्तियम गाथात्रान त्रनका बाना ता त्रिया । त्रकिन् अुह मनाप हा मक त्रिम मरुम अम क पूग नरा कर मक । गाथा सेवा मषका जावनकाल बहुत दाशा था । त्रकिन् आधमकी अत्राग मषका प्रवति व्यापक थी । वर गवर्नात्रि नता अमक त्रान्त जा गय थ मा फन त्रन २ । त्रिमात्रिष

गांधीजीका आश्रमी प्रयोग

देशसेवा करनेका तरीका सीखनेके लिये और देशसेवा करनेके लिये गांधीजीने सावरमतीके किनारे वरसों तक सत्याग्रहाश्रम चलाया । और उसका अद्भुत पूरा होने पर उस आश्रमका विसर्जन करनेकी बुद्धिमानी और हिम्मत भी बतायी । सत्याग्रहाश्रमसे प्रेरणा पाकर उसीके नमूने पर छोटे-बड़े कभी आश्रम भारतमें जगह-जगह पर खोले गये । अिनमेंसे चन्द आश्रम आज भी चलते हैं । अिन आश्रमोंका सामाजिक जीवन पर जो असर हुआ उसका मूल्यांकन अभी तक किसीने किया नहीं है । गांधीजीके बड़े-बड़े राजनीतिक शिष्योंने और अनुयायियोंने अिन आश्रमों की प्रकट या खानगी तौर पर निन्दा कम नहीं की । निन्दामें कुछ हिस्सा जायज था । लेकिन निन्दा करनेवालोंके मनमें आश्रम-जीवनके दोष दूर करके उसे शुद्ध करनेकी वृत्ति नहीं थी । समयी और व्रती जीवनके प्रति अश्रद्धा होनेके कारण गांधीजीके अिस प्रयोगके प्रति अुनके मनमें तनिक भी सहानुभूति नहीं था ।

गांधीजीका आश्रम-प्रयोग निर्दोष नहीं था । अुसमें सुधारके लिये काफी गुजाअिश थी । आज सत्याग्रह-आश्रमके टगका आश्रम चलाना शायद शक्य नहीं है, अिष्ट भी नहीं है । आश्रमजीवनमें पले हुए लोगों में कुछ विकृतियाँ आयीं । युवकोंने आश्रमजीवनका पूरा अनुभव लेनेके बाद अुसके खिलाफ बगावत भी की । म्बराज्यके आन्दोलनमें अिन आश्रमवासियोंका ठीक-ठीक अुपयोग हुआ । सरदार वल्लभभाअीने आश्रमवासियोंकी सेवामें काफी लाभ अुठाया । आश्रमवासियोंकी बौद्धिक जडता और व्यवहारअुन्यताके प्रति अपनी चिड प्रयत्न करनेपर

२ आश्रम सहिता

भी वे छिपा नहीं सकते थे। महादेवभाभा दसाभा जस बुगल पुग्ग आश्रमम निभ कम सवन हैं अिसका जादचय भी बड बडे गग करत थ। गाधीजीने जाश्रमका प्रयोग पूरी श्रद्धाभ अरस तक चलाया। जाश्रमवासियोंके आतरिक दोषाके कारण और खास करके अपन राज नीतिक अनुयायियात्री टीकाके कारण गाधीजीका अुत्साह बहुत कम हा गया। दूसरे अनेक महत्वके कारणास जुहोने गुजरान छोडकर वर्धा जाकर रहना पसंद किया। जहाँ गाधीजी रह वहाँ अुनके अिद गिद जाश्रमजीवन बन ही जाता था। लेकिन साबरमती छाडनेके बाद अहान जाश्रमजीवनके प्रयोगम अपना पूरा ध्यान नहीं पियेया। स्वराज्यका आगोलन चलाते अुह हमशा घूमना पडता था। राजनीतिक कामाम सारा ध्यान देना पडता था। तो भी जाश्रमजीवन अुनके अिअे खास प्रवासके जसा स्वाभाविक था। क्या नोआवालीम और क्या भगी कान्नाम, अनेके अिद गिद आश्रमका ही वायुमडन रहता था।

गाध प्रणात जाश्रम जीवनके गुण-दाषका गटम्य रूपस हिसाव करन अुनुकल प्रतिकूल बहुत-सी बात कह सकत हें। लेकिन सत्या ग्रहाश्रमके प्रत्यक्ष जीवनकी सिद्धि कसी भा हा गाधीजीके अिस प्रयाग के कारण सारे देगम चारित्र्यकी अुन्नतिका अेक अजबल वायुमडल तयार हुआ था, जिसने स्वराज्य प्राप्तिम बडी मदद की। व्यक्तिगत जीवन कौटुम्बिक जीवन सामाजिक राष्ट्रीय और मावजनिक जीवन का अितना अूचा आदस गाधीजीन देगके सामन रखा कि अुसका नजदीक स या दूरस ध्यान करके हा भारतम चारित्र्यकी सर्वाङ्गाण अुन्नति हान लगी। जिन लागेन गाधीजीके आश्रम प्रयोगकी निमम होकर मुहभर निन्दा की अन्हान चारित्र्य निमाणके अेक स्रोतको सुखा दिया और आज हमारे राजनीतिक नता अपनी वाणीका अधिकाश अुपयाग चारित्र्यकी आवश्यकता पर निर्वीम व्याख्यान दतम करते हैं। चारित्र्य का आवश्यकता पर दिय हुअे ग्रामीफोना व्याख्यान अितने अलत है,

राष्ट्रीय चारित्र्य अधिकाधिक गिरता जा रहा है। चन्द छोटे-बड़े सरकारी कर्मचारियोंके आचरणकी कभी-कभी जाँच करनेसे और अुन्हे कडी-से-कडी सजा करनेसे स्थिति मुधरनेकी नहीं।

जिस तरह ठडाके दिन,मे कमरेमे थोडी अुष्णता बढ़ानेके लिये कमरेमे जग्ते हुअे अगारकी अगीठी रखनी पडता है अुसी तरह देशका चारित्र्य अुन्नत करनेके लिये देशके नेताओंको और राजकर्मचारियोंको भी आदर्शकी अगीठी बननी चाहिये। जिन शहरोमे सेन्ट्रल हीटीगकी व्यवस्था होती है, वहाँ तो अुष्णता, अत्यन्त तेज अुष्णता, अुत्पन्न करने का और घर-घर पहुँचानेका अेक महकमा ही होता है। आजकलकी सरकारे भी अुच्च न्यायालय, पब्लिक सर्विस कमिशन, फौज और पुलीस अिन चार विभागोमे पक्षपातरहित अमुक किस्मका चारित्र्य सभालनेकी कोशिश करती है। किन्तु शिक्षा विभागमे अैसे प्रयत्नका अभाव ही है। जो हो गांधीजीके आश्रम-प्रयोगका जैसेके वैसे अनुकरण या पुनरुज्जीवन हो नहीं सकेगा अिस बातका स्वीकार करते हुअे भी कहना चाहिये कि नये ढगके आश्रम जगह-जगह चलाये विना परिस्थिति मुधरेगी नहीं। जिस तरह ऋषिकालीन आश्रमोमे परिवर्तन करके गांधीजीने अपने आश्रमका नया आदर्श चलाया अुसी तरह गांधीजीके प्रयोगमे जरूरी परिवर्तन करके अेक नया आदर्श और नया प्रयोग देशभरमे चलाना चाहिये। अैसे प्रयोगके द्वारा शान्तिसेनाकी आवश्यकता भी पूर्ण हो सकेगी।

यह सब करनेके लिये गांधीजीके युग-परिवर्तन करनेवाले प्रयोग का अितिहास देशके सामने और दुनियाके सामने विस्तारसे प्रगट करने की आवश्यकता है। मेरे अुत्कट अनुरोधसे गांधीजीने आश्रमका अितिहास लिखनेका स्वीकार किया। लेकिन वैसे वे न कर सके। जो-कुछ थोडा वे लिख सके, अुससे अुन्हे सन्तोप नहीं था। अुसे जैसेके वैसे प्रकाशित करनेकी मजूरी अुन्होंने नहीं दी। अुनके देहान्तके बाद अुस

४ आश्रम-सहिता

चीजको प्रयोगित किया है। तुलना बल है कि जगतां जाय सिंगिता
ध्यान तत्र नही गया।

राग चारिश्यक विनामनी अिच्छा करना है। तन्निन जिय गाधना
के द्वारा गाधीजी राष्ट्रना अुन सिंगाम मना कर गक भगव प्रति लता
की अनास्था ही है।

पुण्यस्य फलम् अिच्छति पुण्यम् नेच्छति मानया।

पुण्यका फल ता गोगाको चाशिअ। पुण्यकी गाधना राग साहन
नही।

जिस तरह हमारे दशम ऋषि मुनियों स्मृतिकाराने गुरुकुलके
आचार्यों और साधु-सन्तान आश्रम-जीवनके तरह-तरहके प्रयोग
किये अुमी तरह पश्चिमम अीसाधियाने भी तरह-तरहके सामाजिक
जीवनक आ्यात्मिक प्रयोग किये है। अनका पूरा अितिहास तो वही
नही मिलता। किन्तु यूरपके मध्यकालीन अितिहास और तमोयुगम
चारिश्यके बनाय रखनम अिन आश्रमों काफ़ी मदद की है।

अपनी धार्मिक स्वतंत्रता अवाधित रखनके लिअ स्वतंत्रता त्याग
करके जा लोग अमरीका जाकर बसे अस लागोक सामाजिक जीवनक
धार्मिक प्रयोगमसे बीस तीस प्रयोगका बयान अमरिवन कम्युनिटाज
नामक किताबम पाया जाता है। बाल्म धमनों बाजू पर रखकर
चारिश्यक वारेम निरुत्साहा बनकर कवअ अय यवस्थाको ही प्रधानता
दनेवाल समाजमत्तावाणी और साम्यवाणी राष्ट्रीय प्रयाग चन। अही
का यह युग है। तन्निन सफलता कहा शीख नही पडती। अिसलिअ
आध्यात्मिक प्रयोगका फिरम अव्ययन अितन करता जरूरी है। सर्वों
दय चाहनवान लागका यह कत य है कि व दुनियाभरक प्राचान
मध्यकालीन और वतमान प्रयागाका अितिहास ढल न और विश्वजनान
अनुभवका संग्रह करें।

भारतसेवक गोखलेका सेवाश्रम

सन् १८८५ मे देशके दीर्घदर्शी नेताओने 'अिण्डियन नैशनल कांग्रेस' की स्थापना की, तव उसका स्वरूप दिसम्बरके बडे दिनोमे चार दिन के लिये अिकट्टा होनेवाले अेक नये मेलेके जसा ही था । प्रस्ताव पास किये, अनु पर व्याख्यान दिये, अनुकी प्रतियाँ भारतकी अग्रेज सरकार के पास भेज दी, अनुको अखवारोमे छाप दिया तो अेक सालका काम पूरा हुआ । फिर तो हरअेक आदमी अपने-अपने निजी व्यवसायमे व्यस्त रहता था । बहुतेसे अखवार अग्रेजीमे चलते थे, जिनका सामान्य-प्रजा-जागृतिके लिये विशेष अुपयोग नही हो सकता था ।

कांग्रेसका आन्दोलन और राष्ट्रीय महत्त्वाकांक्षा प्रजाके कानो तक पहुँचानेके लिये लोकमान्य तिलक-जमे अनेक नेताओने देशी भापामे अखवार चलाये और कांग्रेसके नेताओको बतता दिया कि देशजागृति तो देशी भापाओके द्वारा ही हो सकती है । अनु दिनो जिन मुट्टीभर लोगोके हाथमे कांग्रेसकी वागडोर थी, ('कांग्रेसकी सत्ता' कहने जैसी स्थिति थी ही नही) वे सब अग्रेजीमे ही काम करते थे । अिससे लोक-शक्ति जाग्रत नही हो सकी । देशी भापामे अखवार चलानेसे और व्याख्यान देनेसे और लोगोकी ठोस सेवा करनेसे देशमे प्रजा-जागृति हो सकती है, लोकशक्ति सगठित हो सकती है, अितना जिन्होंने सिद्ध कर दिया अनुको *extremist*, जहाल या अुद्दाम पक्ष कहने लगे ।

अिसके वाद नामदार गोखलेने साचा कि कांग्रेसका काम हरसाल केवल नातालके बडे दिनोमे करनेसे कामयाबी होनेवाली नही । देशके नेताओ

६ आश्रम-सहिता

के पास असे साधियोंकी सेवकोकी आवश्यकता है जो राष्ट्रसेवाकी दीक्षा लेकर अपना सारा समय अपना सारा जीवन अर्पण कर सकें ।

अस अुद्देश्यकी पूर्तिके लिके गोखलेजीने पवित्र संकल्प किया और Servants of India Society की स्थापना की । वे स्वयं प्रथम भारत सेवक हुअ । अुनके साथ थी श्रीनिवासशास्त्री श्री देवघर श्री ठक्कर बाप्पा, श्री कुशरू आदि लोग भारत सेवक बनकर काम करने लगे । Servants of India Society के अन्दर सदस्योंने राजनीतिक काम हाथ में न लेकर समाजसेवाका कार्यक्रम अपने हाथमें लिया, जिसकी तुलना गांधीजीके रचनात्मक कामसे थोड़ी कुछ हो सकती है ।

जब गांधीजी भारतमें जाये तब श्री गोखलेजीने अुद्देश्य अनुरोध किया कि Servants of India Society के सदस्य बनो और अुसके द्वारा राष्ट्रसेवा करो । गांधीजी प्रथम राजी नहीं हुअे लेकिन गोखलेजीके देहातके बाद गुरुभक्तिसे प्रेरित होकर गांधीजीने Servants of India Society में प्रवेश पाने के लिके अर्जी की ।

अब गोखलेके गिप्योंके सामने बडा घमसकट खडा हुआ । गांधीजी थ गोखलेके निष्ठावान भक्त या गिप्य । Servants of India Society अेक आध्यात्मिक गणिका है असा गांधीजी मानते थ, अुसका आदर करते थे असी हालतमें गांधीजीकी अर्जी मजूर किये बिना चारा नहीं था । लेकिन मजूर करनेकी हिम्मत गोखलेके गिप्योंमें नहीं थी । व जानते थ कि गांधीजी गोखलेके गिप्य हैं सही लेकिन अुनकी विभूति कुछ आर है ।

Servants of India Society का घमसकट ध्यान में आत ही गांधीजीने अपना अर्जी वापस लीव थी श्रीनिवासशास्त्री आदि लोग, व अभयदान दिया और अपना अेक अलग आश्रम खोला । (हालाकि व अवधारणमें Servants of India Society के सदस्य मान जाते थ ।)

यथासमय गाधीजीने Servants of India Society को आर्थिक और अन्य मदद की। लेकिन अुस सस्थाके साथ गाधीजी अेकरूप नही हो सके।

गाधीजीने 'देशसेवा करनेका तरीका सीखनेके लिये और प्रत्यक्ष देशसेवा करने के लिये' सत्याग्रहाश्रमकी स्थापना की। स्थापनाके पहले अुन्होंने अपने विचार अेक योजनाके रूपमे छापकर देशके प्रमुख नेताओ के पास भेज दिये आर अुस पर अुनका सम्मतिर्याँ और रचनात्मक टीका-टिप्पणी माँग ली।

गाधीजीकी कल्पनाका दो-तीन प्रान्तोके लोगोने स्वागत किया और अुन्हे आमन्त्रण भी दिया। गाधीजीने सोचा कि 'मैं जन्मसे गुजराती हूँ। देशसेवाका प्रारम्भ गुजरातसे और गुजराती भाषाके द्वारा करूँ और गुजरातका पैसा राष्ट्रसेवाके लिये लगाऊँ।'।

आश्रमकी स्थापनाकी जव चर्चा चल रही थी तव मैंने अुन्हे सुझाया कि अहमदावाद नही, किन्तु अहमदावाद और वम्बलीके व.च सूरतके आसपास कही आश्रम खोलना अच्छा होगा। मेरी सूचना विचार करने योग्य है, अितना तो अुन्होंने कहा। लेकिन वस्त्र-निर्माणके भारत के प्रधान केन्द्र, अहमदावादमे हा आश्रम खोलनेका अुन्होंने निश्चय किया। और अहमदावादके पास, सावरमताके अुस पार कोचरव नामक गाँवमे वॅरिस्टर जीवणलालका अेक बगला किराये पर लेकर अुन्होंने आश्रमकी स्थापना की। तुरन्त दूसरा अेक पडोसका बगला भी किराये पर लेकर आश्रमके वस्तारके लिये अनुकलता प्राप्त की। अिस तरहसे भारतमे गाधीजीका आश्रमी प्रयोग शुरू हुआ।

राष्ट्रसेवाके लिये आश्रम-जीवनकी नितान्त आवश्यकता है, अिसका साक्षात्कार गाधीजीको दक्षिण आफ्रिकामे ही हुआ था। और अैसे दो प्राथमिक प्रयोग अुन्होंने वहाँ किये भी थे। अुनके जितके विना सत्याग्रहाश्रमके प्रारम्भका खयाल ठीक नही हो सकता।

‘अग्नि-सम्भव’ प्रवृत्ति

औराके मुख-दु खके साथ अेकरूप होना अुदार हृदयका लक्षण है । अपना विचार ता हरकोभी करता है । अपन लाभकी बात हरकोभी सोचता है । लकिन दूरकेका दुख समझना अुग दूर करनेकी कोशिश करना और अपना और पराया जसा भेद नहा करना यह छोटे मनके लिये शक्य नहा है । जिनका हृदय अंतर है अुनके लिये सारी दुनिया मानो अक खानदान बन जाती है ।

गाधीजीके स्वभावम मन्नात्माके थ सत्र लक्षण वचनम थे । जत्र रात्रकोम प्लग गुरू हुआ तत्र गेगाकी मवावा जेन अच्चा-सा परबध अज्ञान सगठित किया था । जब दक्षिण आफ्रिका गये तब वहाँके लोगोंके दुखके साथ व जोनप्रात हुआ । अपन बाल-बच्चा और अपन रिश्तेदारा व हा म्वाधरा विचार करके बठ जाता अुनके लिये नामुमकिन था । औराक बच्चाकी पताओका म्वाल व ज्यान करन है अपने बच्चाकी जार व दुःख करते हैं अुह अयाय करन है असा शिकायत अुनके लिये ही नहीं और लाग भा करत थ । घरके मेहमानोंकी मवा करनम अुज्ञान अपन स्त्रा-पुत्राका बडामे-बडा बमौटी की । घरम महमान लिये मुगमान आमाओ गत्र आन थ । अुनके कमरेम रसा हुआ पगाव वा बदन माफ करनका काम भी माता वस्तुखाका करना पटना था । हय वत्र मकत है कि गाधीजीके आत्मजावनका घरम हा प्रारम्भ हुआ । श्रिगा विगात्र कुम्ब भावनामग दक्षिण आफ्रिकाके दो आश्रम पैग श्र । गाधात्राका दिनिकम मटमण और अुनक यदूनी मित्र अत्रानिपर केनबेकका टाग्याय पाम । जब दक्षिण आफ्रिकाम

सत्याग्रह शुरू हुआ और भारतीय लोग जेलयात्रा करने लगे तब उनके बाल-बच्चोंके और दूसरे रिश्तेदारोंके रहनेका सवाल खड़ा हुआ। इस कारण भी अेक आश्रम चलाना जरूरी हो गया। सब जातिके, सब वर्मके और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले लोगोंके सहजीवनका सवाल गांधीजीको हल करना पडा। अिनमेसे अिस प्रयोगके द्वारा अुन्हे अपने जीवन-सिद्धान्तोका स्पष्ट दर्शन होने लगा।

जब दक्षिण आफ्रिकाके गोरोंने स्थानिक झुलू लोगोंके बलबेको दबाया और अुनकी कतल चलायी (जिसे झुलू वॉर कहते हैं), तब गांधीजीने घायलोंकी मदद करनेका काम बडी निष्ठासे किया और अिस तरह दयाके कार्यमे सरकारकी मदद की। अुन दिनो शरीरश्रम का और जान खतरेमे डालनेका जो अनुभव अुन्हे हुआ अुस परसे अुन्होंने निश्चय किया कि जिसे आजन्म सेवा करनी है, सेवामें ही जीवन व्यतीत करना है, अुसके लिये ब्रह्मचर्यका पालन नितान्त आवग्यक है। अुन्होंने देवी कस्तूरबाकी समति ली, व्रत लिया और अपने साथियोंको भी अुसके लिख प्रेरित किया।

अिस अरसेमे गांधीजीके हाथमे रस्किनकी किताब—*Unto This Last* आयी, जिसका सार अुन्होंने अपनी छोटी किताब ‘सर्वोदय’ मे दिया है।

मानव-कुटुम्बमे सब लोग अेकसे हैं, सबकी सेवा समाजके लिये अेकसी महत्त्वकी है, सबको खाने-पीनेका अेकसा अधिकार है और मनुष्य के सब व्यवहार विशाल कौटुम्बिक भावना पर होने चाहिये, यह हो गया गांधीजीका जीवन-सिद्धान्त।

गांधीजीने अपनी सारी जायदाद अर्पण करके *Phoenix Settlement* की स्थापना की। अुसमे अेक प्रेस रखकर *Indian Opinion* नामक साप्ताहिक चलाने लगे। प्रेसका और अखबारका

१० आश्रम सहिता

काम आश्रमी ढगसे चलने लगा । मकान सडे करना, पानीका प्रबन्ध करना सेती और बगीचा सब कुछ आश्रम-जीवनके पोषक क्रिय । अिस प्रयोगम West Polak Miss Schlesin आऽि गोरे लोग भी गरीब हुअे । गुजराती, मद्रासी महाराष्ट्री हिंदू मुस्लिम पारमी अमा वायुमण्डल वहाँ बन गया ।

गाधीजीने अपने आश्रमको Phoenix Settlement का नाम दिया सो खास सोचकर नहीं । फिनिक्स नामके गाँवके पास जमीन लेकर आश्रमकी स्थापना की अिसीलियस वह नाम पडा । लेकिन अिस नामके पीछे अक बडा रहस्य आज हम देख सकत हैं ।

पश्चिमके पुराणाम फिनिक्स नामके अेक अदभुत पक्षीका जिन्र आता है । कहते हैं कि यह पक्षी जब बूडा बनता है तब स्वयं आग जलाकर अुसम कूद पडता है । अुसकी मृत्युके बाद अुसके शरीरकी रक्यामेस दूसरा पक्षी पदा होता है, जो अपने पिताकी परम्परा आगे चलाता है ।

जब गाधीजीने ब्रह्मचर्यका व्रत लिया और परिवारका विसर्जन करके आश्रमजीवनकी स्थापना की तब वे सत तुकारामकी तरह कह सकते थे—

“जाळोनि सत्तार बसलों अगणीं ।”

—कौटुम्बिक जीवनकी आहुति देकर अुसमेसे अिस आश्रमकी अुन्हाने स्थापना की अुसे हम फिनिक्स या अग्नि-सम्भव कह सकत हैं ।

आगे जाकर दक्षिण आफ्रिकाका काम पूरा करके जब वे कायमके लिय भारतवर्षम आये तब अुन्हाने अपनी सारी जायदाद बहीवी बहा छोड दी । घाडी बितायें और लोगोंके प्रेमसे दिये हुअे मानपत्र लेकर वे हिन्दुस्तान आय । अिधर अुन्हाने सत्याग्रहाश्रमकी स्थापना की ।

दक्खिण आफ्रिकाकी सारी प्रवृत्ति समेटकर, औरोको सौपकर जब वे केवल वहाँका अनुभव ले आये, और आश्रमकी स्थापना की तब उनके सत्याग्रहाश्रमको हम जरूर ‘अग्निसम्भव’ कह सकते हैं ।

अिसी ख्यालको आखिर तक समझनेके लिये कुछ आगेकी बात भी यही पर देना अच्छा होगा ।

सावरमती आश्रमसे प्रेरणा पाकर श्री जमनलालजीने वर्धमि अेक आश्रम खोला और अुसमे श्री विनोवाजीकी स्थापना की । देशमे जगह-जगह आश्रम स्थापित किये गअे ।

जब गाधीजीके आश्रमकी शालामेसे विकसित रूपके गुजरात विद्यापीठकी स्थापना हुअी तब अुसीके नमूने पर काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, पूनाका तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ आदि अनेक सस्थाअे स्थापित हुअी ।

अिसके बाद अँग्रेजोकी दमन-नीतिका निषेध करनेके लिये सावर-मतीका सत्याग्रहाश्रम भस्म करनेके दिन आये, तब श्री जमनालालजीने गाधीजीका नाम लेकर गाधी सेवा सघकी स्थापना की । यह भी अेक तरहका अग्निसम्भव सघ ही था । आश्रमवासी श्री किशोरलालभाअी मशरूवाला गाधी सेवा सघके अध्यक्ष बनाये गअे । अिस सघने सारे भारतके गाधी-विचारके लोगोको सगठित किया ।

देशकी हालत ही अैस, बदलती गअी कि सुभापवावू जैसोकी टीकाके जवावमे और अपना कार्य व्यापक करनेके लिये भी गाधीजीने गाधी सेवा सघका पद्मा नदीके किनारे मालिकान्दा स्थान पर होम कर दिया । गाधीजी वर्धमि आकर रहे । वहाँकी प्रवृत्ति भी अिस तरह अग्निसंभव ही थी । कुछ दिन महिलाश्रममे, बादमे मगनवाडीमे और आखिरकार सेवाग्राममे वह चली । लेकिन हर जगह आश्रमी वातावरण होते हुअे भी अुसमे गाधीजी पूरे-पूरे ओत-प्रोत नह, हो सके । गांधीजी

१२ आश्रम-सहिता

जहा जात थे फिर वह नाआखालीका काजीर खिठ हो अथवा दिल्लीकी भगी कालनी हा वायुमण्डल तो जाश्रमका ही रहता था ।

गाधी सेवा सघका विजमन करनक बाद गाधीजी वधमि आकर रहे आर श्री विनोदा भावे गोपुरी जीर पवनारकी जीर चन गये ।

गाधीजीके दहातके वाट गाधा सेवा सघका व्यापक स्वरूप सब सेवा सघ और सर्वोदय समाजक नामम प्रकट हुआ । जिस सब सेवा सघने विनोदाकी भूदान और ग्रामदान प्रवृत्ति जाजमाजी जीर अमुके द्वारा व्यापक सर्वोत्प्य समाजकी स्थापना हो रही है ।

अिमा सर्वादय समाजका सौम्य विनाम हागा हिन्दुस्तानी तागीमी सघने द्वारा और जुय अुत्कट विनाम हागा गान्तिमनाके द्वारा ।

जगर अिममे हम कामयाब हुआ तो दुनियाम जगत्-जगह समाजमता वाट जीर साम्यवाद सर्वोत्प्यता रूप धारण करगा । यह सब सर्वेश्वर भगवानक हा हायम है ।

जिम वक्त ता हम गाधीजाक सत्याप्रताश्रम नामक जाश्रमी प्रयोग का अिनिहाम सब रूपरखाम रजू करना चाहत है ।

समन्वय-संस्कृतिका अद्गम-स्थान

समस्त मानवजातिके कल्याणका किसी भी तरह अनहित न हो अैसे ढगकी देशकी सेवा करना और अैसी सेवा करनेके लिअे अपनी योग्यता वढाना यही था गाधीजीके सत्याग्रहाश्रमका अुद्देश्य ।

आदमी द्वारा शुद्ध सेवा तभी हो सकती है जब अुसका निजी जीवन शुद्ध हो, मानवी कल्याणकी अुसकी कल्पना निर्दोष हो और सेवाके लिअे जरूरी कौशल्य अुसने हासिल किया हो ।

अैसी विविध योग्यता हासिल करनेके लिअे गांधीजीने आश्रमके सामने ग्यारह व्रत रखे ।

अिनमेसे पहले पाँच व्रत तो अेक या दूसरे रूपमे सब धर्मोंकी वुनियादमे पाये जाते है, हिन्दू, बौद्ध और जैन साधनाक्रममे और योग-शास्त्रमे भी अिन्हे यम कहा जाता है । पाँच यम और पाँच नियम मिलकरके मनुष्यकी व्यक्तिगत और सामाजिक साधनाकी वुनियाद मजबूत होती है । सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और सयम अथवा ब्रह्मचर्य ये हैं पाँच यम, यानी सयमके प्रधान क्षेत्र । और शौच (स्वच्छता), सन्तोष, तप, स्वाध्याय, अीश्वर-प्रणिधान ये नियम मिलकरके मनुष्यकी आत्मिक, सामाजिक और आव्यात्मिक साधनाकी वुनियाद मजबूत होती है ।

गाधीजीने पाँच यमोका यह सार्वभौम अुपयोग देखकर और अुनकी भस्कृति-समन्वयकी शक्ति पहचानकर अुन्हीने आश्रमजीवनका प्रारम्भ किया और अपने जीवन, चिन्तन, अनुभव और तुलनाके बलपर अुन्हीने

१४ आधम-सहिता

दूसरे छ व्रत अिनके साथ रख दिय । य छ व्रत भी आजका मानवजाति के व्यक्तिगत सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जीवनके दापाना पहचानकर ही यहाँ रखे गये हैं । अिनमसे जेक है निभयता । दूसरा है गरीरधमकी निरपवाद सावभौम आवश्मकता । समय, अपरिग्रह और निभयता तीनाकी साधनाके लिज जरूरी है अस्वाद व्रत । अिस बातका आजकी दुनियाके सामने रखनेकी हिम्मत गाधीजी ही कर सके । 'जित मव जित रमे — अिन मिद्धा तका महत्त्व जितना गाधीजान पहचाना था तना गायक ही किसी दूसरे समाजमेवकन मृतिकारन या धमकारने पहचाना होगा ।

दुनियाम मानवी अुनतिके लिअे स्थापित धम अनेक हैं । य सब धम सारी धुन्नतिके मूलम है । सकिन सकुचितता और अभिमानके कारण मनुष्यने धमको लेकर ही जगडे गुरू किय । पृथ्वीके सना सण्डामे अनेक धम चलत हैं और अुनके बीच तनाजा भी हमेशा चलता रहता है । स्वाध लोभ, जीर्घ्या और अहकारके कारण मानव मानवके बीच वश बगके बीच जो तनाजा चलता है अुसका बुराअी ता मनुष्य अट पहचान सकता है । धम धमके बीच और ममृति-मसृतिके बीच तनाजा पाया जाता है अुम दूर करना सबसे कठिन काम है ।

अिस तनाजेका दूर करनेके लिअ गाधीजीने अक व्रत मुझाया है सब धम-समभावका ।

दुनियाम जो अितनी हाड चलती है, हरअक सण्डके लग सस करक युरप अमेरिकाके पश्चिमी लोग जो सघप और प्रतिद्विद्धता चलाते हैं अुनका अिगाज गाधीजाने स्वदेगीम डडा । और अुसे आध्यात्मिक रूप लिया ।

गाधीजीने यह भा दला कि पश्चिमके गाराक, गाराक जार रखीन लोगके बीच जा शगडा चलाया है, अपना चमडीके रगके कारण जा

अूच-नीचका भाव अुन्होने वढाया है अुसीका अन्तिम रूप हमारे स्पर्शा-स्पर्शके दोषमे सगठित हुआ है । अपने-परायेका भेद जब वढता है, तब मनुष्य अन्धा होकर अस्पृश्यता जैसे महापाप समाजमे चलाता है । अगर अस्पृश्यता दूर की, अुच्च-नीच भाव दूर किया, अपना और परायेका भेद नष्ट किया तो विश्वकुटुम्बभाव स्थापित होगा और हम तहे दिलसे गा सकेंगे—

“कोओ नहीं है गैर, वावा, कोओ नहीं है गैर ।”

भारत, यूरोप (अमेरिका) और अफ्रीका अिन तीनो खण्डोके राज-नीतिक, सामाजिक तथा वाशिक झगडोका निरीक्षण करके गाधीजीने अिसका अिलाज वताया और जो आश्रमके ग्यारह व्रत तैयार किये, अिन व्रतो द्वारा नव-मानवताका निर्माण करना यही था अुनका विराट् आदर्श ।

भारतीय सम्यताका स्वभाव ही है कि हरअेक कल्पनाको सादा, मार्वभीम और माध-साथ नअ रूप दे देना । अिसीलिअे आश्रमके बुद्देशों, व्रतो और नियमोमे कही भी कल्पना-गौरव पाया नहीं जायगा ।

वचपनमे अपने पिताकी सेवा करते अुन्होने अुनके मुँहसे जो धर्म-चर्चा मुनी थी अुसका चिन्तन करके गाधीजी सघर्ष और समन्वयके स्वरूपको पहचान गये थे । विलायतमे अुन्होने अीसाअी धर्म और हिन्दू-धर्मके मूलभूत सिद्धान्तोका अध्ययन, मनन तथा चिन्तन किया । पूर्व और पश्चिमके सामाजिक जीवनके गुण-दोष देख ही लिये थे । दक्षिण आफ्रिकामे धर्मोके तनाजे, वर्ण-विद्वेष और वग-विग्रह (racial conflict) का पूरा दर्शन किया । और धर्माभिमान, वर्णाभिमान, चमडीके रगका अभिमान और सामर्थ्य और वैभवका अभिमान यह सब देखकर और अिनके कारण मानवता, वन्द्यता और विश्वकुटुम्बवाद कैसे छिन्न-भिन्न होते हैं यह सब अुन्होने देख लिया और वे समझ गये कि जब तक

मानस-परिवर्तन, जीवन परिवर्तन और समाज-परिवर्तन महा शूर मर्त्य तब तब मात्र-जाति कृताय नहीं है सबगो। अस्मिन् अस्मिन् आश्रम म अपने घरम जीर अपने साथ काम करने वान मय माधियाई जायनम बुहाने परिवर्तन करना शुरू कर दिया। यही था बुना आश्रम जावनता प्रारम्भ।

भारतीय सस्कृतिके गुण-श्लेष अहान दस्य हा थ। जानिका अभिमान, वर्णाभिमान दुर्बो जातियोक् प्रति तिरस्कार हिन्दू व मुस्लिम आश्रि जातियारा परस्पर अज्ञान और सहानुभूतिका जभाव गाराकी बुद्धताआ यह सब बुहाने देख ही लिया था। अिन तपाके कारण अब बडा राष्ट्र कितना दुबल, रोगी अपमानित और दयनीय बन गया है अिसका अनुभव बुहें था। भारतम हमने अछूताकी जा स्थिति कर रखा थी वही स्थिति नियतिन दशिन आश्रिकाम हमारे लोकाकी करके हम अेक बडा सबक सिखाया और गाधीजीन तो अिसका अनुभव सिरम पावतन हरअेक हट्टीमे किया। अिसी अनुभवके कारण बुनका चिन्तन अग्र हुआ और बुनकी जास्तिरताने बुहे रास्ता मुझाया। वह रास्ता टालस्याय काम जीर फीनिक्सके सटलमटके द्वारा बुहाने आजमाया।

गाधीजीने यह भी दखा कि यूरपके जागरूक बलाढ्य मतव जीर मगठित लोगोने विज्ञानके बलपर सारा दुनियाको अपने हाथम ल लिया है और आश्रित बना लिया है। अिस बडी आमुरी शक्तिका मुकाबला करना हो तो वह आत्मिक शक्तिस ही हो सकता है।

गाधीजीका यह आविष्कार या साध्यात्कार मानवजातिके विकासम सबसे महत्त्वकी घटना है। केवल भारतके अिधे नहीं किन्तु सार विश्व के लिअ यह अब लोकात्तर घटना है।

आजकल्के लोग काल-गणना अीसाके पूव जीर अीसाके पश्चान B C और A D अस भेदसे करते हैं। जब मनुष्यजातिका बाल्यकाल

दूर होगा, अन्धकार-युग हट जायगा तब लोग काल-गणनामे और मानवी अितिहासके विभागमे मत्याग्रहके जन्मके पहलेका अितिहास और सत्याग्रहके अवतारके बादका अितिहास अैसे विष्व-अितिहासके दो विभाग करेगे ।

भारतभाग्यविधाताने दुनियाके सब बगके लोगोको भारतमे ला छोडा है । और दुनियाके सब धर्मोके धर्म-जीवनके प्रयोग भी भारतमे ही वो दिये । अिस तरह भारत बहुवर्गी, बहुधर्मी देश बना है । यहाँ पर शान्ति, न्याय और कौटुम्बिक भाव स्थापित करना आसान नहीं है । लेकिन अगर कहीं भी सर्वप्रथम स्थापित हो सकता है, तो अिसी देशमे हो सकता है । आर सर्व-समन्वयका यह नया सन्देश अिसी देशमे बाहर फैल सकता है ।

अितिहासविधाताने भिन्न-भिन्न संस्कृतियोंका समन्वय करनेका मिशन भारतको ही सौपा है और अुसकी सिद्धि आश्रमजीवनके द्वारा ही हो सकती है ।

यह सब देखकर गाधीजीने आश्रममे सब धर्मोके और सब बगोके लोगोको अिकट्टा किया, सबकी प्रार्थनाको अेक साथ चलाया, सबके लिये समान हो सके असा अेक आहार ढूँढ निकाला और रसोधी बनानेमे लेकर टट्टी माफ करनेके काम तक सब कार्योके द्वारा सबको सादगी, श्रमजीवन और सर्वसमताके पाठ पढाये और अुन्होंने दिखाया कि जो बात आश्रम मे शक्य है, सिद्ध हो चुकी है वह बात सारे भारतमे और धीमे-धीमे सारी दुनियामे सिद्ध हो ही जायगी ।

गाधीजीने तैंतीस बरसो (अेक शतकके तिहाजी भाग) तक जितनी भी प्रवृत्तियों की अुनका अुद्गम आश्रमके जीवनमे ही है । अिसलिये आश्रम-सिद्धान्त, आश्रमके व्रत, आश्रमका जीवन और आश्रमकी प्रवृत्ति अिनका सूक्ष्म अध्ययन करना जरूरी है ।

आश्रम सांस्कृतिक जामन

आश्रम शब्दके दा अय हैं । गहरके बाहर या जगलम जहाँ अृषि लोग धमसाधनाके लिअे रहते हैं अंमे स्थानको आश्रम कहते हैं । अंमे स्थान पर अृषि गेग लडकाको और लडकियोको विद्यार्थीके तौर पर पाम रखकर सिखाते भी थे । आश्रम शब्दका सम्बन्ध श्रमसे तो है ही । आश्रमम अनोत्पत्तिके लिअे श्रम करना अग्निकी अूपामनाके लिअे समिधा आग्नि जगलकी चीजें गाना और तपस्या द्वारा श्रमित हाना यह सब बातें आ जाती है । अम श्रमजीवनके आश्रयस्थानको आश्रम कहते थ । आश्रम शब्दके साथ निष्पाप और सेवामय जीवन तपस्या समय की पवित्रताका श्यान् आ ही जाता है ।

अस आश्रमके साथ जगलकी खती, वक्ष-वनस्पति और पशु-पक्षिमा का भा सम्बन्ध आ जाता है । रवीन्द्रनाथन अपना 'साधना म आरण्यक जीवन आरण्यक विश्वविद्यालय और आरण्यक सस्कृतिके बारे मे लिखा ही है । यह सस्कृति दीवान्त्रीकी सस्कृति जसी सीमा-बद्ध नहीं हाती मुक्त होती है । वक्ष-वनस्पति और पशु-पक्षी आदिके सल्लासके कारण भी आश्रम-जीवन सम्पूर्ण जीवन होता है और आरण्यवासके कारण आदिम जाति आरण्यक लोगका भी सम्बन्ध अिसमे आता है । अक्सर पाया गया है कि आश्रमके अिदगिद रहनेवात आग्नि जातिके लोग अृषि मुनियाकी भक्तिभावसे सेवा करते-करते बहुत कुछ सांस्कृतिक लाभ अुठात थे । अिस तरह भारतम आर्योंकी सस्कृतिका प्रचार आरण्यकाम कुछ-न-कुछ होता ही था ।

सुद आर्योंके जीवनमे भी अिन आश्रमाका जामनके जसा अुपयोग

होता था । विलासी राजा लोग और श्रेष्ठी वैश्य लोग बीच-बीचमे कुछ कालके लिये आश्रमोमे जाकर रहते थे और अपने जीवनके काट (जग) को भुतारते थे । कोअी राजा लडाओमे हारकर अपना राज खो बैठे अथवा किसी वैश्यका चित्त बुद्विग्न हुआ तो अैसे लोग भी आश्रमो का आश्रय लेते थे और अपनी जीवन-धाराको मोडकर भुसे आध्यात्मिक प्रवाहमे वहा देते थे ।

प्राचीन आश्रमोमे कभी-कभी द्वादश वार्षिक अथवा छोटै-मोटै अनेक सत्र होते थे, जिनमे अनेक धर्मनिष्ठ, अनुभवी विद्वान् अिकट्टा होते थे और धर्मचर्चा द्वारा सस्कृति-सवर्धन करते थे । रामायण, महाभारत आदि पवित्र ग्रन्थोका निर्माण भी अैसे ही सत्रोके बाद होता था ।

अिस तरह आश्रमजीवन अनेक अर्थोमे आर्योके सास्कृतिक जीवन की वुनियाद ही थी ।

वर्तमान कालमे गाधीजी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अरविन्द घोष, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, श्रीमती अँनी बेजट, रमण महर्षि, नारायणगुरु अित्यादि लोगोने अपने नये ढगके आश्रम खोलकर पुरानी परम्पराको अवाधित रखा है और नया रूप भी दिया है ।

आश्रम-शब्दका असली भाव कायम रखकर अिन लोगोने अपनी-अपनी सस्थाको आधुनिक रूप दिया है । अगर हम अिन सारे आश्रमो का अितिहास ढूँढे तो हरअेकका रूप, हरअेकका आदर्श और हरअेकका जीवन-क्रम स्वतन्त्र और भिन्न भी है और भविष्यकालकी मनोरचना और समाज-रचनाका जो लोग मनन और चिन्तन करते है वे कबूल करेगे कि आजके जमानेको अिन सब आश्रमोकी जरूरत थी ही ।

: २ :

आश्रम-शब्दका दूसरा अर्थ है द्विजोकी सस्कारी आयुके तीन या चार विभाग ।

जिम तरह हमारे पुरखान समाजक शासन शक्ति पन्च गूढ भग चार वण उनार वसा तरह हरअक मन्सारा व्योतिर जायार प्रज्ञाप गाहस्य वानप्रस्य और सयाम जग चार विभाग नी किय है । एसा वणा अम-व्यवस्थाको जायजायनही वचानिक बनिया भी माना है ।

जिम आश्रम-व्यवस्थाम अयुष्य आर नि अयम प्रवति आर निवति दोनाका सम-वय भा किया है ।

पहन जयक आश्रमम जहाँ कव नपम्यारा आन्तरिक जायन हा प्रधान है अमका वात जमर हम छा द ना गिण्य-गम्भाराक गग अनरानर छापाकी सर्वाङ्गीण गिणाका आन्त जिमम प्रधान है अम अपियाक आश्रमम आरम जावनक दानो जय अकत्र आव है ।

अपियाक अम विगा आरमान नटिर वहाचार भा रहत थ गहस्याथमा सयमा अुपाव्याय भो रहत थ । सार समाजका सस्तरिनाका दीशा इनका भार जठानवान मयमधन जाचाय भा रहत थ और वानप्रस्य और सयामी भी (हो सक अतनी मवा नन तनक रिअ) अम आश्रमाका आश्रम मत थ ।

इतिहासम मात्म होता है कि जग विगिष्ट प्रराके आश्रम बट विवविद्यायना काम करते थ और राजधानाके आमपाम हा किसी अनुकू म्यान पर चलत थ । [आध तम विजयवाण और अमरावती अम दा केन्द्र परस्पर पूरक थ । अर थी राजधाना जोर इमरी था सांस्कृतिक विद्याधानी ।]

असा प्राचान परम्पराका विवृठ हा नया रूप देनेके रिज जा आधुनिक जा अम हुआ अतके कुत्र नाम नमनक तौर पर अपर स्थि है । अिहीमम गाधीजीक सत्याग्रहआरमक इतु अह ग जोर कायपद्धतिके धारम कुत्र मोचना है । याकीके सब आश्रम नापमी मस्याके तौर पर स्थापित हुआ है । दाधका तरह अपना काम करत रहग ।

स्वयं गाधीजीका जीवनकार्य क्रान्तिकारी होनेसे और उनका काम युगान्तरका होनेसे उनका आश्रम और उनकी प्रेरणामें स्थापित हुअे देशभरके अनेकानेक आश्रम कुछ स्थायी रूप पकड नहीं सके । यह उनका कोअी दोष नहीं था । अेक जवरदस्त बीज बोनेका काम गाधीजीने और उनके आश्रमने किया । अब अुसके जड पकडनेके और स्थायी मजबूत पौधा बननेके दिन आये हैं । गाधीजीकी और सत्याग्रहाश्रमकी प्रेरणामें जो नये आश्रम भविष्यमें बनेगे उनका रूप सत्याग्रहाश्रमके-जैसा नहीं बनेगा । कुछ अलग ह, बनेगा । क्योंकि गाधीजीकी प्रेरणा अेक तरहमें अग्निमभव ही है ।

अिसीलिअे गाधीजीके आश्रमी प्रयोगका हेतु और स्वरूप अच्छी तरह समझना जरूरी है ।

आश्रमी जीवन

जब गांधीजी दक्षिण आफ्रिकावा अपना काम सफलतापूर्वक पूरा करके हिंदुस्तानमें आये (१९१५) तब उनके बारेमें देशमें बड़ी आशा जाग्रत हा चुकी थी। गांधीजी भी देशके बारेमें बहुत बड़ी आशा लेकर आये थे। भारत-सेवक नामदार गीसले विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, दीनबन्धु चार्ली अँग्रेज्जुज अि० लागने उनका स्तुति की था। आय समाजी गुरुकुलके महात्मा भुगीराम दिल्लीके स्टीपन्स कॉलेजके प्रिन्सिपल हन्, मद्रासके सम्पादक प्रकाशक जी० अे० नटेगन् वम्बईके समाज-सुधारवाणी श्री नटराजन अि० लोगोके साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। रंगूनके बरिस्टर जोहरी डा० प्राणजीवन मेहता उनके जी-जान दोस्त थे। श्रीमद राजघट्ट जस जन अध्यात्म-साधकके साथ उनका गहरा पत्र-व्यवहार था। भाभी कोतवाल जैसे राष्ट्रसेवारत महाराष्ट्री दक्षिण आफ्रिकामे जाकर उनके साथ रह आये थे। राजकोटके बँ० गुजन जमखि साथ उनका यकिनगत परिचय था और वं स्वयं भारतक करीब सबके-सब राष्ट्रनताओको और राष्ट्रसेवकाको कभी-न-कभी मिल चुके थे। सबके बारेमें वे बमोबंश जानते भी थे। सबका अभिप्राय था कि कमवीर मोहनदास करमचंद गांधी अब अच्छे और सच्चे राष्ट्रसेवक हैं बड़ तत्त्वनिष्ठ हैं स्वाय-यागा हैं और गरीबाक प्रति उनका प्रेम केवल तार्त्विक नहीं किन्तु सवाभय है।

जब गांधीजी हिंदुस्तानमें रहने आये तब देशमें निराशा और अपकारका वायुमण्डल था। बहुत-सी प्रवृत्तियाँ निष्फल साबित हा चुकी थीं और परिस्थितिपर किसीका भी बावू नहीं था। सावजनिक जीवन

परिपुष्ट हो सके जिसके लिये जिन-जिन राष्ट्रीय सद्गुणोंकी आवश्यकता होती है, उनका करीब-करीब अभाव-सा था। सब लोगोके मनमें गांधी-जीके प्रति सद्भाव था। उनके दक्षिण आफ्रिकाके भगीरथ प्रयत्नोके बारेमें सामान्य लोगोंने थोड़ा कुछ सुना था, आदरसे सुना था। जिस-लिये उनके प्रति लोग आशाकी नज़रसे देख रहे थे। लेकिन राष्ट्रके नेताओंने नहीं माना था कि यह राष्ट्रपुरुष कोअी युगान्तरकारी कार्य करके दिखायेगा।

दक्षिण आफ्रिका छोड़कर, विलायत होकर गांधीजी हिन्दुस्तान आये उसके पहले उन्होंने अपने चुनिन्दा कार्यकर्ताओंको और कुटुम्बी-जनोको हिन्दुस्तान भेजा। उन लोगोको 'फीनिक्स पार्टी' कहते थे। क्योंकि हिन्दुस्तान आनेके पहले ये सब लोग दक्षिण आफ्रिकामें नाटाल राज्यकी राजधानी डर्बनके पास फीनिक्स गाँवमें अेक छोटा-सा समूहजीवन बना कर रहे थे। गांधीजीने उसका नाम रखा था 'फीनिक्स सेटलमेट'। गांधीजीके यहूदी अिन्जिनियर मित्र कॅलनवैकने भी टॉलस्टॉय फार्म नामक अेक समूह जीवन चलाया था, जिसके साथ भी गांधीजी ओतप्रोत थे।

अंग्रेज लेखक, चिन्तक और कलाविवेचक जॉन रस्किनकी किताब *Unto This Last* पढ़कर अपने जीवनमें परिवर्तन करनेकी गांधीजीको प्रेरणा हुयी थी। उसके अनुसार प्रथम अपने घरका रूपान्तर उन्होंने किया। बादमें फीनिक्स सेटलमेट और टॉलस्टॉय फार्मकी स्थापना की और रशियाके महात्मा टॉलस्टॉयके विचारोके अनुसार समाज-परिवर्तन और समाज-सेवाका आदर्श आजमानेका उन्होंने सकल्प किया।

लेकिन कोअी यह न समझे कि गांधीजीकी प्रेरणा अुन्हे परदेशसे ही मिली। विलायतमें विद्यार्थी थे तब और आफ्रिकामें बैरिस्टरी करते थे तब भी उनका अपने धर्मका अध्ययन पारमार्थिक भावसे चलता ही था। अुन्होंने भगवद्गीता पढी थी, तुलसी रामायण पढा था, योग-

साधनाके प्रारम्भ हुआ था । थामद राजचन्द्रके चित्तमें प्रथम अनुकंपा फैल गई थी । ब्रह्मचर्य और तप मस्काएँ अहं रचपनमें मिल गईं । और वह जानने लगा कि भारतीय आश्रम जीवनका परिपालन आश्रमामें होता जाया है । भारतमें आदर्शका प्रथम जनके पास था ही । उनके श्रद्धाधन हृदयमें जून आश्रमोंका श्रद्धालु भक्तिमें सबमें किया था । किन्तु यहाँके परंपरागत ऋषि-तपसमें अनन्यता जंचार नहीं हो गयी थी । युगवन्ध्यास ही स्वल्प-प्रयाग करनका वास्तविक ही चात आजमाय शिवा मन्त्राप न माननका जिज्ञासायति जनमें प्रथम था जोर जिस अग्रम मनुष्यका मन जोर हृदय कुट्टने-कुट्टने रूप पचडता है अम बुद्धम गांधीजीका हिन्दुस्तान के वास्तव रहकर हिन्दू जातनमें भिन्न जस समाजका परिवर्ष पातका और मूढम निरा तण करनका मोरा मित्र था ।

भारतमें आश्रमोंका हजारों वर्षोंका जीवनके कारण जो पडता आ गया था अल्ल-अल्ल आश्रमोंन जो अपना यात्रिक स्वल्प रनाया था जमर जन्म प्रथम नहीं सर और शिवाश्रम अनुकं मनमें सबमाधा रण अश्रद्धाभास जड नया परण मरा था । अनि परिचय और अनि अनुभवके कारण जो श्रद्धालुग हाता है और जनादर पण हाता है जुगर गिराए य नया जन थ ।

कार्यकर्ता मिले और अनुकी श्रद्धासे जो बल मिला उसके आधार पर अन्होंने भारतमें आते ही राष्ट्रसेवाके लिये अेक आश्रमकी स्थापना की । गिरे हुए समाजको अगर फिर अुठाना है, निराशाका जाडा अगर दूर करना है तो आध्यात्मिक अगीठी खडी करनी चाहिये असा सोचकर अन्होंने अेक आश्रमकी स्थापना करनेका तय किया ।

दक्षिण आफ्रिकामे प्रतिकूल परिस्थितिका सामना करनेके हेतु और यूरपकी अजेय शक्तिका मुकाबला करनेके लिये अन्होंने जिस आध्यात्मिक बलका आवाहन किया था उसको यथार्थ भारतीय नाम अन्होंने दिया 'सत्याग्रह' । भारतमें सब सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक रोगोका अिलाज अन्होंने सत्याग्रहमें पाया था अिसलिये आश्रमजीवन और सत्याग्रहको लेकर अन्होंने अपनी भारतीय प्रवृत्ति शुरू करनेकी ठानी । हिन्दुस्तानमें आते ही सब प्रान्तोमें घूमकर देश-स्थितिका अन्होंने निरीक्षण किया । अनेक आमन्त्रणोका विचार किया और स्वयं गुजराती होनेके कारण अन्होंने गुजरातमें अपने आश्रमकी स्थापना करनेका निश्चय किया ।

सत्याग्रह आश्रमके हेतु, उसके अुद्देश, जीवनके सिद्धान्त और कार्यपद्धतिका जरूरी चित्र, सब मिलाकर गाधीजीने अेक छोटा-सा पत्र तैयार किया और अनेक मित्रोके प्रति रचनात्मक टीका पानेके अुद्देशसे अुसे भेज दिया । अुस समय सस्थाका नाम भी अन्होंने निश्चित नहीं किया था । दो-चार नाम सूचित किये थे ।

अिस नियमावलिके अनुसार आश्रमका अुद्देश देशकी सेवा करते सीखना और देशसेवा करना यही था ।

आश्रमकी वुनियादमें अुसके ग्यारह व्रत थे जिनमेंसे पाँच तो भारतीय सब धार्मिक परम्पराकी योगसाधनाकी वुनियादमें थे ही ।

योग-साधनामें चित्त-शुद्धि और जीवन-शुद्धिके लिये पाँच यम और

पाँच नियम बताये गए हैं । पाँच यमों में चारका भगवान् पाश्वनाथन चातुर्थायम यम कहा है । सत्य, अहिंसा अस्तेय और अपरिग्रह ये हैं पाँच यमों के चार यम । आद्य अर्ध्यात्म-परायण समाज-सत्ताकी स्थापना करनी हो तो अक्सर बुनियादमें सत्य अहिंसा अस्तेय और अपरिग्रह ये चार जीवनसिद्धान्त ही चाहिये यह स्पष्ट करनेवाला एक निबंध बहुत बड़े-बड़े पहलुओं में घर्मानन्द कोसम्बीन लिखा है । भगवान् पाँच यम मानते थे कि अपरिग्रहम ब्रह्मचर्य आ ही जाता है ।^१

पाश्वनाथकी कल्पना कि अपरिग्रहम ब्रह्मचर्य आ जाता है जड़ नहीं पकड़ सकी पर्याप्त नहीं मालूम हुआ और मयममूलक ब्रह्मचर्यकी स्वतंत्र स्थान दिया गया । अतः तरह सत्य अहिंसा, ब्रह्मचर्य अस्तेय और अपरिग्रह ये पाँच यम मयमाय हो गये । पाँच यमों का यम पाँच नियम भी बताया है । अतः पाँच यमों का जसा नियम और सावधान नहीं है । अतः वाउ हम छाड़ दें ।

वार्धक्याने पाँच यमों का साथ और भाँटा प्रत्येक जाड़ दिया जिनमें त्रिगुण-युक्त मयम अर्थात्के रूपमें बताया है । शरीर-धर्मक बिना शारीरिक मानसिक और साक्षरक नतिक आरोग्य टिक नहीं सकता । त्रिगुण शरीरधर्मको अतः प्रथम स्थान दिया और अतः द्वारा समाज जीवनका जा सबसे बड़ा रोग है पाषणक अतः अनाय भी बताया । जा श्रेष्ठ शरीरधर्मम बचना चाहते हैं व और पर अपना अधिकार जमान है और अतः गुणम या पशु बनाकर अतःकी मदननका नाजा विद्वान् अनाय है । सब समाज मूल अतःम है । त्रिगुण शरीर

१ अतः अर्ध्यात्म-परायण समाज-सत्ताकी स्थापना करनी हो तो अक्सर बुनियादमें सत्य अहिंसा अस्तेय और अपरिग्रह ये चार जीवनसिद्धान्त ही चाहिये यह स्पष्ट करनेवाला एक निबंध बहुत बड़े-बड़े पहलुओं में घर्मानन्द कोसम्बीन लिखा है । भगवान् पाँच यम मानते थे कि अपरिग्रहम ब्रह्मचर्य आ ही जाता है ।

श्रमको गाधीजीने आश्रमसिद्धान्तकी बुनियादमे स्थान दिया ।

अध्यात्मजीवनका प्रारम्भ, दैव। सम्पत्तिकी बुनियाद और सर्व तेज-स्विताका अुगम निर्भयतामे है यह देखकर निर्भयता— भयवर्जनको आश्रम की बुनियादमे स्थान देना अपरिहार्य था ।

शोषणरहित समाजकी स्थापना करना हो तो जिस तरह अहिंसा और शरीरश्रमका विकास करना चाहिये अुसी तरह स्वदेशी वृत्तिका भी स्वीकार करना चाहिये असा सोचकर गहरे अर्थके साथ गाधीजीने स्वदेशीको भी आश्रमकी बुनियाद बनाया ।

और भी अेक महत्त्वकी देन गाधीजीने आश्रमजीवनको दे दी । दुनियामे भिन्न-भिन्न वशके लोग केवल चमडीके रग अलग हैं या शरीर का बाह्यरूप कुछ भिन्न है अिस कारण अेक-दूसरेके लिये पराये बन जाते हैं और बन्धुता भूलकर अेक-दूसरेके दुश्मन बनते हैं । अिस सकुचितताके दोषके कारण मानवजाति पीडित है ही, लेकिन सब वशके लोगोको अेकत्र लाकर अिनका अेक अखिल मानवीय परिवार बनानेके लिये जिनकी स्थापना हुयी अैसे सब धर्मोमे भी वही सकुचितता आ गयी, जो वश-भेदके कारण मानव-जातिमे थी । वशभेदके कारण मानव-मानवके बीच जितने झगडे हुये या हो रहे हैं अुनसे भी अधिक झगडे धर्मभेदके कारण होने लगे । जहाँ वशभेद थे वहाँ आतरवशीय विवाहोके द्वारा कुछ अिलाज हो सका । धर्मोके वारेमे सिद्धान्तोकी और रिवाजोकी जिद बढनेके कारण वह अिलाज कारगर नही हो सका । अिसलिये भारतके मनीषियोने सब धर्मोका कमोवेश स्वीकार करनेकी जो नीति चलायी अुसका लाभ गाधीजीने स्पष्ट देख लिया और सर्वधर्म-समभाव को आश्रमकी बुनियादमे स्थान दिया ।

वशभेदके कारण हो या धर्मभेदके, मनुष्य-मनुष्यके बीच खायी पैदा करना महापाप है । अैसे अेक महापापको हिन्दुस्तानके समाजधर्मने

आश्रम-परम्परा और आश्रम-संहिता*

गाधीजीकी धर्म-साधना, अुनकी समाज-सेवा, जीवनका आदर्श, अुनके समाज-परिवर्तनकी रूपरेखा और अुनके सत्यके प्रयोगोकी बुनियाद यह सब अुनके आश्रम-जीवनमे आ जाता है ।

किसी आदर्शको मामने रखकर अुसके अनुसार अपने जीवनका संगठन करनेकी अिन्तजारी वचपनसे ही गाधीजीमे थी ।

जब वे दक्षिण आफ्रिका जाकर रहे तब अलग-अलग धर्मके और वगके माथियोको, सवधियोको, और मेवकोको साथ रखकर मम्मिलित जीवन चलानेका प्रयोग अुन्होने किया । वैसा करते अपने मामूली कौटुम्बिक जीवनको अुन्होने करीब-करीब निचो डाला ।

अुसके बाद हेतुपूर्वक सामुदायिक जीवन जीनेके लिये फीनिक्समे और अपने मित्र केलनवैकके टॉलस्टाय फार्ममे अुन्होने समूह-जीवनका प्रयोग चलाया । अग्रेजीमे अुमे *Community life* कहते हैं । हम अुसे आश्रम-जीवन कह सकते हैं ।

सन् १९१५ मे भारतमे आनेके बाद जब अुन्होने देखा कि नामदार गोखलेके *Servants of India Society* (भारत-सेवक-समाज)मे अुनका दाखिल होना गोखलेजीके गिप्योके लिये अनुकूल नहीं है, तब अुस सस्या के साथ अपना आध्यात्मिक सम्बन्ध कायम रखकर अुन्होने अहंमदावाद

* ग्रिम लेखमें पट्टे दी गत्री कुछ जानकारी डुवारा आत्री है । लेकिन विषय-प्रतिपादनके लिये वह सत्र आवश्यक होनेके कारण पुनरुचितका टोप सहनकर के भी अुमे वैसा ही रहने दिया है ।

के नजदीक अपना एक स्वतंत्र आश्रम खोला जिसका नाम बुढ़ाने सत्या प्रथाश्रम रखा। गांधीजीके जीवनका सारा निचोड़ और उनके व्यक्तित्व की सारी शक्ति और मुगंधी अिस आश्रम जीवनमे पायी जाती है।

गांधीजीन क्रमण अपने कौटुम्बिक जीवनका टालस्टाय फामके समूहजीवनका, फीनिक्स सटलमटका, सत्याप्रथाश्रम और गांधी सेवा समका यथासमय विसर्जन किया और एक प्रयोगकी चिंता भस्ममे से दूररी और व्यापक सस्या पदा होती गयी। श्रीक पुराणोम फीनिक्स पक्षी की बात आती है जो अपना जीवनकाल पूरा होते ही अग्नि पदा करके क्षुभीम नूद पढता है और उसीके चिंता भस्ममे से नया फीनिक्स जम लता है। अिस पौराणिक काल्पनिक फीनिक्स पक्षीको मैंने अग्निसमभव कहा है। गांधीजीकी आश्रम-जीवनकी परम्परा फीनिक्स पद्धतिकी ही थी। अिसलिअे उसभी हम अग्निमभव कह सकते हैं। गांधीजी आखिरतक अग्निपरीणाम स ही पसार हुआ है।

आश्रमी जीवनका यह प्रयोग गांधीजीने करीब अठारह या अुन्नीस वरम तक चलाया। आश्रमके आदण तक हम नही पहुच सकत असे अतमुख स्याणम बुढ़ान आश्रमका नाम बदलकर अुस अुद्योगमदिर कहकर देला। लकिन यह नया नाम चल नही सका। पुराना नाम ही अपनी आतरिक शक्तिने बलपर कायम रहा।

गांध जीन गुरुम आश्रमकी नियमावली तयार करक प्रकाशित की। अमक साथ आश्रमक ग्यारह व्रताका विवरण भी था।

वाणम मरा प्रायनाको स्वाकार करके अुहनि जल-जीवनक दरमियान आश्रमका अतिहास लिखा जो अपूण है। और गांधीजीको अुसस सतोप नही था। व अग मुधारनवाल थ। पूरा भी करन बात थ। लकिन थगा नही हा सका।

अिमक बाण परवण जणम अुहान आश्रमके व्रताका विस्तारपूवक

विवरण करनेवाले पत्र लिखे, जो 'व्रतविचार' या 'मंगल-प्रभात' के नामसे प्रकाशित हुअे है ।

'व्रत-विचार' नामक पत्रमाला पूरी करनेके बाद गांधीजीने आश्रम-वासियोंके नाम दूसरे बातीस पत्र लिखे, जिनका संग्रह 'आश्रमवासी प्रत्ये' के नामसे शायी हुआ है ।

राजनीतिक और आतरिक परिस्थितिके कारण गांधीजीने सत्याग्रह-आश्रमका विसर्जन किया और वे वर्धा, सेवाग्राम जाकर रहे । अुन दिनों श्री जमनालालजीने गांधी सेवा सघ नामकी भारतव्यापी अेक सस्था चलायी, जिसको प्रेरणा और सलाह देनेका काम गांधीजीने पूरी निष्ठासे किया । हालाकि गांधी सेवा सघके अध्यक्ष तो श्री किशोरलाल मशरूवाला ही रहे । सत्याग्रह-आश्रममे देशसेवाके जो अलग-अलग कार्यक्रम चलाये गअे, अुनके पीछे गांधीजीके विचार क्या थे, कैसे थे, अिसका विवेचन श्री मशरूवालाजीने 'गांधी-विचारदोहन' नामसे प्रकाशित किया है ।

गांधीजीने अिस गांधी सेवा सघका विसर्जन सन् १९४० मे मालिकादा (पूर्व बगाल) मे किया । तब अुनका आश्रमी जीवन सेवाग्रामके निवास दरमियान विकसित हुआ । सेवाग्राममे आश्रम स्थापित करनेकी गांधीजीकी मुराद नही थी । मगनवाडी (वर्धा) से जब वे सेवाग्राम जाकर रहे तब वहाँ अकेलेही रहना चाहते थे । लेकिन माता कस्तूरबा को वहाँ आकर रहते वे रोक नही सके । श्रीमती मीराबहन भी अुनके नजदीक रहने के लिये वहाँ पहुँच गयी । फिर धीरे-धीरे दूसरे भी लोग आ पहुँचे और आहिस्ता-आहिस्ता सेवाग्राम भी पूरा-पूरा आश्रम बन गया ।

जब सेवाग्राम छोड़नेकी नौवत आयी, तब गांधीजीने अुसके लिये—सेवाग्राममे कायमी ढगसे रहनेकी प्रतिज्ञा लेनेवाले लोगोंके लिये अेक नियमावलि बनाना चाहा, जिसका रूप लिखा हुआ है; लेकिन कच्चा है ।

कभी सेवक और भक्त आश्रमके पवित्र वायुमडलमे विवाह जैसे शुभ

आश्रम जीवनके हेतु

आश्रमक द्वारा गांधीजीन नवजीवनके जो अनेक प्रयोग किए जाते थे, उनका थोड़ा-सा जिक्र उनके लिखे हुए आश्रमके इतिहासमें आ जाता है। उससे भी अधिक चर्चा और ब्योरा आश्रमवासियोंके नाम लिखे हुए गांधीजीके पत्रमें पाया जाता है। आश्रमके व्यवस्थापक प्रारम्भमें श्री मदनलालभाभी गांधी रहे। उसके बाद श्री छगनलाल जागीरदार। उसके बाद श्री नारायणदास गांधी। बीचमें श्री छगनलाल गांधी परसदा भाभी श्री रमणिकलाल मादी श्री चीमनलाल शाह आदि अनेक लोगोंको वह स्थान दिया गया होगा।

आश्रमकी बहनोका दससेवाके लिए और नवजीवनके लिए तैयार करनेके गांधीजीके प्रयत्नका जिक्र आश्रमकी बहनोका लिखे हुए पत्रमें आता है। जिनका सम्पादन मैंने करवा कर दिया है और जिनका अनुवाद हिन्दी और अंग्रेजीमें भी हो चुका है। उसमें भी अधिक जिक्र आता है कुमारी प्रेमादेन कटकके नाम लिखे हुए पत्रमें जिनका सम्पादन मैं अभी-अभी कर चुका हूँ और जो किताब गुजरातीमें तुरन्त ही प्रकट होने वाली है।^१

जयाय बहनोको लिखे हुए गांधीजीके पत्रोंका सम्पादन हो रहा है जिनमें आश्रमका विशेष जिक्र आता है श्री गंगाबहनके पत्रोंमें, क्योंकि वह काफी समय तक आश्रमके स्त्री-समाजका नेतृत्व करती थीं।

आश्रमजीवनका अधिकतम अधिक जिक्र और रोजमर्राका ब्योरा

१ यह किताब नवजीवनका थोड़ेसे अंश देहलीमें भी प्रकाशित हो चुकी है।

श्री मगनलालभाभी और श्री नारायणदासभाभीके नाम लिखे हुअे पत्रोमे मिलेगा ।

गाधीजीने अपने अित्तिहासमे आश्रमजीवनका विचार आश्रमके लिअे अुन्होने जो अनेक व्रत वताये अुनके अनुसार किया है । लेकिन हम दूसरे ढग से भी सोच सकते है ।

गाधीजीका सबसे पहला प्रयोग श्रममय जीवनका था । आश्रममे नौकरोको न रखते हुअे सबका सब काम आश्रमवासियोके द्वारा ही किया जाता था । हम लोग टट्टी साफ करना, कुअेसे पानी खीचकर लाना, आटा पीसना, वर्तन माँजना, कपडे सीना, रसोअी बनाना, अनाज आदि साफ करना अित्यादि काम तो करते ही थे, लेकिन कभी-कभी मेहमानोका असवाव अुठाकर ले जानेका काम भी हम लोगोने किया है । अेक मेहमानकी टू क अपनी पीठपर अुठाकर अेलीस ब्रीज तक मै ले गया था, अिसका स्मरण मुझे आज भी है । अिसलिअे कि टू कके बोझके कारण मेरी पीठकी थोडी-सी चमडी अुखड गअी थी । मै यह कहनेको तैयार नही हूँ कि मै नाजुकवदन था या बोझ अुठानेकी कलामे अनजान था ।

गाधीजीको आश्रमके द्वारा खेती करनेका अुत्साह नही था, लेकिन जैसा कि अिसमे पहले मै लिख चुका हूँ खेती और गौशाला चलानेका असाधारण अुत्साह श्री मगनलालभाभी गाधीमे था और अुन्हे असमे प्रोत्साहन देनेका गाधीजीने अपना कर्तव्य माना । गाधीजीका सारा ध्यान कपडे वुननेकी कलामे स्वदेशीका तत्त्व पूर्णतया लानेकी ओर था । कपास का बीज बोना, कपास अिकट्टा करना, बीजसे रेषा अलग करना, कपास धुनकना, सूत कातना, सूतकी पाँजनी करके कपडेका ताना तैयार करना, कपडा वुनना आदि सब क्रियाअे आश्रममे होती थी । अितना ही नही लेकिन वुनाअी आदिके सब अीजार भी आश्रममे बनते थे और अुनके मुफारके प्रयोग भी चलते थे ।

श्रममय जीवन और औद्योगिक कौशल्य दोनो प्रवृत्तियोकी वुनियाद

म गापणरहित समाज स्थापन करनका हतु मुख्य था ।

जानिभेदके कारण वर्णभेद या वर्गभेदके कारण दुनियाम जा अच्च-नाच भाव सवत्र फग हुआ है जसका निमून्न करनका अद्भ्य भी श्रममय जावन जीर आश्रमजावनका बनियादम था । केवल तत्त्वप्रचार से लोग नये विचार समप ता सकते हैं और धमबद्धि जाप्रत रही तो नव तत्त्वारा। मनुष्य बौद्धिक स्वीकार भी करता है लेकिन जब तक नित्य जीवनका जास्ताम कायमी परिवर्तन नही हुआ तब तक मनुष्य नय नय विचाराका अपन आचरणम नही ला सकता । गाधीजाना शरीर और अूनकी आदत मध्यमवर्गकी और वश्य समाजकी था । केवल प्रचण सवल्पगमितके कारण श्रुल युद्धम जीर बाअर युद्धम शरीरश्रम करनम ब अद्भुत विक्रम बता सके । सताका काम भा अहान दाघका तक किया होगा । दस-दस बीस-बीस मील घाना आटा पीसनेके लिअ घटो तक घटी चलाना अित्यादि काम ता वे करते ही थे । जूत बनाना कपड साना, श्री धुनना मूत कातना रसोअी बनाना अित्यादि बौगल्ययुक्त श्रमकी ओर ही अूनका ध्यान ज्यादा था । नाजूक बानके मध्यमवर्गक लागाकी श्रमजीवनका आर न जानेका काम कितना कठिन है अिसका रया गाधीजीकी था और यह सब किय बिना गापणकी बनिया पर रच हुअे समाजम परिवर्तन हा नही सचता यह भी वे जानत थ ।

मनुष्यमात्रके साथ और प्राणीजगतके साथ अपन अवयका अनुभव करनके लिअ भा श्रमजावन जरूरी है और ब्रह्मचय अत्यावश्यक है यह अनका विश्वास था । ब्रह्मचयका पालन आहारम मादगा जीर सास्त्विकता लाये बिना नाभुमकिन है यह जमा अूनका विश्वास था यमा ही श्रमजीवनके बिना ब्रह्मचारीका निश्चिकारी जावन मिद्ध हा नहा सकता थ भा अनका हृद विश्वास था ।

हरअक ब्यक्तिके जावनम चार वर्ण प्रग हान चाहिअ श्रअक ब्यक्ति जानरी अपामना कर आश्रमरक्षा। यागयना इामि कर, औचा

गिक कौशल्यमे प्रवीण हो, हिसाब-किताब बराबर रख सके, कुटुम्ब और समाजके मचालनकी सब खवियाँ जाने और सेवाके लिये स्वात्मार्षण करनेका आदर्श अुसके सामने रहे यह सब आश्रमजीवनके प्रधान अग थे ।

स्त्री-पुरुष समानताका अनुभव करनेके लिये भी ब्रह्मचर्य और श्रम-मय जीवन दोनोंकी आवश्यकता आश्रमकी वुनियामे थी ।

आश्रमजीवन और खास करके आश्रमकी प्रार्थना द्वारा सर्व-धर्म-समभावका विराट् प्रयोग गाधीजीने चलाया । दुनियाके अितिहास का अेक बहुत बडा हिस्सा धर्मों धर्मोंके^(१) बीच चले हुअे युद्धोंसे और रोजमरके तनाजोसे भरा हुआ है । लोभ, अीर्ष्या, अभिमान और द्वेषके कारण दुनियामे जितने युद्ध हुअे है अुतने ही धर्म और पथके भेद के कारण हुअे है । अिन सबका अिलाज सर्व-धर्म-समभाव ही है । आश्रमजीवनके द्वारा सब धर्मोंके प्रति जिसमे आत्मीय भाव पैदा हुआ है वह धार्मिक झगडोमे पडेगा ही नही, अितना ही नही किन्तु धार्मिक झगडे टालने या मिटानेमे किसीको सफलता मिलती हो तो अुसीको मिलेगी जिसके हृदयमे सर्वधर्म-समभाव और सर्वधर्म-ममभाव भरा हुआ है ।

गाधीजीका अेक प्रयोग था कौटुम्बिक जीवनसे, पारिवारिक जीवन से अूँचा अुठकर अेक विनाल सेवामय आध्यात्मिक कुटुम्ब स्थापित करनेका । अिसमे अुन्हे पूरी सफलता नही मिली । अिस दिशामे गाधीजी ने जो प्रयोग किये अुमका सारा पूरा अितिहास जगतके सामने नही आया है । आश्रमवासी भी सबके सब अुमे नही जानते ।

पक्षियोंके जीवनमे नर, मादा और छोटे कमजोर बच्चे अितनोका ही अेक परिवार होता है । पशुओमे अिससे शायद कुछ व्यापक पारिवारिक सम्बन्ध रहता होगा, लेकिन हजारो बरस हुअे मनुष्य-जातिने पति-पत्नीके अिर्दगिर्द ही कुटुम्ब-भावनाको स्थिर किया है । पति-पत्नी का सहजीवन और भाअी-बहन या पुत्रकन्या आदि की सेवा यही है

मानवी कुटुम्बकी भयान्ता, जिसके बादका जीवन या तो बुनवेका है या जाति-संगठनका। कुटुम्ब-जीवनको ही विशाल व्यापक बनानेके प्रयोग मनुष्यजातिने कम किये हैं। असा ही अक प्रयोग करनेका गाधीजीका मानस था। आश्रमके सब पुरुष अंक विभागमें रहें और सब स्त्रियाँ दूसरे म—अलग-अलग कोठी कुटुम्ब परिवार न हों असे विचारको अमलमें लानेकी कोशिश गाधीजीने बहुत की। अकसाय खाना अकसाय प्रायना करना और अकसाय आश्रम-जीवन चलानेमें शारीक होना यह तो बुहोने आश्रममें दाखिल किया ही। ब्रह्मचर्यके द्वारा भी पति-पत्नीका सम्बन्ध बुहाने आसान कर लिया। तो भी गाधीजी अनेक परिवाराका विसर्जन आश्रममें नहीं करा सके। हरअक व्यक्तिको अपनी पत्नी और अपन बच्चाके साथके सहजीवनस जो सन्तोष रहता था उसे छाड़नेकी किसी की तयारी नहीं थी। यह केवल मोह नहीं था ब्रह्मचर्यका शुद्धभावसे पालन करते हुए भी पति-पत्नीको अक-दूसरेके सहवासकी भूख रहती थी और अक-दूसरेके जीवनमें विगप रूपमें ओतप्रोत हुआ बिना सन्तोष नहीं मिलता था।

जिस तरह गांधीजी गातिसनाका आश्रम आश्रमके जरिये सिद्ध न कर सके (हालांकि हम लोग कभी-कभी चारोंके खिलाफ रक्षाके लिअ आश्रमके अश्रि गिद मारी रात बारी-बारीमें चौकी करत थे और समाजमें कहीं भी गूफान हुआ या सगढा फियाण पना हुआ तो लोगोको गात करने के लिअ हम दौड़ भा जात थे।) असा तरह भिन्न भिन्न कुटुम्बाका विमर्जन कराकर अक विगाण आश्रमका पारिवारिक जीवन क मिद न कर सक। तबिन अमम आश्रम भी क्या? आश्रममें दाखिल हुए व्यक्ति सब अक सबके नरा थे। धमभण तो हमार लिअ कठिनाओ नहा पदा कर सक्ता था। आहार और रहन-सहन तो सबका अक-सा था ही। आपिन कठिनाआर लिअ गजाअिग हा नहा थी। यू तो हम अक-दूसरे के परिवारके साथ अच्छा तरह घुमिण जात थे। हमार बच्च भा

आपसमे हर तरहसे घुलमिल जाते थे । जिस भारतमे विशाल अविभक्त कुटुम्ब सैकड़ो और हजारो बरसोसे चले हुये थे, अुस भारतमे अेक ही सामाजिक और धार्मिक आदर्शवाले हम अेक ही परिवारके जैसे हो चुके थे । लेकिन हम सब अपने परम्परागत कौटुम्बिक जीवनका विसर्जन करनेके लिये तैयार नही थे । अेक-दो अपवादोके द्वारा यह आदर्श सिद्ध नही हो सकता था और गाधीजी किसीके भी अूपर अपना आदर्श लाद नही सकते । अिस अेक विषयके बारेमे जो प्रयत्न हुअे और पत्र-व्यवहार चला, अुसका बयान जब जगतको मिलेगा तब गाधीजीके प्रयोगोका कुछ ख्याल मनुष्यजातिको मिलेगा । जब महम्मद पैगम्बर साहबके साथ अुनके अनुयायी मक्कासे हिजरत करके मदीना गये तब मक्काके हिजरती और मदीनाके असारी लोगोका अेक समाज बनानेकी नवी साहबने जो कोशिश की थी, वह सचमुच अेक अद्भुत प्रयोग था ।

अगर गाधीजी आश्रममे अनेकधर्मी, अनेक प्रातके, अनेक जातिके, अनेक भाषा बोलनेवाले लोगोका अेक विशाल दृढ परिवार बना सकते तो वह अेक अैसा ही अद्भुत प्रयोग होता । लेकिन गाधीजीको यह सब अहिंसक ढंगसे करना था । अगर वे सफल होते तो शायद भारतके अनेक सवालको हम हल कर सकते । लेकिन मुझे डर है कि गाधीजीकी कल्पनाका व्यापक परिवार दीर्घकाल तक टिक नही सकता और टिकता तो हम अेक अलग सम्प्रदाय बन जाते और गाधीजीके आश्रमका आदर्श तेलकी बूंदके जैसा न फैलते घी की बूंदके जैसा सिकुड जाता और समाजके अूपर वह घीकी गोलीके जसा तरता रहता ।

आश्रमी जीवनका स्वागत

आश्रम जीवनका शुरू शुरूम बालबाला बहुत था। अिस आश्रमम रहनेके अिअ अनेक प्रातके लोग आने लग। जितन लोग स्थायी रूपमे आश्रमम रहे अुनस अधिक सरयाम लाग कुछ समयके लिय आश्रमम रह कर यहाके जीवनमे लाभ अुठाकर अपने अपन जीवनम परिवतन करने लग। सार भारतभरम असे अनेक आश्रमोका स्थापना हुअी। कही कही गैगोने अपनी सस्थाको आश्रमका नाम न देते हुअ विद्यालयका नाम और रूप लिया। तकिन आश्रम जेव बहुत बडी जतरदस्त सामाजिक शक्ति भावित हुअी और गाधीजीने जा अनर बार मारे देगम दौरे चलाय यात्राअें की अुनम मुबह गामनी प्रायनाकें द्वारा भी गाधीजीने आश्रमके आश्रमका लगातार जोराम प्रचार किया।

गाधाजाक जिन सवमाय प्रयोगाक अदर कअी दोष ता थ ही। अद दोष जीवनकी पद्धतिके ही थे। चन्द ताप गाधीजीके स्वभावके कारण जाय। अिसम भी अधिक दोष भारतीय समाजके जनमानसमम पदा हुअे और चत दोष आश्रमम जाकर वम हुअ गैगोममे कअियाकी पामरताम पदा हुअ। जिन सय दापाका चचा पशपानरहित कुछ निदयताम करनी ही हायी।

तकिन अस सय दापाके बावजूत आश्रम द्वारा जो कुछ अच्छा काय हाता था अुसकी हमी करव आश्रमजावन और आश्रम आश्रम को कमआर बनानवाने तीन यकिन गाधाजाक ही साधियामम निकल। अथ सरदार बलभभाआ पतेल दूसर थ आचाय कृपलानी और तीगर कुछ हद तक थ पडित जवाहरलाल नहरू। जिनमम आचाय

कृपलानी तो स्वयं आश्रम चलानेवाले और गांधीजीके सब सिद्धान्तोको माननेवाले होते हुअे भी अुनकी यथार्थवादी या वास्तववादी दृष्टि और अुनकी जवरदस्त सिनिसिज़्म (Cynicism) आश्रमके प्रयोगको बहुत कुछ बाधक हुआी । सरदार वल्लभभाभी वडे व्यवहार-चतुर । स्वयं गांधीजी की कभी वाते अुनको पसन्द नहीं आती थी । लेकिन निभा लेते थे । आश्रमवामी लोग ज्यादातर बुद्धू, व्यवहारशून्य, श्रद्धाजड और अपनी तुच्छताको नहीं पहचाननेवाले हैं अैसा ही कुछ अुनका खयाल था । लेकिन अुनसे काम लेनेको अुनकी हमेशा तैयारी रहती थी । गांधीजी के साथ मिद्वान्त-चर्चामे वे कभी अुतरते नहीं । महादेवभाभीके साथ अुनकी अच्छी घनिष्ठता थी । नरहरिभाभीकी और स्वामी आनन्दकी असाधारण निष्ठा वे हासिल कर सके थे । अिमामसाहबसे अुन्होंने जो काम लिया अुससे गांधीजी वडे ही प्रसन्न हुअे । लेकिन सामान्य तौर पर आश्रमवासियोंके प्रति अुनके मनमे आदर कम था । अुनसे कुछ डरते भी थे । जब गांधीजीने आश्रमका विसर्जन किया और आश्रमवासी लोग गुजरातमे जगह-जगह फैलकर समाजसेवाका काम करने लगे और गांधीजी भी वल्लभभाभीकी अच्छी ताडकर गुजरात छोडकर वर्धा जानेको तैयार हुअे तब वल्लभभाभीके मुँहसे अेक वचन निकल गया—
 “आश्रमके अिन छोटे-छोटे सर्पोको गांधीजी हटा देवे तो अच्छा ।”
 (‘सापोलिया’ शब्दका वल्लभभाभीने अिस्तेमाल किया था । गुजराती मे छोटे-छोटे साँपोको या साँपके वच्चोको ‘सापोलिया’ कहते हैं ।)
 जब वल्लभभाभीका यह वचन गांधीजीके कानो तक पहुँच गया तब अुन्हें बहुत दुःख हुआ और जब वल्लभभाभीने सुना कि गांधीजी दुःखी हुअे हैं तब वडे पछताये और अपनी जीभ पर कावू नहीं होनेपर अफ-सोस भी करने लगे ।

जवाहरलालजीकी सज्जनता और मिजाज खोने पर भी सँभाला जानेवाला अुनका वाचा-सयम अुनको हमेशा मददगार रहा । जवाहर-

गाल्जीने आश्रम-जीवकी या आश्रमवातिघातो टीका टिप्पणी नहीं की। तबिन आश्रम-जीवन और आश्रम-नायके बारेम अनूके मनम तनिक भी आदर नहीं था। राष्ट्रपुरण और अतिहासतार होकरे कारण बहर भीतरा समाज पर क्या अगर होना है अमीको दगात रहा है। पण देगवर वृष की कीमत करने है। अनको आश्रमजीवनम घाह्य वस्तु बहूत कुछ कम दीख पढी तो भी गाधीजीके कायकी सुनियाम आध्यात्मिक रिष्ठा और शक्ति है अतिमा ता व जल्द पढ़घान मने और विनोदाय कायकी भी व काफी बहर करत है। ता भी आश्रम जसा संस्थाक विधि विधान नियमा चलि कायक्रम और परम्पराके बारेम अनूके मनम कुछ भी आदर नहीं है।

सरदार बल्लभभाओ आचार्य कृपलानी और गवाहरलालजी अिन तीनोंक अभिप्रायको आश्रमजीवनकी पर्याप्त बसौटी में मानता हूँ। अपने समयके अिन तीन पुरुषाको आश्रमजीवन प्रभावित न कर सका अिस बातको हम भूलना नहीं चाहिये।



आश्रमजीवनके बारेम विस्तारसे लिखनेवाला हूँ। अिसलिय में अपने सम्बन्धको पहलेसे स्पष्ट कर दूँ यह जरूरी है।

मैं आश्रमवासी था ना और नहीं भी था। आश्रमके आदसोंको मैंने गुरुसे माय रखा था। लेकिन आश्रमका जीवनक्रम और अुसकी परम्परा और खास करके अुसकी व्यवस्था और अुसके पीछे रही हूभी गाधीजीकी दृष्टि मुझ गुरुसे पूरपूर माय नहीं थी। मैं गाधीजीसे अिस बारेम हमेशा लडता रहा। तबिन अुनके प्रति अमीम आदर और निष्ठा होनेके कारण बड ही सौम्य गदामे लबिन दडताके माय मैं अपन मतभेद और रचिभेद अुनके सामने रखता रहा। अिसलिये अिन मतभेदोने कभी भी मगडेका रूप नहीं लिया। मेरा झगडा रहता था और बहुत कुछ मगहर हुआ सो आश्रमके व्यवस्थापक श्री मगनलाल भाओ गाधीके साथ।

बाहरकी दुनिया मुझे आश्रमवासी ही गिनती थी। आश्रमवासियों के प्रति समाजमे जो आदर रहता था उसका काफी हिस्सा मुझे मिल गया है। इसलिये आश्रमजीवनके प्रति मैं हमेशा कृतज्ञ हूँ।

आश्रमकी कभी बातें मुझे पसन्द नहीं थी तो भी आश्रममें रहना था, इसलिये मैंने उनको स्वीकार किया और धीरे-धीरे उन चीजोंका मेरे स्वभाव पर असर भी होने लगा। मानो आश्रममे रहनेसे आश्रमके वायुमण्डलके कारण मेरा 'अचार' ही बन गया। जिन चीजोंको मैंने श्रद्धासे स्वीकार नहीं किया, लेकिन असी जो चीजें मेरे जीवनमे घुल-मिल गयीं उनके गुणोंसे तो मैं वंचित रहा और उनके दोष मुझे भुगतने पड़े।

सबसे पहले व्रतोंकी ही बात ले।

आश्रमके ग्यारह व्रत मुझे हृदयसे मान्य थे। उनके अनुसार अपना जीवन बनानेका मैंने प्रयत्न किया है। यह प्रयत्न कभी जोरोंका था, कभी शिथिल था। कभी-कभी प्रयत्न ही गायब हुआ। फिरसे उसका पुनर्जीवन हुआ। इस तरहसे मेरे व्रतपालनमे ज्वारभाट चलता ही आया है।

लेकिन शुरूमे ही कह दूँ कि आदर्शके तौरपर अिन व्रतोंको मैंने हृदयसे पसन्द किया था। लेकिन जिसे 'प्रतिज्ञा लेना' कहते हैं, उससे मैं हमेशा डरता ही रहा। सत्यके जैसे व्रतका पालन मनुष्यसे पूरा हो या न हो उसका व्रत लेते मनुष्यको सकोच नहीं होना चाहिये। क्योंकि हृदय ही कहता है कि सत्यके प्रति त्रिकालावाधित निष्ठा होनी चाहिये। लेकिन अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि आदर्श मान्य होते हुअे भी मनुष्यकी अिन बातोंमे पूरी तैयारी नहीं होती। अिन बातोंमे कणश, क्षणश मनुष्य अूपर चढ सकता है। सत्य बोलना आसान है, झूठ बोलनेके लिये प्रयत्न करना पडता है। निर्भयताके वारेमे असा हम

नहीं बह सकता। खतरा दमते डर जाना यह है स्वभाव। भा भी मनुष्य धीरे धीरे निर्भय बन सकता है। अस्वात्त घनक बारेम कह सकता है कि स्वात्तका कर्मावग गूढनाम पहचान सकता है और स्वादिष्ट चीजाको पमान भी करता है। लेकिन स्वात्तका मैं कभी दाग नहीं था। स्वात्त पर विजय पानेक त्रिज मुक्त रही महत्तन नहीं पड़ी। ता भी मैं जानता हू कि मनुष्यक लिय सबग कर्मा चीज घटी है। त्रिमोतित्रे ता गयमघन अपियनि भा कहा है—जिन सब जिते रमे।

हमार पुरगाआन जितालिअ कह रगा है कि मयासा रमका स्वात्तार जासानीस मत करा। मयास लिया और फिर पछताना पडा और समाजक सामन कजाहत भी हुआ त्रिसम बेहतर है कि मयास माधमका स्वात्तार करा ही नहीं। मनका बलि सुधारत जाभा और जब देखा कि जब वह बलि परिपका हुआ है तभा जाकर गऊ वस्त्र का स्वीकार करो। मयासा गुप्तजासा भी गात्तान माफ कहा है कि किसीको भा मयास उनकी व्यक्तिगत प्ररणा मत दा। मयासकी दीशा उनके त्रिजे काआ तुम्हार पास आ हा गया ता प्रथम अग अम मक्त्पम परावत्त कराकी कोणिग करा मना करा और जब दसाग कि कराग्य सचमुच हा पक गया है हत्त हुआ है तब वाट्टरा मद्दक तीर पर और सिक्का पुहरक तीर पर अस गम्मा द दा।

मैंन कहा और लिखा हा है कि भोजनक समय मौन रखतना नियम मैंन करमो तत्र चन्गया बहुत ही हत्ताम चलाया। लेकिन अस नियमके लिअ कुछ मुक्त नहीं रखा। जब जा चाहा तब सोच विचार करके अस नियमका मैंन छोड भी लिया। मौनका नियम लिया वह भी अच्छा था, छोणा वह भा अच्छा था।

प्रार्थना

एक दिन एक चर्चा-रुचि आदम। गाधीजीके पास आकर कहने लगे कि, “मुझे आश्रमका मेवाकार्य पसन्द है। जीवनक्रम भी निभा सकूंगा। लेकिन प्रार्थनामे मेरा विश्वास नहीं है। मुझे आप आश्रममे ले सकेंगे ?” गाधीजीने कहा कि, “जिस ढंगकी प्रार्थना हम आश्रममे करते हैं वह ढंग और वे श्लोक आपको पसन्द न हो तो प्रार्थना-भूमिपर आकर सबके साथ खामोश बैठिये और मनमे जो-कुछ भी प्रार्थना आपको भाती हो, सुसीको करे। लेकिन किसी भी किस्मकी प्रार्थना आपको पसन्द नहीं आती हो, यानी प्रार्थना पर ही आपको आपत्ति हो तो आप आश्रममे दाखिल नहीं हो सकते। मेहमानके तौरपर कुछ दिन रहिये सही, लेकिन मैंने आश्रमजीवनकी अनेक व्याख्याएं की हैं उनमे यह भी एक व्याख्या है कि ‘प्रार्थनापर जिनका विश्वास है अंसे लोगोका समूह’।”

गाधीजीने यह जवाब अंसी दृढतासे दिया कि आगन्तुक सज्जन वरावर समझ गये। जिसे देशसेवा करनी है उसे कौन मना करता है ? अपने ढंगसे करता जाय। आश्रममे रहकर आश्रमके द्वारा सेवा करनी है तो कम-से-कम प्रार्थनापर तो विश्वास होना ही चाहिये।

1 अिसलिये आश्रम-जीवनका वर्णन करते प्रार्थनासे प्रारम्भ करना चाहिये। फीनिक्स सेटलमेटमें सामूहिक प्रार्थना सिर्फ शामको ही होती थी। अुसके लिये गाधीजीने गीताके दूसरे अध्यायके आखिरी अुन्नीस श्लोक पसन्द किये, जिनके अन्दर भगवानने स्थितप्रज्ञके लक्षण बताये हैं और अुस साधनाको चलानेवालेको अन्तमे क्या लाभ होता है यह भी बताया है। अिन श्लोकोके वाद जो भजन गाये जाते थे अुनका संग्रह

फानिक्स सटलमटके आश्रमा प्रसवे द्वारा नीतिना काव्या के नामसे प्रकाशित भा किया था। ज्यादातर गुजराती और थोड़े हिंदुस्तानी भजन अुसम थे।

दक्षिण आफ्रिकाके अुस समूह-जीवनम अनेक धर्मोंके लोग थे और गांधीजीका आग्रह था कि जिस तरह सामान्य नियम पालते हुअे हरअेक आदमीको अुसकी तबीयतके अनुकूल आहार देना चाहिय, अुसी तरह समूह-जीवनमे जो शरीक हुअे हैं अुनको प्राथनाके बारेम भी सन्तोष देना चाहिय। जो गारे आसाआ लोग अुनके साथ रहते थे अुनके लिअे गांधीजीने चन्द अग्रजी स्तोत्र (hymns) पसन्द किये। और व भी 'नीतिना काव्या म जोड दिय गअ। मने व्हालु व्हालु व्हालु बाबा रामजीनु नाम अिस प्रख्यात गुजरात। भजनम रामजाकी जगह होरमस जी का नाम डालकर वह भजन पारसी लोगोंके साथ गात गांधीजीको और आश्रमवासियोंको बडा ही आनंद आता था।

जब गांधीजी हिंदुस्तानम आय और हम महाराष्ट्राम अुनके साथ रहन आय तब गांधीजीने समय रामदासका मनोबोध प्राथनाके बाद पढना शुरू किया और मराठी भजन भी बीच-बीचम गानका रिवाज चलाया।

जब फानिक्स पार्टीके लोग हिंदुस्तानम आये और गान्तिनिकेतनम रहा व तब मैं वहाँ अुनके साथ काफी घुल मिल गया। सुबहका भोजन गान्तिनिकेतनम और गामका भाजन फीनिक्स पार्टीके साथ जमा क्रम में चलाया। अुनकी गामकी प्राथनाम भी मैं शरीक हुआ। मैंने कहा कि गोत्राज अुनके शुरू करनेके पहल य ब्रह्मा वाला अुनके बोलनेका सार देनाम रिवाज है। मंगललालभाजीने मरा मुझाक मजूर रखा और मैंने वह प्रारम्भका नमनका अुनके और स्थिरान वान श्लोक सबका गुड अच्चारण सिस्ताना शुरू किया। अुच्चारणगुडिके लिअे पूरी निष्ठास प्रयत्न करनेवान मंगललालभाजी हा थे।

थोड़े ही दिनोंमें मैंने प्रस्ताव रखा कि शामकी सामुदायिक प्रार्थना बस नहीं है। दिनका प्रारम्भ भा सामुदायिक प्रार्थनासे होना चाहिये। (असके पहले कभी लोग सुबह उठते ही मुँह धोकर अपनी-अपनी छोटी प्रार्थना करते थे। लेकिन असका समय मुकर्रर नहीं था। और साथ बैठकर प्रार्थना होती हा नहीं।)

(जिस शान्तिनिकेतनमें हम रहते थे वहाँ अक सुन्दर काव्यमय रिवाज था। चन्द लडके अक जगह पर तडके अकट्टा होकर वैतालिक दल बनाते थे और कोअी अक सुन्दर-सा गान पसन्द करके असे गाते-गाते शान्तिनिकेतनकी भूमिपर जो अनेकानेक छात्रालय थे अुनके पास जा-जाकर अपने गानके द्वारा लडकोको जगाते थे। असके वाद नहा-धोकर हरअक लडका अपना आसन साथ लेकर आश्रमकी भूमिपर कही भी जाकर बैठता था और मौनके साथ ध्यान-भजन जो-कुछ भी करना हो, करता था। फिर अक घण्टी वजते ही सब लडके अकत्र होकर 'पिता नोऽसि, पिता नो वोधि' वाला मन्त्र सस्कृतमें और वांगलामे बोलकर विसर्जित होते थे।

शान्तिनिकेतनमें हर बुधवारको प्रार्थना-मन्दिरमें अुपासना होती थी जिसमें कविवर स्वयं या कोअी अच्छा अव्यापक प्रवचन चलाते थे। अस प्रार्थना-मन्दिरके प्रवचनमें रातके समयमें दिया जलाते नहीं। अँवरेमें ही सब लोग बैठकर प्रार्थना करते और प्रवचन सुनते थे। जब गाधीजीने शान्तिनिकेतनमें आकर देखा कि अँधेरेकी भव्यता और आध्यात्मिकताका असर बहुत है तव अुन्होंने अपनी मस्थामे भी अुसी रिवाजको ले लिया।)

सुबहकी प्रार्थनाके लिये मैंने अुन्ही सस्कृत श्लोकोको चलाया, जो समूचे महाराष्ट्रमें 'प्रात स्मरण'के नामसे घर-घर चलते हैं। श्लोकोकी यह पसन्दगी बडी ही सुन्दर है और असमें शिव, विष्णु, गणपति,

देवी और भूमनारायण जिस अुपास्यपंचकका ध्यान और अपासनाकी प्रधानता है ।

संस्कृत स्तोत्र रत्नाकर मेरी एक प्रिय पुस्तक था । अुमयम भगवत पादाचापका तीनइलोकी वेदाती प्रात स्मरण मुझ बहुत ही प्रिय था । अुसीस में अपनी प्राथना शुरू करता था । एक इलाकम 'स्मरामि दूसरे म भजामि और तीसरम नमामि वह त्रम मुझ विनाप पसंद था ।

था मगनलालभाभी, रामदास दवदास आदि सब लगान प्रात स्मरणके बीस पचास श्लोक कण्ठ विम और मुबहकी प्राथना आश्रम-जीवनका आवश्यक अंग बन गया ।

जब गाधीजीने अहमदाबादम सत्याग्रहाश्रमका स्थापना की तब अुहोंने मुबहकी प्राथनाक लोक खूब ध्यानम दल लिअ और अुनम कुछ काट-छाँट करके मुबहकी प्राथनाका निश्चित रूप द दिया ।

मैंन अयत्र लिखा ही है—मासकरके आश्रम भजनाइली की जाविरा आवृत्तिकी प्रस्तावनाम—कि गाधीजाका भगवतपादाचापके तीन वेदाती इलोक पसंद तो थ, तबिन बोलने मवाच था । मैं भूतमग्रह नहा हू, बल्ल हू जसा अनुभव हूअ बिना वमा कत अह बडा ही मकोच था । मत्यबादिताका अितनी सूक्ष्म कोटि तक नही गय अह हम गगनाक अिसना कभी ग्याल ही नहा आया ।

गामकी प्राथना जो भाजनक बाद और गानक प्तर आविरा मामुदायिक कायत्रम था अुमका समय मुकरर हान ग्याग कठिताअ नही था । तबिन मुबहकी प्राथनाका समय जदी निश्चित नग हुआ । कभी पाँच बज कभी छ बज और कमा-कभी मात बज मा मर गग बिकट्टा शकर प्राथना करत थ । अिमम कव सबकी महशियनका ही ध्याल था ।

अुद दिन अमा चला मेकिन निधिलनाम और अनियमिननाम

गाधीजा बड़े ही नाराज हो गये। अेक दिन अुन्होंने कहा, 'सुबहकी प्रार्थना चार बजे ही होगी। गरमी, जाडा या वर्षाका ख्याल किये विना, व्यक्तिकी आदते और अुसके स्वास्थ्यका ख्याल किये विना, सुबहकी प्रार्थना आअिन्दा चार बजे ही हुआ करेगी।'

तब मैंने कहा कि मेरे लिये तो यह नियम अनुकूल ही है। लेकिन जब सोनेका समय मुकरंर है और अमुक घण्टे सोना जरूरी है, तब चार बजे अुठनेका हम नियम रखे और दाँत-मुह धोनेके लिये जरूरी समय देकर चार बजकर बीस मिनटको प्रार्थना शुरू करनेका नियम रखा जाय।

बरसो तक वसा हा चला। लेकिन आखिरी दिनोमे गाधीजी सुबह होनेके पहले कभी-कभी तीन बजे और कभी-कभी दो बजे ही अुठते थे। तब सुबहकी प्रार्थना बहुत ही जल्दी होती थी और चन्द लोग प्रार्थनाके बाद थोडा समय सो भी जाते थे। स्वास्थ्य कमजोर होने पर गाधीजी भी सुबहकी प्रार्थना और थोडा जरूरी काम करनेके बाद जरा सो जाते थे।

गाधी-कुटुम्बमे रामभक्ति और तुलसी रामायणका पारायण लम्बे अरसे से चलता था। महाराष्ट्रमे तो समर्थ स्वामी रामदासके जवरदस्त प्रचार के कारण रामोपासना फैली हुअी थी ही। कृष्णकी अुपासनामे मधुराभक्ति, गोपियोका रास, राधाकृष्णकी कथाअे, अँसी-अँसी वाते महाराष्ट्रमे चन्द सन्तो को जरा खतरनाक-सी मालूम हुअी। अुन्होंने मर्यादापुरुपोत्तम रामकी अुपासना, वजरगवली हनुमानकी अुपासना और रामनाम-सकीर्तन अिन वातोपर ही अधिक जोर दिया था और रामदासस्वामीने तो गाँव-गाँवमे हनुमानके मन्दिर और पहलवानोके अखाडे भी स्थापित किये थे। अिस परम्परा के प्रतिनिधि अेक सगीतशास्त्री नारायणराव खरे जब आश्रममे आये तब अुन्होंने रामनामकी धुन और अँसी ही दूसरे सन्तोकी धुन आश्रममे जोरो से चलाअी, अच्छे-अच्छे हिन्दी भजन प्रार्थनामे दाखिल किये और अुनका संग्रह हम सब लोगोकी मददमे 'आश्रम-भजनावलि'के नामसे गाया

किया। सप्रहरा यह नाम गाधीजीने ही पसन्द किया था। गुरु गुरुमे भजन पसन्द करनेमें मगीतके रागवी ही दृष्टि अधिक रहती थी। यान्मे गाधीजीने च द सिद्धांत बताया, अिनम जो नहीं बचने थ असे भजन भजनावलिमेंसे निकाल दिया गअ। जिन भजनोमें केवल गलाके अनुप्रास ही है और सास जथ कुछ नहीं है असे भजन छोड लिये गअ। जिनमे मृयुका र वताया गया है असे भी भजन निकाल दिया गअे। मनुष्य स्वभावके वारेमें अथद्वा बतानेवाले सब लोग मतलबके होते हैं सचमुच काओ विसाका नही है जसी बात समनाकर बराग्यका उपेग करने वाले लोक भी छोड दिया गअ।

गाधीजीने गुरुम ही कहा था कि देशभरके सब अच्छे भजनोंका संग्रह करनेका हमारा अिरादा नहा है। आश्रमवासियोंको समय-समयपर जो भजन अच्छे लगे जीर जिनसे प्ररणा मिले सुतने ही भजन भजनावलि में सेन है।

भजनावलिकी रचनाके वारेमें अुसकी नओ जावतिकी प्रस्तावनामें मैंने काफी लिखा है अुसमेंसे च द बात यहाँ ली है। अिससे ज्यादा विस्तार करना जरूरी नहीं है। हमारी प्राथनामें ओसाओ, मुस्लिम पारसी और जापानी बौद्ध बत्र या स्नोत्र च द और कमे आय अुगरु वारेमें भी मैंने बहोपर लिखा है। यहाँ जितना कहना बस है कि आश्रमकी प्राथना और आश्रमका भजन संग्रह दोनोंमें आश्रम-जीवनका प्रतिबिम्ब है।

मैंने अुपर लिखा कि गामकी प्राथनाका समय सुकरर करना आमान था। लेकिन जिनमें भी मुसाफिरीमें बडी कठिनाओ और गडबडी रहती थी। अिस अनिश्चिततासे अुकरर गाधीजीने अुसका समय भी कायमी सुकरर कर लिया। अमा अेक प्रसंग 'वापूकी शक्तिर्मा' में (पृ० १५) मैंने

: अनिश्चितता, अव्यवस्था और दीनपन गाधीजीने बिलकुल

वरदास्त नहीं कर सकते थे ।

कभी लोगोंने शिकायत की कि आश्रमकी प्रार्थनाके श्लोक महत्त्व के होते हुअे भी और ज्यादातर भजन लोकप्रिय होते हुअे भी आश्रमकी प्रार्थना नीरस ही लगती है । अिस दोषको दूर करनेके लिये गाधर्व महाविद्यालयसे भवत-हृदय, सगीत-प्रवण नारायणराव खरेको हम ले आये । पंडितजीने प्रार्थनाको सगीतमय और रसमय बनानेकी पूरी कोशिश की । तो भी आश्रमकी प्रार्थनामे हम रग जमा नहीं सके । अिसका कारण ढूंढते मुझे लगता है कि गाधीजीकी भवित हमेशा अन्त-स्रोता रही । पारमार्थिक और अुत्कट होते हुअे भी वह हृदयके अन्दर-ही अन्दर रह जाती थी । अुन्होंने जो दो-तीन गद्य-प्रार्थनाअे लिखी है अुनमे अुनका हृदय कुछ-कुछ प्रकट हुआ है सही । अिसी तरह वेलगाममे गौरक्षा मघकी स्थापना करते अुन्होंने जो भगवानकी प्रार्थना की थी वह भी काफी अुत्कट है ।

आश्रमवासियोमेसे हम चन्द लोग सिद्धान्तके वेदान्ती । हमारी भक्ति अुत्कट हो या यान्त्रिक हो, अुसमे ज्यादा रस नहीं आ सकता था और आश्रमके बहुतसे लोग और विद्यार्थी तो सुवह-शामकी प्रार्थनामे रस्म अदा करनेके ख्यालसे ही अिकट्टा होते थे । अुनके वायुमण्डलमे सच्चे भक्तोका हृदय भी दब जाता था ।

श्री विनोवाने प्रार्थनामे कुछ तबदीली शुरूसे ही की थी । लेकिन पदयात्रा मिशन शुरू होनेके बाद अुन्होंने सारी प्रार्थना ही अलग ढगसे चलायी है । अुसका असर भी समाजपर अच्छा होता है ।

भारतमे सन्ध्यावन्दन आदि अीश्वरोपासना अमुक वर्णों तक ही सीमित रही । सस्कृतके श्लोक बडे ही सुन्दर है । लेकिन सामान्यतः लोग अुन्हे समझ नहीं सकते और चन्द स्तोत्रोमे भावको गौण बनाकर

५२ आधम-गहिता

अनुप्राणादि-गन्तव्यकारका ही प्रथागत थी है। भारतवर्षी गद्यम यहा विरामित है मन्त्रात् भवन। अन्तर्गत पूरा अथवाग गोपीत्राणे आधम प्रायनाम विद्या ही है। मन्त्रवत् और तन्त्रगीत मय वशीक लिख और वणवत्त लोकाके लिख भी है। आधम प्रायनाम मय धर्मात्, मय वयात् और मय भाषाआत् ग्योकार करती है। आधमक प्रथमि मयधम-गमभाव है। आधमकी प्रायनाम अथ वन्म आग वदन्त मयधम मममात्रका पालन है, जिसका अद्गात् विनागात् आत्त गत् भी नारायण तू धान स्तानम अद्दा तरहग हुआ है।

प्रार्थनामें क्या-क्या आता है ?

धर्माचरण और आत्मोन्नतिकी दृष्टिसे जो कुछ नित्य चिंतन, मनन या विधिविधान किया जाता है, उसे हम अुपासना कहते हैं। अुपनयन (जनेअू), अुपवास (व्रत, फाका), अुपासना (सध्यावदना, प्रार्थना आदि) और अुपनिषद (गुरुसे पायी हुअी रहस्यविद्या) ये सारे शब्द नजदीकके हैं क्योकिक अिनके पीछे अेक ही कल्पना है। द्विजोकिक त्रिकालसध्या नित्यकिक अुपासना ही थी। अिस्लामकिक रोजकिक पाँच नमाजे अुपासना ही है। अीसाअियोकिक सुवह-शामकिक या साप्ताहिक प्रार्थना भी अुपासना ही है। भक्तोकिके भजन तो अुत्कट अुपासना है ही।

अुपासनामे क्या-क्या आ सकता है ? क्या-क्या आना चाहिके ?

भक्त कहिके : अपनी मन स्थितिके भगवानकिके समझाकर अुसकिके करुणा किके याचना करना, अुसकिके मदद माँगना और अुस करुणासागरकिके मदद अवश्य ही मिलनेवाली है अैसा विश्वास अपनेकिके दिलाना—यही है प्रार्थना-अुपासनाका प्रधान अग। भक्त लोग आत्मिक अुन्नतिके चाहते हैं। दुनियाकिके स्थितिके वारेमे अुदासीन होते हैं। अिसलिके अीश्वर जैसा भी रखे वैसा रहनेकिके मनकिके तैयारी करना अिके भी वे अुपासना कहते हैं।

जो आर्त—यानी सकटग्रस्त—होते हैं, वे सकटनिवारणकिके सीधी प्रार्थना करते हैं। जिसके जीवनमे जिस चीजकिके कमी है अुसकिके पूतिके लिके जो प्रार्थना करते हैं अुनकिके अर्थार्थी भक्त कहा जाता है। जो भक्त भगवानसे दिशादर्शन, अुपदेश, प्रेरणा या रहनुमाअी चाहते हैं, अुन्हे शास्त्रोकिके जिज्ञासु कहा है। ये तीनो कुछ-न-कुछ भगवानसे माँगते ही हैं।

जो पानी भवन होत है वे भीरवरपा और अपना सम्बन्ध (जीव शिवका सम्बन्ध) जानत हुआ अंग सम्बन्धकी स्मृति कायम रखाए लिये वेदान्ती अपासना करते हैं। शंकराचार्य आदि जानियाने जो स्तोत्र बनाये हैं वे असी प्रकारके हैं। शंकराचार्य भरिवा ध्यास्या ही करते हैं—
स्वस्वरूपानुसंधान भक्तिर् अत्यभिधीयते ।

जा साधन होने हैं जोर सिद्ध हान पर जानो बनते हैं, उनके लिये आदम पुरपदे लक्षण ही अनुवा साधना कम होता है। था शंकराचार्यने गीताभाष्यम कहा हा है—

“सर्वत्र भवे हि अद्यात्म-शास्त्रे कृतापलक्षणानि यानि, तानि भवे साधनानि अपुदिरयते ।”

यहा यात दूसरे ढंगन कहते हैं—

“यानि मत्त साध्यानि साधनानि तानि भवे भवति सिद्धपुदपस्य लक्षणानि ।”

असलिये गाधीजीने गीताके स्थितप्रज्ञ-लक्षण ही गामकी प्रायनाक लिये न लिये ।

गीताके स्थितप्रज्ञ गुणातात योगी, पण्डित सिद्ध बुध भक्त आदिके सब लक्षण करीब-करीब अक स है। अिन सत्र लक्षणाका अेकत्र करन पर गीताके आदम पुरपका सम्पूर्ण चित्र पाया जा सकता है। दबी सप्तक छद्बीस लक्षणाका हम प्रायनाका अविभाज्य अंग बना सकते हैं, क्योंकि ये छद्वास लक्षण आदम (दबी) समाजकी ध्यापनाकी सुनिवाह भी है और माक्षार्थीका अनय साधना भी हैं।

पुराने भक्तकवि जोर पौराणिक स्तोत्रकार अिष्ट देवताका शारीरिक प नुसके कपड अलकार आयुष जोर आसनसे लकर मुकुटतक सब ळाका सुंदर वणन भी प्रार्थनाम लाते थे। भगवानके दिय जन्मवध

और अुपकारक भी वर्णन लाते थे । वीच-वीचसे भगवानके गुणकर्म और कृपाप्रसादका भी रसभरित वर्णन करते थे । अुन दिनो प्रार्थनामे भगवानकी सगुण-साकार मूर्तिका ध्यान किया जाता था । आजकल अैसी सालकृत मूर्तिके ध्यानके बारेमे लोगोका अुत्साह कम हुआ है । भगवानके गुणो पर ही ज्यादा ध्यान दिया जाता है ।

प्रार्थना-अुपासनाका और भी अेक अग है । चार तरहके पुरुषार्थोकी सिद्धिके लिअे कोशिश करना यह भी अुपासना ही है । धर्म, अर्थ, काम, मोक्षमे प्रथम जो धर्म आता है, वह है आदर्श देवी सपत्त्युक्त सामाजिक जीवनके लिअे गुणोका विकास । अुसीको धर्म कहा है । नीति, सदाचार, शिष्टाचार आदि मिलकर जो सामाजिक सत्पुरुषका जीवन-क्रम होता है वही धर्म है । अैसे धर्मका विस्तार प्राचीन स्मृतियोमे पाया जाता है । अिन स्मृतियोमेसे जो आचारधर्म सार्वभौम है, चार वर्णोके लिअे समान है और युगानुकूल है अुसका सकलन करके अुसे हम प्रार्थनाका अेक अग बना सकते हैं ।

धर्मप्राप्तिके लिअे जो अर्थोपार्जन जरूरी है अुसके मूलभूत सिद्धान्त भी हम प्रार्थनामे ला सकते है । जैसे कि अद्रोहसे आजीविका प्राप्त करनी चाहिये, प्राप्त समृद्धिका सबके साथ सविभाग करके अुपभोग करना चाहिये, सबका ख्याल करनेके बाद अन्तमे ही अपना ख्याल करना चाहिये अित्यादि ।

तीसरा पुरुषार्थ है काम । धर्मके अविरोध, धर्मानुकूल कामका ही सेवन हो सकता है । अिसमे प्रधान वस्तु 'सयम' है । और अितना ही महत्त्व है सर्वभूतोके हितका ।

और अन्तमे चौथा पुरुषार्थ आता है मोक्षका, अिसमे विश्वात्मैक्य-भाव सिद्ध करनेके लिअे षड्रिपुसे मुक्ति मांगी जाती है और अुसकी साधना साधी जाती है । अन्तिम अुपासना या प्रार्थना मोक्ष या विश्वा-

५६ आश्रम संहिता

त्मकयके लिभ ही हा सकता है। इसने लिखे—'यो जसो असो पुरुष सोऽहमस्मि'—अस वक्तिका विकास करके ज्ञानमय तप बताया गया है। जिस तत्त्वके बिना प्राथना सम्पूर्ण नहीं हो सकती।

स्वस्वरूपानुसंधान भक्तिर अत्यभिधीयते ।

हमारी भारतीय प्राथनाआके स्वरूपके कुछ लक्षण यहा बताये। गांधीजीके आश्रममे जो प्राथना चलायी जाती थी उसमे ये सब तत्त्व, बड़ी सूक्ष्म रूपमे वही स्पष्ट रूपमे आ ही जाते हैं।

प्रार्थनाकी भाषा

सुवह-शामकी प्रार्थना किस भाषामे की जाये, यह सवाल शुरूमे अुठा ही नहीं था। सन्तोके वचन जिस भाषामे मिले, अुसी भाषामे अुनको लेना हमारे लिये स्वाभाविक था। सन्तोकी वाणी गुजरातीमे थी, हिन्दीमे थी, चन्द सुन्दर भजन हिन्दुस्तानी शैलीके थे। दो-तीन स्तोत्र अग्रेजीमे थे। अेक गीत तमिलमे था। गीताके श्लोक सस्कृतमे थे। अिस तरह प्रारम्भसे ही आश्रमकी प्रार्थना बहुभापी हो चुकी थी।

धीरे-धीरे अुपनिषद्, गीता और आध्यात्मिक स्तोत्रोका अध्ययन बढ़नेसे सुवह-शामकी प्रार्थनामे सस्कृतका महत्त्व बढ़ा और अीशावास्यका पहला मन्त्र आनेसे हमारी प्रार्थनाका प्रारम्भ वैदिक भाषासे होने लगा।

जब कुराने-शरीफके अित्रके जैसा अल्फातेहा हमने प्रार्थनामे लिया तब अुसके साथ अरबी भाषा आ गयी और जब पारसियोका मन्त्र भी हमने ले लिया तब अवेस्ता भाषाका भी स्वीकार हमने किया। बांगला, मराठी, सिन्धी—जो भी भाषा प्रार्थनामे आ गयी, हमने कबूल रखी। हममेसे किसीने नहीं कहा कि अरबी भाषा हमे नहीं चाहिये, या अग्रेजी नहीं चाहिये। पूरवकी बंगला, दक्षिणकी तमिल, पश्चिमकी गुजराती, सिन्धी और मराठी और अुत्तरकी हिन्दी और अुर्दू सब भाषाअे हमारे लिये अेकसी प्यारी थी। अगर कही किसी चीजका अच्छा अनुवाद मिला तो अुसका भी हमने अुतने ही प्रेमसे स्वीकार किया।

हिन्दू मनोवृत्तिकी यह स्वाभाविकता है—(हम नहीं जानते थे कि अिसमे कुछ अुदारता भी है) कि हम सब धर्म, सब पन्थ, सब नवी,

भा आने लग । अिनम कुभारणा स्वभावके और धमके प्राटेस्टट खिस्ती । जुहाने ससृृतके खिलाफ आपत्ति अुठाअी । मैने अुहे हमारु दृष्टिकोण समझाया नेकिन अुह सतुीय नही हुआ । आखिरकार हम समझीते पर राजी हुअे कि गीताके श्लोक अक दिन ससृृतम बोले जाय और दूसरे दिन गुजरातीम । यह सिलसिला काफी चला और अुसका वायुमण्डल भी जच्छा बना रहा ।

फिर तो स्वराजका जादोलन अग्र हो अुठा और सरकारने आश्रम, विद्यापाठ जादि सब सस्थाय जन्म की ।

जब गाधीजी गुजरात छोडकर बर्धा चन गय और बहा सवाग्रामम आश्रमकी स्थापना हुअी तब फिरस प्राथनाकी भाषाका सवाल चन्द लगाने छेडा । तब गाधीजीन बहा कि मै तो अब भी ससृृत रखनेके हा पक्षका हूँ । लकिन अब मै अुसका आग्रह नहा रखूगा । मैने आश्रममे ससृृतका वायुमण्डल बनानेकी कोशिश की लकिन हार गया हूँ । ससृृत सीखनका अुत्साह अब पहनके-जसा नही दीख पडता । बिना अय समझ ससृृतके "लोक बोले जाते नेवल यात्रिव हो जाता है । अिसीलिअ ससृृतकी जगह हिन्दी अनुवाद बोलनकी अिजाजत देता हूँ । मेवाग्राम क हिन्दुस्तानी तालीमी सधम विद्यार्थी ज्यादातर महाराष्ट्रा थ अिमलिये वही पर मराठी अनुवाक वाकनका सिलसिला चला ।

और ससृृतका वायुमण्डल ममान हुआ ।

सीखनेका अधिकार न रखा। जिस पवित्र मनुष्य-वाणीका पावित्र्य और बढ़ाने लिये अुमे 'देववाणी' का नाम दिया, गिर्वाणवाणीकी प्रतिष्ठा दी। जिसका नतीजा यह हुआ कि मनुष्यलोकमें अुसका प्रचलन रुक गया। जिस तरह हमारे पुराने पापका ही फल हमें भुगतना पडता है। दिवगता देववाणी का पुनरुद्धार होनेके दिन आयेंगे जरूर, लेकिन अुसके लिये नये ढगकी तपस्या करनी पडगी। वृद्ध भगवानके दिनोसे आजतक सब सन्तोने सस्कृतका हमारा खजाना देशी भाषाओको देनेका सिलसिला चलाया है। और अब हम पश्चिमकी विद्याओको भी अपनी देगी भाषाओमें लानेकी कोशिश कर रहे हैं। यह प्रयास जब सफल होगा और हमारी लोक-भाषाये प्रतिष्ठित होगी, तब सस्कृतका दोहन फिरमें शुरू होगा और सस्कृतके आशीर्वाद हमें मिलने लगेंगे।

आज जहाँ-जहाँ गाधीजीकी प्रेरणाके आश्रम चलते हैं, वहाँ-वहाँ प्रार्थनामें स्थानिक और राष्ट्रीय देशी भाषाओकी ही प्रतिष्ठा हो, लेकिन सस्कृतका वहिष्कार न हो। जिस भाषाने कभी किसीका द्रोह नहीं किया है।

असलमें सस्कृत भाषा सिर्फ ब्राह्मणोकी नहीं है। तीनों वर्णोंने अुसकी सेवा की है। और अब तो जर्मन आदि परदेशके लोग भी अुसे सीखने लगे हैं। सस्कृत अनेक भाषाओकी माता है। अुसने अपना दूध अनेक भाषाओको दिया है। अुसका धार्मिक आध्यात्मिक साहित्य समृद्ध और अमर है।

प्रार्थनाका वायुमंडल

आथमिकी प्राथनाम मुबह ज्यागार आथमनासा हा रहत थे । कोअी महमान आवें और चार बजे अुठनकी हिम्मत करें तो वे मुबहनी प्राथना म गरीक हो सकते थे । लकिन वसागी सरमा हमाग नहीके जसी रहती थी । शामकी प्राथनाम बाहरके लोग बहुत आते थे । त्रिसीलिअे प्रवचनो म भी भेद रहता था । मुबहका कभा-कभी गीता आदि कोअी आध्यात्मिक प्रचन वाचन विवरण होता था कभी गाधीजी अपन आध्यात्मिक सामाजिक या राजनतिक अनुभव आध्यात्मिक दृष्टिने कहते थे, कभी आथम-जावनके बारेम महत्वकी सूचना देते थे और कभी-कभी त्रिचार्थी जीवनकी चर्चा भी करते थे । त्रिस तरह मुबहक प्रवचन गम्भीर और अतमु ख रहत थे । गामके प्रवचन आथमकी और देशकी रचनात्मक प्रवृत्तिके बारेम ही रहते थे । प्रवासक अनुभव और आगेका वायुमंडल मह भा बहुत दफ प्रवचनोंका विषय बनता था । सब आथमवासियोके साथ अक साथ बात करनेका वही अवमान मौका हानके कारण गाधीजी व्यवहारकी बहुत-सी बातें गामकी प्राथनाके बाद ही कह तत थे ।

मुबह-गामक भोजनके समय भी कभी-कभा जरूरी सूचनाअें दी जानी थी । क्योकि अस समय भा सब स्त्री पुरप और बालक अिकट्टा पाअे जाते थे ।

कभा-कभी गामकी प्राथनाम दिवार्थियोको तसीहत देनेम बडा कीमता वक्त खच होता था । बडे-बडे नेता दूरमे आये हुअे है और गाधीजी बच्चोंका प्राथनाम कैसे बठना, नाक, कान आदि माफ कने

रखना जिसकी व्योरेवार सूचनाओं दे रहे हैं, जैसे दृश्य देखनेको मिलते थे। जब किसी आगन्तुकने जिस वातकी मेरे पास गिकायत की तब मैंने कहा कि गाधीजीके मन सब वाते अके-सी महत्त्वकी है। भगवानके मन किसी फूल या क्षणजीवी कीड़ेका जीवन-विकास, किसी महापुरुषका जीवन-विकास, अके बड़े राष्ट्रका अुत्थान और पतन और किसी महान् सस्कृतिका विस्तार और सकोच सब अकेसे महत्त्वपूर्ण होते हैं। कोभी चीज छोटी है जिस वास्ते अुसकी अुपेक्षा और बड़ी चीज है जिस वास्ते अुसका विशेष महत्त्व अैसा भेद भगवानके घरमे नहीं है। मैं तो मानता हूँ कि हमारे लहूके अन्दर केवल खुर्दवीन (सूदमदर्शक-यन्त्र) से ही दिखायी देनेवाले कीटाणुकी शरीर-रचनामे भी अद्भुत खूबियाँ और कौशल्य दीख पड़ेगा।

अके दिन मीरा बहनने वापूजीसे पूछा कि आश्रमकी प्रार्थनामे भिन्न-भिन्न देव-देवियोंकी स्तुतियाँ, वर्णन और भक्तिके जिक्र क्यों आते हैं? गाधीजीने अुन्हे अितना ही कहा कि अके ही भगवानके ये सब नाम और रूप हैं। अनेक देव-देवियोंका अुपासक हरअके हिन्दू जानता है कि भगवान तो अके ही है। दो हो नहीं सकते। लेकिन अगर ज्यादा समझनेकी अिच्छा है तो काकासाहबसे पूछ लेना। सुबहका प्रार्थनाकी रचना अुन्हीकी है।

मैंने मीरा बहनको यह तो समझाया ही कि हम सब अकेअ्वरपूजक ही हैं। लेकिन सब तरहकी अुपासनाओंको अके साथ स्वीकार करनेसे हम लागोमे जो व्यापकता (अिसे मैं अुदारता नहीं कहूँगा) और समझ-शक्ति आती है, वैसी और किसी भी धर्ममे पायी नहीं जाती। वाकीके सर्व धर्मोंकी अके ही रट है कि "हम ही अके सही हैं, वाकीके सर्व गलत हैं।" जहाँ तक मैं जानता हूँ अपवाद रोमन लोगोका है। वे लोग सब तरहकी अुपासनाको मजूर रखते थे। अुनके पथीयनमे सब देवोंकी मूर्तियाँ अके साथ रखी जाती थी और वे मानते थे कि सब धर्म सही हैं।

मीरा बहनको जिसका आश्चय हुआ तब मैं गिब्यन लिखित रोमन साम्राज्यके ह्रास और पतनके इतिहासमें चर्चा पृष्ठ पढ़कर मुनाब । मैंने कहा कि बचपनसे सबधम-समभावके मस्कार हम मिलते हैं । जिमा लिखे हमारे देगम सबधम सम्मलन चर्चा सवा । यह अब समझ नकी बात है । मीरा बहनको सन्तोष हुआ । प्राथनाकी जा वात अुह शटवती थी अुसकी मुदरता अुनके ध्यानमे आ गया ।

गायद जिसके बात ही मीरा बहनने अब दिन वापूजीमे कहा कि ' मैं आपकी गिप्या बन चुनी हूँ । मुझे हिन्दू धमकी दीक्षा दीजिय । गाधीजीने कहा कि अुसकी क्या जरूरत है ? औसाओ धम क्या बुरा है ? औसाओ हो मेर पास आकर ज्याग अच्छी जीसाओ बन जाओ यही मैं चाहूँगा । मीरा बहन वापूजीका भाव समझ नहीं सकी । अुसका बडा दु ख हुआ कि गाधीजी अुमे अपनाते नहीं कुछ फरक रखते हैं । अकालतम अुसने बहुत दु ख किया रोयी । बादमे गाधीजीने अुमे आश्रम धमका वह पहलू समझा दिया कि सब धम अकस आदर पात्र है । सब धमोंके प्रति हम अब सा सदभाव रखते हैं । जिसलिखे हम धर्मातरकी आवश्यकता महसूस नह करते । हिन्दू धममे जा कुछ खास बातें अच्छी लगे अुनको औसाओ धममे दाखिल करते किमीको कठिनाओ नहीं होनी चाहिये । धर्मातर कौओ पाप नहीं है । लेकिन किसीको अेक समाजमे से अुखाडकर दूसरे समाजमे बानेका प्रयत्न अनावश्यक चेष्टा है । धर्मातरका आग्रह रखे बिना हम सबका स्वीकार करते हैं जिसकी मुदरता तुम क्या नहीं देखती हो ? जब वापूजीका दृष्टिबिन्दु ध्यानमे आया तब मीरा बहनको पूरा सन्तोष हुआ ।

अितना ता बबूल करना हा चाहिय कि हम लोग जो प्राथनामे गरीब होत थे हमेगा प्राथनामे तल्लीन नहीं हो सकते थे । प्राथनाके मन्त्रोका, श्लोकोका और भजनाका अथ और विवरण मैं आश्रममे अनेक बार किया है । लेकिन प्राथनाके समय मन्त्रके या श्लोकाके अथ

की तरफ हमेशा ध्यान रहता ही था असा नही । लेकिन अेक विशिष्ट आध्यात्मिक और भक्तिमय वायुमण्डलका हम अनुभव करते थे और प्रार्थनाके समय जो भी विचार मनमे आते थे उनका वायुमण्डल भी प्रार्थनाके कारण अुन्नत रहता था । कोअी हीन विचार मनमे आया तो अुसकी हीनता पहचाननेमे प्रार्थनाका वायुमण्डल तुरन्त मदद करता था । और आश्रमके आदर्शोंका स्मरण करानेमे प्रार्थनाकी मदद बहुत कुछ होती थी ।

यह भी सबका अनुभव है कि मनमे कोअी विशेष चिन्तन चलते रहनेसे प्रार्थनाके किसी अेक वचनकी तरफ कभी-कभी विशेष ध्यान जाता था । अुसका विशेष अर्थ मनमे विजलीके जसा चमक पडता था और अुस तरह सारी जीवनदृष्टि यकायक परिष्कृत हो जाती थी और सारा दिन कृतार्थ हो गया असा सन्तोष मिलता था । कभी-कभी किसी वचनका विशेष पहलू ध्यानमे आनेके बाद जीवनके हर क्षेत्रमे अुस दृष्टि का विनियोग करते कअी दिन चले जाते थे ।

कभी-कभी प्रार्थनाका, खास करके भजनोका कोअी हिस्सा चित्तमे चुभ जाता था और अपनी गलती या सकुचितताकी ओर ध्यान जानेसे वृत्ति अन्तर्मुख होती थी और आत्मशुद्धिका सकल्प कारगर हो जाता था ।

अगर हरअेक आश्रमवासीने अिस तरह प्रार्थनामे अपनेको हुअे लाभ लिख रखे होते तो वह अेक कीमती मसाला हो जाता । मैने तो अनेक वार महसूस किया है कि प्रार्थना अुपासकके लिये आखिरी पूँजी है । और सब तरहसे अगर मनुष्य हार गया, प्रतिजादुर्बल हुआ, सकल्पशक्ति क्षीण हुअी तो अुत्कट प्रार्थनाके बल पर वह अपनेको बचा सकता है और जीवनमे नया पर्व शुरू कर सकता है । लेकिन यह लाभ स्थायी तभी हो सकता है, जब प्रार्थनाकी अुत्कटता मनुष्य कायम रखे । अगर प्रार्थनामे हृदय नही रहा तो फिरसे गिरते देरी नही लगेगी । प्रार्थनासे

पल अनुताप, पश्चात्ताप और प्रायश्चित्तका भावना तो कम-न कम जानी ही चाहिये ।

प्राथनाम हमारा कुछ-न कुछ माँगना रहना ही चाहिये जसा नहीं है । चित्तवृत्ति अन्तर्मुख हो, जीश्वरके सान्निध्यका कुछ-न-कुछ अनुभव या हृदयरा आयता और जाध्यात्मिकता जाग्रत ही तो प्राथना सफल हो जाती । जब सचमुच ही हृदयम भागकी आवाज अठे तब तो जीश्वर की कृपा प्रियत हो जाती है और उसकी ओरम मदद मिलत देरी नहीं आती । ललित रोगमर्यादी प्राथनाम एक पवित्र वायुमण्डल जाग्रत रखनकी ही बात होता है ।

प्राथनाका और एक भाग है जिसके द्वारा जीवनके सबके सब महत्कारक पहलुओका स्मरण होना है और इस तरह अपने बौद्धिक पहलु का अक्षय्य हो रहा थी उसकी ओर ध्यान जाकर जीवनका विकास सर्वांगण होनेम मदद मिलती है ।

शाधोजी जब-जब आश्रमम रहते थे तब-तब करीब सबके सब आश्रम वासा प्राथनाम हाजिर रहत ही थे । लेकिन जब शाधोजी मुसाफिरीम जात थे तब प्रार्थनाम कभी-कभी बहुत कम लोग जान थे । और मुगलम भी तब यहाँ हैं जब शीतकाष्के तिनोम जक्त मगनलालमाजी प्राथना भूमिपर आकर बैठत थे और प्राथनाक मन्त्र बालकर, भजन गानर सपचाप चेत जान थे । अन्तर्गत दूरर आत्मवासियासे अमकी कमी भागिकायत नहीं की । अन्तर्गत निष्ठा दसतर जोराक मनम अन्तर्गत प्रति आनरवत्ता था लेकिन प्राथनाम बैठनवाग्यना मर्याद वत्ता नहीं था ।

मरा अरु विचित्र वसितका यहाँ त्रिक करना चाहिये । राज नियमित रूपम प्राथना करनका तब आश्रमवासियाका शास आग्रह रहता था अन्तर्गत मैं भा अरु था । राज बिना स्नान त्रिक जस रहा ही

नहीं जाता वैसे ही दो समयकी प्रार्थना किये बिना मुझसे रहा नहीं जाता था। प्रार्थना-भूमिपर जाकर सबके साथ बैठ नहीं सका तो अपने घरपर या जहाँ रहा वहाँ पर प्रार्थना करता ही था।

एक दिन बौद्ध सघके वारेमे और बुद्ध भगवान्के विहारोके जीवनके वारेमे पढते अके नियम मैंने पाया कि अके ही आश्रम या आराममे दो प्रार्थनाये नहीं होनी चाहिये। अके सस्थाकी अके ही प्रार्थना हो, यह अनुका नियम था। मुझे यह जँच गया। तबसे मैं मानने लगा कि आश्रम सामुदायिक प्रार्थना करता है, अुसमे मेरी भी प्रार्थना आ गयी। मुझे अलग प्रार्थना नहीं करनी चाहिये। अिसमे आलस्यका भाव नहीं था, किन्तु सामुदायिक अेकता महसूस करनेकी बात थी। जब गाधीजी मुसाफिरीसे आश्रममे आये तब मैंने बौद्धोका नियम अनुको सुनाया और कहा कि अब मैं अलग प्रार्थना नहीं करता हूँ। गाधीजीने बताया कि मेरी बातमे विचार-दोष है। प्रार्थना तो अखड चलनी ही चाहिये और सामुदायिक प्रार्थनामे नहीं शरीक हो सके तो जहाँपर भी हम रहे, अपनी प्रार्थना तो करनी ही चाहिये।

. प्रार्थना-समयका अके और अनुभव यहाँ लिखना जरूरी है। गुजरात विद्यापीठमे जब मैंने सुबह-शामकी प्रार्थना शुरू की तब पहले ही साफ कर दिया कि आश्रममे प्रार्थनामे हाजिर रहना हर अेकके लिये लाजमी है। जो हाजिर नहीं रहता वह आश्रमजीवनका द्रोह करता है। विद्यापीठके छात्रालयकी साधना अलग है। अिसमे प्रार्थनामे हाजिर रहनेका आग्रह या नियम नहीं है, केवल सबको आमन्त्रण ही है।

प्रार्थनाके बाद अुपस्थिति-पत्र लेकर हरअेककी अुपस्थिति दर्ज की जाती थी। कोअी विद्यार्थी प्रार्थनामे हाजिर न रहे, लेकिन अुसके अन्तमे अुपस्थिति-पत्रमे अपनी अुपस्थिति दर्ज करानेके लिये आ जाय तो अुसे मैं अनुचित नहीं समझता था।

अब दिन जब साज्जनने मुझमें कहा कि 'जापनी प्रायनाका वायु मण्डल प्रमत्त वायुमय अध्यात्म-प्रापक, अनुतिकर होता है। तबिन अुसने जतम विद्यार्थिप्राके नाम पुकारना और हरजेक विद्यार्थीका नाम कहकर अपनी अपुस्थिति दज कराना यह बिलकुल यात्रिक और नीरस व्यापार मालूम होता है। अिसे आप क्या चलान हैं ?'

अुसका जा जवाब मैंने दिया मरे अिअ बिलकुल स्वाभाविक था। तबिन बात सही होते हुआ भी अुस तरफ मेरा ध्यान नहीं गया था। अिसल्लिअ मर अुत्तरसे स्वयं मुझ ही आश्चय हुआ।

मैंने कहा कि मैं जाजकलके अध्यापकाके जसा विद्यार्थियाकी सुगा मद करनेवाला नहीं हूँ। लेकिन छात्रदवो भव यह मेरा जीवन मात्र है। विद्यार्थियोमे भगवान्को ही देखे। भगवानकी सेवा समझकर ही विद्यार्थियाकी सेवा करो। अिमलिज जब अपुस्थिति-पत्रक पढा जाता है तब विद्यार्थियोके नाम सुनने मेरे मन विष्णु-सहस्रनामके पाठका ही भाव पदा होता है। भगवान्के हजार नाम सुनते और रटते भवताक मनमे जा धन्यता हानी है वही जानद विद्यार्थियोके नाम सुनते मुझ मित्ता है। मुझ वह प्रवृत्ति कभा भी नीरस नहीं लगी। अस सज्जनको मेरा जवाब अितना अच्छा लगा कि अुसने बम्बयीके अक अखबारमे हमारी प्रायनाका और अिस सवाल-जवाबका जित्र किया। तब मेरे ध्यानमे आया कि मेरी अिस दृष्टि मे कुछ विगपता थी।

आश्रममे प्रायनाके बाद हरअक आश्रमवासीन मूत कितना जाता अिसका हिसाब दज किया जाता था। हमार मन वह भी हमारी प्रायनाका ही अक अग-सा गता था।

कुछ प्रत्यक्ष लाभ भी है ?

प्रार्थना या अुपासनासे आश्रमको, आश्रमवासियोंको या समाजको लाभ क्या हुआ, यह सवाल जरूर पूछा जा सकता है। किसी रिवाज या सस्कारके असरके बारेमे शुरू-शुरूमे हम कुछ कह नहीं सकते। फलाना रिवाज चलानेसे किन-किन लाभोकी अपेक्षा हम रखते हैं अुसका वर्णन फलश्रुतिके रूपमे हम चाहे जितना कर सके, लेकिन जब अेक प्रयोग अठारह बरस तक चलाया गया तब अनुभवकी बुनियाद पर कुछ-न-कुछ निश्चित रूपसे कहना ही चाहिये।

आश्रमजीवनके साथ जो दो-चार व्यक्ति अधिकाधिक अेकरूप हो गये थे, अुनके चित्त पर और जीवन पर क्या-क्या असर हुआ यही सबसे महत्त्वका सवाल है।

स्वयं गांधाजी, विनोवा भावे, मगनलाल गांधी, महादेवभाभी देसाभी, किशोरलाल मश्रूवाला आदि थोडे लोगोमे आश्रमके व्रत, अुसका आदर्श और अुसके वायुमण्डलका प्रभाव अधिक-से-अधिक था। आश्रमके चन्द शिक्षकोमे और विद्यार्थियोमे भी आश्रमकी प्रार्थनाके प्रति असाधारण निष्ठा थी। जब प्रार्थना चलती थी, प्रार्थनाके मन्त्रो पर प्रवचन सुनाये जाते थे, तब सुननेवाले अनेक लोग अन्तर्मुख होते थे। अपने गुणदोषोका परीक्षा करते थे। प्रयत्नपूर्वक जीवन-परिवर्तन करते थे। अुस समय तो बहुत लोगोको प्रार्थनासे प्रत्यक्ष और स्पष्ट लाभ हुआ। लेकिन यह सब चन्द लोगोके आग्रह और समुदायके वायु-मण्डलके कारण था। जब अँगीठी जलती है तब आस-पामकी सब चीजे

अस वक्तके लिये गरम होती है। अगीठी दूर होनेपर सब चीजें ठण्डी पड जाती हैं।

आश्रमके बहुतसे लोगोके लिये दो वक्तकी प्राथना यात्रिक ववापदक जसी थी। अतनी नियमितता बरसो तब चलानस अुनका कुछ आदत मुघर गयी अुनके जीवनमे कुछ व्यवस्था आयी। प्राथनाके मन्त्रोके अय और प्रवचन मुननेस अन्तम धार्मिक जीवनका आदर्श स्पष्ट हुआ। हरअकको अपने जीवनको कसनके लिये अेक कसौटी मिल गयी। मनुष्य किसी अच आदग तक पहुँच सके या नहीं यह अलग बात है। मनुष्य अूचाआ तब चढकर बाज दफे अुतर भी सकता है। लेकिन जब बेर दफा कीआ अूच आदगको समझ लेता है पसद करता है तब अुससे कम दर्जेका आदग अुस भाता नहीं। पसद किम हुअे अस आदगके अनु सार हा सत्कृतिका मूल्य तय होता है।

त्रिमन्त्र अठारह बरस तक बिसा अुच्च वातावरणम रहना, हृदय से अुसका स्वीकार करना और अुमीवे अनुसार अपने जीवनको बनाने का कागिग करना यह अक स्थाया लाम ही है।

प्राथनाका स्वय गाधीजीक मन पर सबसे अधिक असर हुआ था, होता था और वे दिन-पर दिन जोरसे आग बन्ते थे। वे हमेशा कहते थ कि जा भक्ति दिन-पर दिन बढती नहीं वह भक्ति ही नहीं। गाधीजी के जावनना नादोकम दग्नकरा जिह मौका मिग, वे ताज्जुव होत थे कि गाधीजी अपनी साधनाम नितने जारस जागे बढत जाने हैं।

यह सब हात हुआ भी गाधीजाको प्राथनास पूरा लाम अुठात कुछ बिगप मा आन थे।

समुनापको भवा करनवालेको कुछ-न-कुत्र त्याग करना ही पडता है। फीत्रक किमा गिविरम जब सब भक्ति सात हैं तब चद पहरेलारा

को जांगना पडता है। जब सब खाने बैठते हैं तब चन्द लोगोको खाना छोडकर परोसना पडता है। आश्रमकी प्रार्थनामे जब सब लोग आँखें मूंदकर अेकाग्रतासे प्रार्थनामे तल्लीन होनेकी कोशिश करते रहते, गाधीजीको आँखे खुली रखकर देखना पडता था कि कोअी बच्चे शरा-रत तो नही करते ? औरोकी प्रार्थनामें विक्षेप तो नही कर रहे हैं ?

अिसी तरह जब प्रार्थनाके शब्द बोले जाते थे या भजन गाये जाते थे, अुस समय आश्रमजीवनको अुन्नत करनेके लिये किस विषय पर या किस घटना पर प्रवचन चलाना है अिसकी वात भी अुन्हे सोचनी पडती थी। गाधीजीके स्वभावकी अितनी प्राजलता थी कि अैसा विक्षेप होने पर वे कह देते थे कि आर्ज मेरी प्रार्थना अेकाग्र नही हो सकी।

आश्रमवासियोमे जो व्यक्ति ज्ञानमार्गी वेदान्ती थे, अुनका चिन्तन अेक ढगका होता था। और हृदय-सर्वस्वका अर्पण करनेवाले जो भक्त-हृदय थे अुनकी प्रार्थना कुछ अलग ही होती थी। चन्द लोगोके मन पर भजनमे आये हुअे किसी दृष्टान्तका प्रभाव पडता था तो चन्द लोग चित्तको अन्तर्मुख करनेवाली वाते पसन्द करते थे।

प्रार्थनाके बाद आश्रमवासियोमे जो व्यक्तिगत चर्चा चलती थी अुस परसे प्रार्थनाके असरका ख्याल हम कर सकते थे।

अतिपरिचयके कारण आदर कम होता है। अिस न्यायसे कअी आश्रमवासियोके मन पर प्रार्थनाके मन्त्रोका कोअी असर ही नही होता था। अेक रस्म अदा की और छूट गये अितना ही भाव दिखाअी देता था। अिसके विरुद्ध जो बाहरके लोग आश्रमी वायुमण्डलका लाभ अुठानेके लिये चन्द दिनोंके लिये आश्रममे आ रहते थे अुनके चित्त मे बडी अुत्कटता रहती थी, कभी-कभी अुत्तेजना भी पाअी जाती थी। अुनको प्रार्थनामे स्पष्ट लाभ होता दीख पडता था।

प्रार्थनाका अेक और भी विशेष असर यहाँ पर दर्ज करना चाहिये।

जब प्रायना करनेवाला समुदाय रोज वही-वा-वही रहता है तब भी नाशाय न होनेके कारण सारा वायुमण्डल जड़ और शिथिल हो जाता है। लेकिन जब समुदाय बदल जाता है या जुसम चन्द्र नये लोग आते हैं तब पुराने लोगोमे भी अक तरहका नवचतय जा जाता है। नित्य-परिचयके आदमीसे मिलनेसे कुछ नयी वानें सूझती नही। नये लोग मिलनेसे कुछ-न-कुछ सूझ ही जाता है। अिसा तरह प्रायनाक समुदाय म नम व्यक्ति गराक हान पर प्रायनावृत्ति तज हा जाती है।

प्रायनाका कुछ हिस्सा तो स्थायी होता है और चन्द्र भजन नये नय आते है और अुनके राग भी अलग-अलग होत हैं। अिसका असर भी अच्छा होता है। भोजनम चावल रोटी दाल रोज वही-वी-वही और शाक, अचार आदि व्यजन नये नये—वसा ही प्रायनाके अिस प्रकारका असर हाता था।

हमन देखा कि प्रायना श्लोकबद्ध और सगोनमय होनेसे बहुत दफे अथकी तरफ ध्यान ही नही जाता। अिलाजके रूपमे हम लोगोने थोड़ी गद्य प्रायना गुरु की। गुरु गुरुम अिसका असर अच्छा हुआ। अथकी आर ध्यान अकाग्रतासे चिपक जाता था। लेकिन कुछ त्पिनके घात गद्य प्रायना वही-वी-वही चलनमे वह यात्रिक बनन लगा। अितना हा नही अुनके बालनेम अक तरहकी गयता भी जान लगी।

था विनाचान आंगापनिपदक गद्य अनुवाकके भी गय रूप दिया है और वहा अक नया तज हा गया है।

पह हुआ प्रायनाके सामान्य लाभका अनुभव। प्रायनाम द्रत भाव अन्तभाव वनाती अमेदमक्ति और भवताका दास्यभक्ति अस जा अनक प्रकार आन है अमका असर भिन्न लागके मन पर भिन्न हा होता है। म पापा र मुझम पापका प्रतिवार भी नही होता, तुम्हार दया करन पर हा मैं बच जाऊगा अस भावाका चालागोके

मन पर अच्छा असर होता है और वे अन्नतिके पय पर अग्रसर हो जाते हैं। दूसरे लोगोके मन पर 'मो सम कौन कुटिल खल कामी' अैसे भावका अच्छा असर नहीं होता। मैं निर्दोष निष्पाप आत्मा हूँ, मुझे दुनियाकी चीजे बाँध नहीं सकती, मैं अमृतका पुत्र हूँ, जो परमात्मा सूर्यके विम्बमे विराजमान है वही मेरे हृदयमे बसा हुआ है अैसे भावों मे चन्द्र लोगोको अधिक लाभ होता है और वे अपनी कमजोरियाँ छोड़ सकते है। प्रार्थनामे बैठे हो तब भी आशा और निराशा दोनोकी लहरे मनमे अुठती, कभी अेक तो कभी दूसरी। दोनोका असर पवित्र और शुभ ही होता है।

प्रार्थनाके जो मुख्य दो प्रकार है—व्यक्तिगत और सामाजिक—दोनोंके बारेमे अपर कमोवेश लिखा है। व्यक्तिगत लाभ और सामुदायिक लाभ अलग-अलग होते है।

मनुष्य जब समाजमे रहता है तब ज्यादातर उसकी शुभ भावनाअे ही जाग्रत होती है। व्यक्तिगत जीवनसे सामाजिक जीवन कुछ हद तक अधिक पवित्र और अन्नत क्रिया जा सकता है। अशआराममे और पापमे फँसे हुअे समाजकी बात अलग है। लेकिन सामान्य तौर पर शरीफ लोगोको समाजका सहवास लाभदायक ही होता है। और जब अैसा समाज प्रार्थनाके लिअे, अुपासनाके लिअे और सम्मिलित आध्यात्मिक पुरुषार्थके लिअे या सेवाके लिअे अिकट्टा होता है तब तो समाजमे हम परमात्माकी अेक विभूतिका ही दर्शन करते है और अिस-लिअे हमारे सब अन्नत भाव जाग्रत होते हैं और अेक-दूसरेकी मदद करते है। जितने लोग अेकत्र प्रार्थना करते है अुनके अन्दर अेक आध्यात्मिक भाअीचारा पैदा होता है जिसके कारण अ्योटे-बड़े कअी मतभेद दब जाते है आर आत्मीयता जोर पकड़ती है।

गाधीजीने कअी बार सारे देजका दौरा ल्गाया। अुनके साथियो

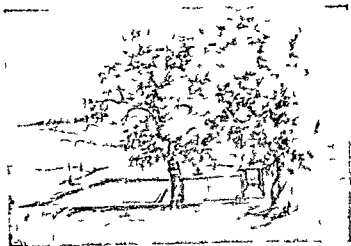
ने भी कभी बार अनेक प्रान्तोकी यात्रा का। थी विनोबा भी आज गाँव गाँव पदल जाकर प्राथनाका बल आजमा रहे हैं और प्राथनाका आशीर्वाद फला रहे हैं। यह बड़ा ही सांस्कृतिक लाभ है, जिसका नाप निकालना मुश्किल है। जब कोसी व्यक्ति समाज या राष्ट्र अपनी हर तरहकी पूजा से बैठता है तब बुझना अंतिम सहारा पश्चात्ताप पुनीत प्राथना ही होता है। खोया हुआ सब तेज और सत्व प्राथना द्वारा फिरसे प्राप्त हो सकता है। प्राथना ही श्रीस्वरकी कृपा है और आत्माकी अमाप शक्ति है।

गांधीजी और आश्रम-प्रार्थना

प्रार्थनाका स्थान कैसा हो इसके बारेमें गांधीजीने बहुत-कुछ सोचा । लोकजाग्रतिके लिये भारत-भ्रमण करते गांधीजी अनेक प्रान्तोंमें गये । रोज सुबह-शाम प्रार्थना होती ही थी । सुबहकी चार-साढ़े-चार बजेकी प्रार्थनामें ज्यादा लोग नहीं आते थे इसलिये मेजवान गृहपतिके घरमें ही किसी कमरेमें प्रार्थना होती थी । शामकी प्रार्थना बक्सर खुले मैदानमें होती थी । चाहे-जितने लोग प्रार्थनामें शरीक हो जायँ, जगहकी तगी नही महसूस करनी पडती ।

असपरसे गांधीजीने सोचा कि आश्रममें प्रार्थनाके लिये कोयी मकान नहीं बनाया जाय । सावरमतीके किनारे खुली जगह पसन्द करके वहाँ स्वच्छ सफेद रेती बिछवा दी । असपर बैठकर हम सुबह-शाम प्रार्थना करते थे । अक दिन गांधीजीने कहा कि हमारा प्रार्थना-मन्दिर जितना बडा है, अतना तो कोयी विश्व-सम्राट् भी नहीं बना सकेगा । ये चार दिशाये हमारे मन्दिरकी चार दीवारे है और तारोसे शोभित यह आकाश असका गुम्बज है । अितना बडा मन्दिर तैयार करनेकी शक्ति किसी भी मानवमें नहीं है ।

स्वराज्य-प्राप्तिके लिये जब आखिरी फैसला करनेका गांधीजीने तय किया और सावरमतीसे दाडीके समुद्रतट तक पैदल यात्रा करके वहाँ नमकका कानून तोडनेका सकल्प जाहिर किया, तब अंग्रेज सरकार सोचने लगी कि अिनको कब गिरफ्तार किया जाय । अहमदावादमें रोज



शुभामना मन्दिर

अपवाह फलम लगी कि आज रातका गांधीजीका गिरफ्तार करके सर कार बन्नी ले जायगी । सावरमती स्टेशनपर स्पेशल टनकी तयारी थी ही । तब तो अहमदाबादके और आसपासके देहातोके हजारो लोग गांधीजीके दगानके लिअ आश्रमम आने लग । वे सब नदीकी रेतीपर ही ना जाते थ और सुबह गामकी प्राथनाम गरीब होते थ । तब गांधीजीने कहा कि आश्रमकी भूमिपर अगर हमन प्राथना-मन्दिरके तीरपर कोअी मकान बना लिया होता तो वह चाहे जितना बडा होने पर भी अितन गाम अुसम नही बठ सकते । क्या ही अच्छा हुआ कि हम लागोनि ओट बनकी दीवाराना प्राथना-मन्दिर नही बनाया ।

वारिगके दिनाम और गतकालम कुछ तकलाफ रहना थी सही, तदिन अम कारण हम प्राथना भूमिका छोडकर हृदयकुजके वरामन्म जाहर बठ अम तिन बटन कम थ ।

आश्रमके प्रारम्भके दिनोमें आश्रमवासी ज्यादातर गुजराती ही रहते थे । असलिये प्रार्थनाके बाद गांधीजी जो कुछ कहते थे, वह प्रवचनके रूपमें हो या सूचनाके रूपमें, गुजरातीमें ही कहते थे । गीता-प्रवचन हो, उपनिषदका विवरण हो या किसी त्योहारका इतिहास हो मैं तो गुजरातीमें ही बोलता था । विनोबा अक्सर गुजरातीमें और कभी-कभी मराठीमें बोलते थे ।

जब जमनालालजी आश्रममें आने लगे तब भी आश्रमका काम गुजरातीमें ही चलता था । उनके लिये हिन्दी, मारवाडी, मराठी और गुजराती चारो भाषाओं में ही थी । लेकिन जब आश्रममें अनेक प्रान्त के लोग आने लगे तब राष्ट्रभाषा प्रचारक जमनालालजीने गांधीजीके सामने दरखास्त रखी कि अब आश्रमका सब काम हिन्दीमें ही चलना चाहिये और प्रार्थना-प्रवचन तो खास हिन्दीमें ही हो । गांधीजीने उनकी बात मान ली और तबसे आश्रमकी भाषा और प्रार्थनाकी भाषा हिन्दी ही हो गयी ।

गांधीजीने मनुष्यजीवनके धार्मिक, राजनीतिक और व्यावहारिक जैसे भेद कभी नहीं किये थे । उनके मन सारा जीवन ही धर्म-साधना था । और उनकी सब की-सब क्रियाओं में व्यापक अर्थमें सेवामय प्रार्थना ही थी । असलिये प्रार्थनाके अन्तमें उनके जो प्रवचन होते थे, वे जीवनके सब अंगोंको और सब पहलुओंको स्पर्श करनेवाले व्यावहारिक विचारोंसे भरे हुए रहते थे । आश्रम-व्यवस्था, आश्रमकी सफाई, आहारके प्रश्न, व्यक्तियोंकी समस्याओं, समाज-सुधार, राजनीतिक मसले, आश्रममें आये हुए मेहमान, गांधीजीका खास अपना कोसी आध्यात्मिक अनुभव, गीता-जैसे किसी धर्मग्रन्थका विवेचन या सन्तवाणीका रहस्य सब-कुछ उनके लिये धर्मसाधना ही थी । आत्मोन्नति, विश्वकल्याण और विज्ञान-शुद्ध जीवन-क्रम यही थी उनकी जीवन-दृष्टि ।

जब प्रायना चलती थी तब गांधीजीना जगता थी कि छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष हम सब लोग जैसे मूँदकर प्रायनाम तत्यान, अथवा गांधीजीके ही प्रिय गार्दोंम रह ता, ध्यानावस्थित हो जायें । गांधीजी अवसर अन्तमुक्त हो ही जान थ । तबिन जुनकी भूमिका आधम पिताकी थी । प्रायनाम आधमके छाट-भाट बच्च कस बठने हैं ग्लोक कस बोलने हैं आदि सब बातापर ध्यान रखनका व अपना खाम बतव्य मानने थ । अुहाने अब त्तिन प्रायनाक बाद कहा भी कि आप सब-लोग जैसे मूँदकर ध्यानावस्थित हो जाअिये । मरा बतव्य अिन बच्चाके साथ है । मैं तो इत्नेकोके अर्थोंका चित्तन भी करूँ और आप सुना रखकर अिन बच्चाका तमीजकी चीकी भी करूँ । गांधीजीके लिअे यह द्वावधान या याग सहज सिद्ध था । सब तरहका काम अुत्कटतासं धरते अुनका आरमचित्तन अवण्ट चलता था ।

यही कारण था कि बतव्य-पाठनम और विश्व-बल्याणकी योजनाओं सोचन और अमलम लाते अुनकी ओरमे कभी भी प्रमाद नहीं होता था । और यदा कदाचित अगर तनिक भी प्रमाद हुआ तो अितन दुखी होते थ और अपने प्रति अुनकी अितनी नाराजगी हाती थी कि वही बड़ा प्रायश्चित्त होता था । सब व्यक्तियोंके प्रति क्षमाके मागर हाने हुअे अुहाने अपने प्रति तनिक भी क्षमा-वृत्ति नहीं धारण की । वे हमेसा कहें थे कि मनुष्यका सारा जीवन हर क्षण विचारमय होना चाहिअ । अुहाने अपने जीवनमे यह साधना पूरी का था और जिस तरह अपना सारा जीवन अुहाने प्रायनामय बनाया था ।

आश्रय-स्मृति-१

विलायतमे गाधीजी गोरोंके बीच गोरोंके घरमे रहे थे । दक्षिण आफ्रिकामे गाधीजीके परिवारमे, अणुके फिनिक्स आश्रममे मिस्टर वेस्ट, मिस्टर पोलक और मिस स्लेशिन् जैसे गोरों लोग रहते थे । दूसरे भी कभी लोग थे । मुसलमानोंका और गाधी-कुटुम्बका सम्बन्ध शुरू से घनिष्ठ था । तो भी गाधी-कुटुम्बमे पुराने वैष्णव जीवनके सस्कार बहुत थे । और अणुमे जन सस्कार भी काफी थे ।

फिनिक्स मडली जब शांतिनिकेतनमे रह रही थी और मैं अणुके परिचयमे आया तब अणुके अिन सस्कारोंका निरीक्षण कर सका था । मुझमे सनातनी महाराष्ट्रीय सस्कार अपने ढगके थे । हम सब लोग अेक तरह के सुधारक, बुद्धिप्रामाण्यसे चलनेवाले । लेकिन पुराने सस्कारोंका असर तो था ही ।

शांतिनिकेतनमे रसोअी करनेवाले ब्राह्मण ही थे । ब्राह्मणोंतरके हाथोंका खानेमे बहुतेको अुञ्ज रहता है और रसोअी बनानेके शुचि-अशुचि के नियम ब्राह्मण ही अच्छी तरहसे समझ सकते हैं और पाल सकते हैं । जब शांतिनिकेतनमे गाधीजीके आनेपर और गाधीजीकी प्रेरणासे ब्राह्मण रसोअिये कुछ दिनके लिये दूर किये गअे और सब विद्यार्थी तथा अध्यापक रसोअी करनेका और परोसनेका काम करने लगे, मि० अेड्यूज और मि० पिअरसन भी परोसनेका काम करनेके लिये तैयार थे । मैंने सुझाया कि व्यक्तिश. मुझे अेत राज नहीं है लेकिन कभी लोगोंको आपत्ति होगी कि क्रिश्चनके हाथका परोसा हुआ हम क्यों खावे ? अिसलिये अनेक

मुधार अेक साथ अवत्र करक हम अपना काम न विगाडे । अेक बगाए अघ्यापवने दलील की वि दत्तात्रयबाबूकी बात सही तो है लकिन मिस्टर अॅण्डयूज और पिअरसन अघ्यापक हैं । गुरुआके हाथका परासा हुआ अन्न खानेम विसीको भी अुष्य नही हागा । मैंन कहा यह दलील अच्छा है, लेकिन ओसाओ गुरुओंके चरणोम बठकर मोखना जग बात है । किन्तु आसाअियाक हाथका खाना कअियाको मजूर नही होगा । आज मैं अस हडिवादियोकी बकालत नही करूँगा ।

सर, बात बही रही । दोना परोसने लग । बादम जब गुरुदेव (रवि बाबू) आश्रमम आय और अुन्हाने स्वावलम्बी प्रयोगको अपना आशीवाद दिया तब गुरुत्वसे मैंने अपना विचार प्रकट किया । अुहान क्या जवान दिया अस वक्त याद नही है ।

अिसी तरह जूते पहनकर रसोओ घरम जाने-न जानकी मान भी छिडी । मैंने कहा कि जूते चमटेके हो या कॅनवसके हो राम्ने पर चलन के लिये जिन चोजोवा अिस्तेमाल होता है अम पादत्राण गने तो होन ही हैं । अुह पहनकर रसोओघरम जाना अच्छा नही है । अेक दो अघ्यापकोने दूसरी बात छेडी । अुहोंने कहा कि चमडा तो अपवित्र है । चमडेके जूते पहनकर रसोओघरम नही जाना चाहिये कॅनवसके या खर के जूते पहनकर रसोओघरम जानम अतराज नही है । मैंने कहा कि यह तो ब्राह्मण धमकी दलील हुआ । हमारे यहां भी लोग असा ही मानत हैं । लेकिन मरे मन स्वच्छताका खयाल ज्यादा महत्वका है ।

अहमदाबादके गाधीजाके आश्रमम भी जसी ही चर्चा चलती थी । जन और यणव दोना मस्कारोकी बहा प्रधानता थी । कुछ सधष भा था । श्री पूजाभाओ श्रीम राजचन्द्रके परम भक्त, बापूजीके आश्रमकी सेवा करनेक लिय तत्पर और अुत्सुक थे । गुरुम बाजारस चीजें गनका काम के ही करते थे । व जब आश्रमम आकर रहत थे तब अुनके रसम रिवाज

गांधी-कुटुम्बके वैष्णव आदर्शके लिये आपत्तिजनक मालूम होते थे । लेकिन लोग किसी भी तरह सब-कुछ सहन कर लेते थे । लेकिन जब पूजाभाभी आश्रमवासियोंको अपने घर भोजनके लिये बुलाने लगे तब मुश्किले खड़ी हुई । जूटे न-जूठेका भेद अनुके घर पर कम था । श्री मगनलालभाभीने गांधीजीके पास अपनी कठिनायी पेश की होगी । मैं अनु दिनों आश्रममें नहीं था । बड़ौदामें रहता था । गांधीजीने सोचकर निर्णय दिया कि आश्रमवासी आश्रमके बाहर किसीके घर पर भोजन करे ही नहीं ।।

खान-पान और छुआछूत तो सनातनियोंकी दिलचस्पीका खास विषय । बालकी खाल अतारे बिना लोगोंको सन्तोष होता ही नहीं ।

अब सवाल अठा कि गांधी-कुटुम्बके लोग जब राजकोट घर जायेंगे तो वहाँ क्या करेंगे ? तर्कनिष्ठ गांधीजीने फतवा दिया कि अपने हाथसे पकाकर खावे । छोटे प्रभुदास गांधी जब राजकोट गये, अपने ही घर अपने हाथमें अलग पकाने लगे । वैष्णव दुनियाको कैसा लगा, मालूम नहीं ।

अिसके थोड़े दिन बाद मेरे पुराने मित्र और साथी, जो आश्रमवासी बने थे, बड़ौदाके पास सयाजीपुरामें मेरे वहाँ मेहमान होकर ठहरे । आश्रमका नया नियम साथ ले आये । अब अनुके लिये मैंने अेक चूल्हा बना दिया । लकड़ी, बर्तन सब-कुछ दिया । मामाकी आँखें कमजोर । रसोयी बनाते घुबने अनुको रुला दिया । मैं देशपांडे साहेबके घरमें ही अलग रहता था । मैंने गांधीजीसे खत लिखकर पूछा कि यह नये नियम की बला क्या है ? मामा मेरे घर पर नहीं खा रहे हैं । गांधीजीने तुरन्त फतवा भेज दिया कि—'काका आश्रमके आदर्शोंको मानते हैं । अिसलिये अनुके घर पर मामाको अलग रसोयी बनानेकी जरूरत नहीं । मामा काकाके घर पर खा सकते हैं ।' (मामा बड़े कष्टमेंसे बच गये ।)

अनु दिनों गांधीजीका आश्रम अहमदाबादके पास कोचरब नामके

गौरम था । (अब वह स्थान अहमदाबाद का अब हिस्सा ही हो गया है ।
मैं अब अपनगर भी नहीं बूंगा ।)

गांधीजीक आधमम दूध घी आदिवा मक्कन निपिद्ध था । कउन गांधी
ममपणा जादि कौज चाह जितनी खाआ । दूधक बिना जिनका काम
चलता हा नही अुनके निये नारियलका रस बनाकर दिया जाता था ।
अहमदाबादम कच्चा नारियल कहाम मिल ? सूभ नागियन्वा खोपरा
कटकर गरम पानीक साथ जुम मिग देन थ । वह था आधमका दूध ।
जिनका चाहिये जह चाडा घाटा दिया जाता था ।

लाल हरी या सूभी मिच खाता भी निपिद्ध था । अिमाम साहब
का खानम तीयेक बिना नही चन्ता था । अुनक निये बाजारमे मूगेवी
मोगरी गांधी जाती थी । मूली कुछ तीखी होती ही है और अुमका मोगरी
बिणप । गांधीजीका कहना था कि मोगरी है तो स्वादम नावा । लकिन
पकानम अुसका तीखापन म्पट होता है । मिचका वसा नहा । अिसपर
स स्पष्ट हाता है कि मोगरी जोभक निये तीखी है लकिन पत्रक निये
अुत्त जक नहा है । आ हो अिमाम साहबके घर पर मोगरीका व्यवहार
बहुत कुछ वन्त । अपन सिद्धांत और लोगका व्यवहार और गरीबकी
आवश्यकताअ अिनके बीच समझौता करनम गांधीजी बड ही कुशल थे ।

आधमम खाना जितना अच्छा मिलता था कि दूध घी जादि गोरस
कं अभावम खाआ परेशान नही थे ।

लकिन घी दूधके अभावम था मगनगाठभाओ गांधीका गरीर
दुबकापनला हा गया ।

मैं गांधीजीक साथ मने १९१७ म सिध जा रहा था तब मैं
गांधीजीक क्ता नि— आधमक बहुतम नियम मुज पसंद हैं । अुनका
पात्रन मैं घर पर भी करता हा हू । लकिन दूध दही मक्कन आदि छोटन

को जी नहीं चाहता । आश्रममे ये चीजे नहीं खाऊंगा लेकिन आश्रमके बाहर दूध-दही, घी लेनेकी अच्छा है । आपकी अिजाजत हो तो वसा कर्गा ।” गाधीजीने प्रसन्नतासे अिजाजत दी ।

अुन दिनो मेरा नियम था कि जो कुछ भी खाना हो, भोजन शुरू करनेके पहले हिसाबसे थालीमे परोसवा लेता था । हमारे यहाँ असे व्रत को ‘अेकवाढ’ (अेक-परोस) कहते हैं । अगर कोअी कुछ परोसने भूल गया तो वह चीज वादमे मैं नहीं लेता था । और भोजनके समय मौन रखने का मेरा नियम था ही । अिस मौनके कारण ही मैंने अेक-परोसका नियम चलाया था । ये मेरे दोनो नियम वरसो तक चले । अिन नियमो के कारण आश्रमवासियोके बीच मेरी अिज्जत बहुत कुछ वढी । खासकर अिसलिये कि आश्रममे दाखिल होनेके पहले ही ये नियम मैंने लिये थे । श्री पूजाभाअी भी मेरी बहुत-कुछ कदर करने लगे थे ।

अेक दफे गाधीजीको अुत्तर भारतके अेक महीनेके प्रवासके लिये जाना था । अुन्होंने मुझे वडौदा लिखकर पूछा कि आश्रममे आकर रहोगे ? और वच्चोको पढाओगे ?

मैं जानता था कि आश्रममे वडी अुथल-पुथल हो रही है । श्री ठक्कर बाप्पाकी सिफारिशसे अेक हरिजन कुटुम्ब आश्रममे दाखिल हुआ था । दूधाभाअी, अुनकी पत्नी दानी वहन और छोटी लडकी लक्ष्मी तीनो आश्रममे आकर रहे । रसोअी बनानेमे दानी वहन मदद करने लगी । अिनके हाथका पकाया हुआ खानेको पू० कस्तूरवा तैयार नहीं थी । गाधीजीने कहा कि अैसी हालतमे आश्रम छोडना पडेगा । अुसके लिये भी ‘वा’ तैयार नहीं थी । गाधीजीके लडके ‘वा’ पर विगड गये, “वा, दक्षिण आफ्रिकामे तो हमारे घरपर अीसाअी, मुसलमान सब तरहके लोग रहते थे । अुनके साथ तो आप खाती-पीती ही थी । अब अेक हिन्दू हरिजन आश्रममे आया तो आपत्ति क्यो अुठाती है ?”

८४ आश्रम-गहिता

य तो परदेग था। भरता हम अपन काम है। विरागात्
गंगाके बाधम है। पत्नी मर अगा कम पतना ?

वा न पत्नी मृगपत्नी आदि गारर काम चलाया। बापूजी राज
बा क साथ दगीर करत रहे। गारा तिन आश्रमका काम करना कर्जगे
पानी निवाल्ना और लाना तारी चगाहर आटा पामना रमाओ बगानम
मरुत करना कपत्ताना अनाज माफ करना आदि काम तिन भर रत्त
ही थे। अिमक अगारा आय हुआ गारा म दानधीन करना विद्यायियाता
अपने जीवन मिद्वान्त समाना Imperial Citizenship Association
की सभाआक त्रिय थट क्लासम रातकी मुमाफिरी जहमदावात्म
दम्बजी और दम्बजीम अहमदावा महीनम कभी बार करना अिनन
मरुत परिश्रमके बाद रातकी सोनेक बजाय पू० वा के साथ अम्पूयता
निवारणकी चर्चा करते रहना बापूजीके लिय बची ही कसोटी था।
राज सिरम दद होन लगा तो भी बापूजीकी तपस्या पम न हुआ।

आश्रमका यह सारा वायुमण्डल मैं जानता था। मगनलाभाजीक
परिवारके लाग राजकोट चले गय। मगनलाभाजीको गाधीजीन बनने
का काम मीलने निखानेके लिये मद्रासम श्री चेट्टियारके पास भजा था
और जिम तरह बोटुम्बिक कता तो बहुत कुछ कम कर दिया।

असी हालतम जब गाधीजीकी ओरसे बलावा आया तब मैंने लिखा
कि मैं अकेला नहीं आजूगा। मरी पत्नी और दो बच्च भी साथ आयगे।
बापूजीको सतोप हुआ। जब और परिवार हरिजनके आनेसे आश्रम
छोड रह थे मैं आप्रहके साथ सहपरिवार आश्रमम जाकर रहना पसद
करता था। मेरा अक विद्यार्थी गिरधारी कृपलानी भी मेरे साथ गाधीजी
के आश्रमम रहने आया।

असा था अन त्तिनाका आश्रमी वायुमण्डल। आश्रम क्या चाज है

यह आजमानेके लिये तरह-तरहके लोग आश्रममे रहने आते थे और कुछ दिन रहकर चले जाते थे। आश्रममे आहार बहुत ही अच्छा, ताजा, स्वच्छ और पौष्टिक मिलता था। लेकिन अुसमे नमक, मसाला, घी या दूध नही होता था। इसलिये बहुतसे लोग परेगान होकर चले जाते थे। पेटके लिये पौष्टिक आहार मिले इससे भी जीभके लिये तीखा, खट्टा आदि स्वाद मिले यह मनुष्यकी—हमारे देशके लोगोकी—आवश्यकता अधिक थी यह देखकर बडा ही आश्चर्य होता था। आश्रममे स्त्री-पुरुष, बाल-बच्चे सब पवित्र वातावरणमे पूरी आजादीके साथ रह सकते थे। दो समयकी प्रार्थना, धर्मचर्चा, सत्पुरुषोका सहवास ये सब होते हुअे भी वहाँके परिश्रमी जीवनसे चन्द लोग डरते थे और चले जाते थे। परिश्रममे वर्तन माँजना, टट्टी साफ करना, कुअेमे पानी लाना, जमीन, दीवार, छत सब कुछ रोज-का-रोज साफ करना, दोगहरके समय साथ बैठकर अनाज साफ करना, सुबह अुठकर चक्की चलाना, टट्टीका मैला गाडनेके लिये खड्डे खोदना अँमे-अँसे घरेलू मामूली काम ही करने पडते थे। लेकिन सफेदपोग आरामतलब लोगोको यह मारा असह्य-सा मानूम होता था।

जो लोग मेहमान होकर दो-चार दिनके लिये आश्रममे आते थे अुनके लिये परिश्रम करनेका नियम नही था। थोडे लोग खुशीमे करते थे। वाकीके आश्रमवासियोकी सेवा लेकर अुनको धर्मात्मा कहनेमे ही आनन्द मानते थे। मेहमानोकी सेवा करना भारतीय सभ्यतामे और सस्कृतिमे बडा ही आनन्दका विषय है। अेक दिन अेक भाओी आश्रमसे जा रहे थे। वे स्वय अपनी लोहेकी टुक अुठा नही सकते थे। टांगा मिलना मुष्किल था। गाधीजीने मुझसे कहा, “काका, अिनकी टुक अुठाकर अेलीस ग्निज तक ले जाओ। वहाँ अिन्हे जरूर टांगा मिलेगा।” अँसे परिश्रम करना मेरे लिये कोओी नओी या कठिन बात नही थी। मैंने प्रसन्नतासे टुक अुठाओी। देखा तो बोझा ठीक-ठीक था। अिन्कार

करता न जा पाहा न वह वता भी था । दूक मिगणर ग्या अग्या ।
 याग सबकर पाठपर न ली और दाना हाथ बधक पाग मात्र दूककी
 कती पक्या । आधमम अग्या बिर बिराग नत्राक नग्या था ।
 वहाँ ना दूक पक्या । गद्भाग्य धरा हि कर्ष टािया मिग गया ।
 जिग भाआकी दूक थी वह नाभा अमार घरका जाग्मा नहा था ।
 मामूग मध्यमवगना हा आग्मा था । अिगण्य अग मुगम गवा नत्र
 गवात्र नती हुआ । अन त्तिना गग मुग पद्वानात भा नती थ । जब
 लीग तब देवा कि मर गग्वा पाठ याडी कग् गआ है और पाग्वा
 चमडी भा पाडी जुतर गजी है । मैं बमगीन और आयात्तिन ल्गाया ।
 चार-आठ त्तिम बमडा गक हो गओ । गाधाजागे कभा भा मैं अिगकी
 बात नही का । बम्पआम गाधाजान मुपे कओ बार सन पाकरसानम
 डाग्नका भजा है । और रोपहरकी गरमाम कभा-नभी नग पर भा
 गया ह ।

यह सब मैं पाठकारी सहानुभूति पानके लिय गती त्तिम ग्या = ।
 प्रारम्भक त्तिनाम आग्मका रायुमण्ण कमा था अिमारा ग्याग् आत्र
 कग्क नय गगारा सममानक त्तिम त्तिग रहा ह ।

जब हम गग जाग्मस म्गान जान थ तब टौगम न जान हुआ
 अपना जसबाब जठकर पदग ही तीन माग्का फासग तय करत थ ।
 त्तिम गाधाजी भी अपना नही थ । व म्वय अपना बिस्तरा पाग्पर
 और अपना भूगफगाका त्तिना हाधम तवर पदग हा चग्न व और
 समयक पाग्ग् अितन हि अनका मिमात भाग्तम नग्य मिगगी ।

अन दिन मैं गाधाजीक साथ बम्बओ जानेवाग्य था । मैं सोला या
 विराय पर लिय हुआ आग्मक ही नगदीकक दूसरे बगलम । छ बजे
 निरग्न का बात थी । जब म गाधाजीके कमरेम पहुँचा तब छ उजवर
 अक मिनट हुआ था । यान मैं अक मिनट देरी मे पहुँचा । गाधीजी बहा

नहीं थे। वरामदे पर जाकर देखा तो गाधीजी अपना सारा असबाब अुठाकर रास्ते पर चल रहे थे। दौडकर मैं अुनके पास पहुँच गया और मैंने पूछा, “आपने मेरी गह भी नहीं देखी ?”

“गह देखनेकी क्या जरूरत थी ? मैंने छ वजेका समय दिया था। तुम्हे देरी हुअी अिसलिये मैं भी देरी करूँ ?” मैं बडा गरमाया। (अेक मिनटकी देरी हुअी अिसलिये नहीं। देरी करना तो मेरा हमेशाका स्वधर्म है। किन्तु गाधीजीमे भोलेपनमे मवाल पूछा अिसलिये।)

आश्रम-स्मृति--२

गाधाजाको अत्तरकी मुसाफिरीना जाना था अमलिये भू हने अर महीनके लिसे आश्रममे मुग बुगया था । मै आ पहुँचा तब दक्षण आफिवासे आया हुआ अक तमा लहका बीमार था । असा पिताने अपने सारे लडके गाधीजीको अण किय थे । फरीरी अुनममे अक था । बहुत दिन तक बीमार रकर फरीरीका आश्रममे ही दहात हुआ । रातका समय था और मुबह गाधीजीको मुसाफिरीमे जाना था । मुबहकी प्राथना बड़ी गम्भार था । गाधाजीन चार गन क । अब मुन त्सना था कि आश्रम धमके अनुमार अत्यसस्वार गाधाजा किस तरह करने हैं ।

अक बडा चादर जमानार फला दा । अस पर स्नान कराओ हुआ फरीरी का देह रग दी । पाँच मोधे हाथ शरीरके माथ बगनम । फिर अक मजबूत बाबू शबकी छाती पर रख दिया सिरसे लकर पाँच तक । फिर वह चादर बाबूके साथ शरीरको लपेट दी गयी और अच्छी अक मजबूत

१. अिस विषयमे गाधाजान अिस प्रकार लिखा है—

‘फरीरीको गुरु आश्रमके योग्य नहीं गिना जा सकता । आश्रम गया ही था । आश्रमके सरकारोंने फरीरी पर अपना अमर नहीं डाला था । फिर भी फरीरी बहादुर बालक था । मेरी शिकायत अिमलिये है कि वह अपने पूरे स्वभाव का भाग बन गया । अमकी मौत मेरी परीक्षा थी । मुझे याद है कि अरित्री दिन की सारा रात मैं अमके पास बैठा था । और सुबह मुझ गुरुकुल जानेके लिसे गाने पकड़ती थी । अर्धको छोड़कर कलेजा पथर करके मैने स्टेशनका रास्ता लिया । फरीरीन बापने फरीरीको और अमके तीन भात्रियोंको यह समाभार मरे सुपुन किया था कि मैं फरारा और दूसरोंके बीच कोसी भेदभाव नहीं करूँगा । फरीरी गया और अमके तीन भात्रियोंको भी मैं छो बैठा ।

रस्सीसे चादरमे लपेटा हुआ शरीर वावूके साथ सिरसे लेकर पाँव तक मजबूतीसे बाँधा गया। शरीरको श्मशान तक ले जानेके भिन्नधर्मी रिवाज और भिन्न प्रान्तके रिवाज भी मैंने देखे हैं। गाधीजीकी पद्धति मुझे सबसे सादा, सस्ती और वैज्ञानिक लगी। मैंने सुना था कि बनारसमे जहाँ मकान अँचे किन्तु सँकरे होते हैं, सीढियाँ बहुत सीधी होती हैं, गलियाँ भी सँकरी होती हैं, वहाँ शव ले जानेका यही अेक तरीका कारगर है। जिसमे शव अुठानेवाले दो हों, चार हों या ज्यादा हों अेक ही कतारमे अेकके पीछे अेक होकर चलते हैं। सीधी सीढी अुतरनेमे भी आसानी होती है।

हम आश्रमवासियोने फकीरीकी अर्थी अुठाओी। रामदास गाधीने भी अपना कन्धा देना चाहा। मैंने अुन्हे मना किया। गाधीजीने कारण पूछा। मैंने कहा, “हमारा रिवाज है कि जिसके पिता जीवित हैं अुसे किसीकी अर्थी नही अुठानी चाहिये। पहला कन्धा पिताजीको ही देना चाहिये।” गाधीजीके लिये यह बात नओी थी। आश्चर्यसे अुन्होने सुन लिया और कहने लगे कि ‘जिस नियमके पीछे भावना है। लेकिन हमेशा के लिये अँसा नियम नही हो सकता।’

श्मशानभूमि तक आनेका गाधीजीके पास समय नही था। अुन्हे मुसाफिरीके लिये स्टेशन पर जाना था। फकीरीको आधे रास्ते पहुँचाकर गाधीजी लौटे। हम लोग आगे गये।

जहाँ तक मुझे स्मरण है, मैं फकीरीके अग्निस्कार पूरे होने तक श्मशानभूमिमे नही रहा। मुझे कुछ जरूरी काम था। और बहुत लोग थे। फकीरीकी अन्तिम यात्रामे मैं अपना कन्धा दे सका यही मेरे लिये समाधान था।

जिसके बाद आश्रममे कओी मृत्यु हुओी है। ब्रजलालभाओीका कुओमे

गिरकर गृहात हुआ था। १० नारायणराव खरका द्वारा बसन्त वैद्यरामे गया। जिसमें साहब घर पर असी ही दो तीन मर्यु हुआ थी। मुद्द जिसमें साहब गावाजा गाल परिषदमें लौट चुसके अगल दिन चर बस थे। चाकी (मरा पत्नी) का गृहात भा आ मम ही हुआ। जब चतुर भाजी नामक आश्रमके मवक जब गय तब बडाकी गलताम छाने छोट बच्चाका भा इमगातभमि तत्र न जान दिया था। अुसका असर हमार बाट पर बहुत परा हुआ। बहुत त्रिा तक वह बीमार रहा और बात चानम रह बनान हाता था। जा मक प्रधान व्यवस्थापक श्री मगनरा भाजीका गृहात बिहारम हुआ था। मुद्दूर फाजीम आय इय तोनाराम मताश्रमजीकी पत्नी गगादयीजीका गृहात भा जाश्रमम ही हुआ था। जिसक अगावा गोता और मघजी अिन रा गाकाक नाम गाघाजान त्रिय है।

मैं मानता हू कि ब्रजराश्रमभाजीके गारेम यनी कुत्र त्रिचना अिष्ट है। ब्रजराश्रमभाओ आ मके प्रारम्भम थ। कम बाग्नवाले बर कम योगी। बन्त बरमा तत्र अगान नमन खाना छात्र दिया था। उनका कन्ता था कि मनी कारण था कि त्रिउ काटन पर भा अुनका जहर नही चरता। कही बिच्छको दला ना अमे हाथम अगाकर दूर एव आन थे। मार जाधमकी रमाश्री अकेन करन थ। उनका कभी किमीक साथ चमन हुआ मैन रमा था मुता नही। जम बज्जकाय मडु मरभाव ब्रजराश्रमभाओ भी मरा कान करन थक गय और जाकिरी त्रिनिमि पीमार रहन थ।

अक त्रिि आश्रमम नय आय हूअ दा चार गण मर पाम कुछ गिरावन करन आय। कहन रग आश्रमक व्यवस्थापकमि बातचीत करनही हमारी त्रििमन नही हाता। आपम बाग्न रर नहा रगना। प्रण मव-कुछ गान्निम और सहानुभूतिय मुन लन है। अिनता प्रम्नावना मननक बा मैं नयार हा रमा कि काआ मम्भोर गिरायन है। अज्ञान कण कि आश्रमम हर काआ आश्रमी पुगना हा था नया हा था यहाँ

ग्रन्थत्रयी

गीता, योगसूत्र और मनुस्मृति

आधमक प्रारम्भके लिये नाम जय प्रायनाक वाद मु। प्रवचन करने पत्त ध तत्र धमक वारेम जीर असवे माहित्यके वारेम में बुद्ध-न-बुद्ध बहू असा जात्रमगमियाकी अपेक्षा रन्ती थी। अत्र दफ मैन रामा यण महाभारत जीर भागवतके वारम क्या। अठारह पुराण और अठारह उपपुराण ता १००० तकिन रामायण महाभारत और भागवत— अिस त्रयीका मन्त्र भारतीय मस्तिष्क लिये जसाधारण है यह मैन समगाया।

दूसरा क्या भारतक जयाय सम्प्रदायाक वारेम कहत मैन पचायतन पूजाका मन्त्र समगाया। त्रिन तब भारत और बणव जिन तीन सम्प्रदायाका विषय मन्त्र समगात मैन क्या कि अिय जयागता त्रयात भारतक हृदय पर अपना क्या समाया है।

गव विद्यापिदान पूजा कि हमार प्रधान धमधय कीता ? तत्र मैन प्रथम ऋत वज्रम् जीर नाम असा धर्मवाका मन्त्र समगाकर क्या कि यत् ता त्मात् धनरा बनिया है त्रिन जात्र धमका मारा रण्य त्रिय १० धरनाम पत्रा जना है व ३— रामभगवत्गीता मनुस्मृति और वातवत् धर्मदान। गानाम हमारा मारा तत्रपान याना दानरा निवत्ता ता भा १० जाता है। त्रिन गानारा मरा यह है कि अमम अिय मारमीन मन्त्रपानरा वातनम जनारारा क्या बनाया है। मन्त्राका मन्त्र समगात म् अयनिय म् सुमत्र जीर गाना जिन

मैंने यह भा कहा कि महात्मा मुगारामजीन (बादम शु हाने मयास लकर श्रदान-दरा नाम धारण किया) जब वेमनुकूला मनुस्मृति बनाओ है और महाराष्ट्रन श्री विनामणराव वचन भा मनुस्मृतिक चर "आव पस" करक प्रवागित किय हैं । गाधाजीन कहा कि अगर अिन सप्रहाम हमार आश्रम धमरी मब बात आओ हा ता कृद्य करनेवा बाकी नहा रहता । नही ता अब अपना सप्रह तमार करना हागा ।

यह बात बसा ही रह गया ।

असक बाद कारवारक श्री नाडकर्णीन अब आदोलन अठाया । जुनकी सूचना थी कि महात्माजी मावीयजी भगवानदासजी गकरा चायके चार पीठके अधिपति—असे अम पचास-साठ लागाके अकत्र करके अुनके द्वारा अब न-नी स्मृति तमार करवाओ जाय जो आजकी समस्त हिन्दू जातिके अुपयोगी हो और माय भी हा । गाधीजीने तुरन्त जवाब दिया कि मैं अपनेको अिस योग्य नहीं समनता जिसलिय आपकी याजनाना गरीक नहीं हा सकता ।

अिस मिलमिलेम जब मैंने महात्माजीम बातचीत की मत्र अहोने कहा कि आज सममाय हा सक जसी स्मृति बनाना मुक्कि-उ तो है ही । लकिन अिस तजीस हिन्दू समाजम परिवतन हा रहा है और अय धर्मावलम्बियाक साय अिम तरह हमारा सहयाग बर रहा है अुस दसत आज हिन्दू समाजका किसी भी स्मृतिम बांध देना गायद अचित नहीं हागा ।

गाधाजीक आश्रमकी बात जलग थी । हम लग सब धम-समभावम माउउवाल सब धमके लोगका आश्रमम अब विगाल कुटम्ब बनाकर बठ व । और आयात्मिक जीवनका प्रयोग करते हुअे समय-समयपर जावनम परिवतन करनेके अिअ भी तयार थ ।

जब गाधीजीने सन् १९३३ में सत्याग्रह आश्रमका विसर्जन किया और वे वर्धा रहने चले गये तब सेवाग्राम आश्रममे अन्होने अेक विवाह-विधि तैयार कर दी जो किसी भी धर्मके लोगोके लिये काम आ सकती है। अुस विधिके अनुसार सेवाग्राममे जो प्रथम विवाह हुआ अुसका पौरोहित्य श्री प्रभाकरजीने किया था, जिनके माता-पिता हरिजन आसाधी थे।

आश्रमकी प्रार्थनामें सनातनी, जैन, बौद्ध, पारसी, मुसलमान, आसाधी आदि सब धर्मोकी और पन्थोकी प्रार्थनाअे अिकट्टी हुअी है। और आश्रम जीवन सबके लिये अनुकूल बनाया गया है और अुसमे सबके पाससे अुदारताकी अपेक्षा रखी गअी है।

सावरमती आश्रमकी जमीन

‘जब तक अफजोका राज है, सेतीका सवाल खुठाकर हम ज्यांग चुद्य कर नही सक्ने अिसल्लिअ सेतीके वाग जो दूसरा महत्वका सवाल है, वह है वस्त्रका अमीको हम हाथम लना है। यह थी गाधीजीकी दृष्टि।

अिसल्लिअ अुहान आश्रमकी स्थापनाके साथ वही सवाल हाथमे लिया और अुसाका सबसे अधिक प्राधाय दिया।

भारतके अनेक प्राताम घूमनेके बाद और अनेक प्रातासे आय हुआ आग्रह और आत्पर भरे जागणनाका विचार कर गाधीजीन अपना आश्रम अहमदाबादमे तालनेका निश्चय किया क्याकि सारे भारतमें वस्त्र-अुद्योगका महत्वका केन्द्र अहमदाबाद ही था। गुरु गुरुम अनका विश्वास नही था कि हाथम सूत कातनका विद्याका पुनरुद्धार हो सकेगा। अिसल्लिअ हाथबुनाओम ही प्रारम्भ करनका अहान सोचा था। अहमदाबादके स्वामी मिलवानाम अच्छा और सस्ता सूत मिल जायगा अमी जुनकी थडा था।

गुरुम वाचरवके पाम बरिण्टर जावणगएक बगनमे जाश्रमना प्रारम्भ हुआ। तउ वगए विद्या’ (जुनकी वग) सोयनक लिअ गाधीजीन था सगनल्लिअओ गाधाकी मददक था त्यागराय चट्टान पाग भजा। मानगएनाअि अम विद्यामे प्रवाण हाकर गैंगे तउ तक चकार बटना टाक नहा असा साचरर गाधाजी वस्त्रविद्याका अतिम वना—वगडे मौनका काम ल बउ। आश्रमके प्राथमिक कामाम विनना

भी समय निकाल सकते थे, अुसमे वे कपडे सीनेको बैठ जाते थे । अिस काममे अुनके साथी और शिष्य छोटे देवदास थे । अिन दोनोको मुअी-वागा लेकर नित्य घण्टो तक कपडे सीने मैने देखा है ।

[यही पर दूसरा अेक अनुभव लिखूँ, जो बहुत वादका है । आश्रमकी स्थापना सन् १९१५ के मध्यमे हुआ और जो वात में यहाँ लिखनेवाला हूँ सन् १९३० के मध्यकी है ।

वम्बअी सरकारने मुअे सावरमती जेलमे हटाकर गाधीजीके साथ रहनेके लिये यरवदा जेल भेजा था । जब मैं वहाँ पहुँचा तब गाधीजी यरवदा जेलमे मामूली कदियोंके कपडे सीनेका काम करते थे । पूना की लेडी ठाकरसीके घरमेसे अेक सीनेका सचा मँगवाकर गाधीजी कदियोंकी अर्धचन्द्राकार टोपियाँ सी देते थे । वहाँ जाते ही अिस काम मे मैं अुनका साथी और शिष्य बना और थोडे ही दिनोमे वह सारा काम मैंने अपने हाथमे ले लिया और गाधीजी चरखे पर और तकली पर सूत कातनेके अपने प्रयोगमे पूरा समय देने लगे ।

वस्त्रविद्या भारतका सवमे बडा राष्ट्रीय गृह-अुद्योग है और भारतीय सस्कृतिका आधार भी अिसी विद्याके विकास पर निर्भर है यह गाधीजीका दृढ विस्वास था । अिसलिये कपडे सीनेके काममे भी अुनको पूरी दिलचस्पी थी ।

थोडी अपनी वात यही पर लिखूँ । जेलमे रहते सावरमतीमे मैंने बेतकी कुरसियाँ, पुष्पकरंडक आदि बनानेमे काफी प्रवीणता हासिल की । गाधीजीके साथ रहते और अुसके वाद सिन्ध हैदरावाद जेलमे कपडे सीनेके कामका कौशल्य बुद्धिगत और हस्तगत किया । दूसरे हस्तोद्योगोंके बारेमे अने अनुभव लिखनेका यह स्थान नहीं है ।]

जब गाधीजीने वस्त्रविद्याका ख्याल रखकर आश्रमकी स्थापना

अहमदाबाद की तब मरी मूचना कुछ अलग थी। मरा आग्रह था कि बम्बई और अहमदाबाद बीच मूरत या नवसारीक आगमन आरम्भ खालना चाहिये। मरी दलील य थी—(१) बम्बई और अहमदाबाद दोनों आधुनिक मसृतिव शहर हैं। अगम भारतीय हृत्पगति पूरी तरहम प्रवृत्त नहीं जाता। (२) दानाके बाध रहनेम शना गन्गारा नाम अछा सनगे। (बम्बई भा बम्बयुशोगना मन्त्वना कन्द्र है।) और मूरत नवसारीकी ओर रहतर बम्बई और अहमदाबाद शोना गहरा पर हम प्रभाव डाल सकन। (३) मूरत-नयमारानी ओर शकी की खती अच्छी हाती है। वस्त्र-अुशोगकी दृष्टिम अिस मानका भी महत्व अतिक है। (४) स्वराजका नाम विमान और जुगहा शोनाके सम्बन्ध ही अच्छी तरहम पतप सकगा। (५) मेरी पाचवी दलील केवल भावनामूलक थी। अग्रजाने अपना पहली कोठी तापी नदीके किनारे मूरतम स्थापित की थी। स्वराजके आन्दोलनके लिये स्थापित आधमका प्रारम्भ भा मूरतम हो अिसम अतिहासिक जीवित्य है।

जसी जमी अनेक दलील मैंने पेग का। लकिन गांधीजीने आरम्भ की स्थापनाके लिये अहमदाबाद हा पसन्द किया।

मुझ जितना ही सन्तोष रहा कि गांधीजीका सबमे बडा सत्याग्रही आन्दोलन मूरत जितम ही हुआ और बारडोलीके सत्याग्रहके कारण निराश भारतम अक नया चतय पदा हुआ। सरकार बल्लभभाजीने बारडोलीका आधम ही जनन लिये पसन्द किया और आग जाकर सानी विद्याका भी बारडोली जेक अच्छा केन्द्र बन गया।

सत्याग्रहानमका प्रारम्भ ता कोचरबमे किरामे पर लिये हुआ जो बगलोम हुआ। [जाज स्वराज होनेके बाद बम्बई सरकारने अम बगलको खरीन्कर वहाँ अेक मुन्दर आरम्भ चलाया है जिम भी अम गांधी स्मारक कह सकने हैं।]

आश्रमके लिये अपनी निजी जमीन और अपने निजी मकान आवश्यक थे ही। अनेक स्थान सोचे गये। अन्तमेंसे आखिरकार सावरमती के किनारेकी जमीन पसन्द की गयी। यह स्थान देखनेके लिये जिस दिन हम गये वह मुझे बराबर याद है। स्वयं गाधीजी, अन्तके परम मित्र, रगूनके जीहरी डॉ० प्राणजीवन मेहता, रणोलीके प्रख्यात कृषि-विपारद और मेरे मित्र श्री नाथाभाजी पटेल और मैं अैसे हम चार घोड़ागाडीमें बैठकर जगह देखने गये। जगहमें आकर्षक कुछ नहीं था। लेकिन नदीका दृश्य बहुत सुन्दर था। अेक वाजू पर छोटीसी चन्द्रभागा नदी सावरमतीमें मिलती थी और सगम पर अिस ओर दुधेश्वर महादेवका मन्दिर और अुस ओर श्मशान था। श्मशानसे नजदीक अहमदावादके लिये पानीका प्रवन्ध करनेवाला पावरहाअुस था। अुत्तरमें सावरमतीका रेलवे पुल था और अेक वाजू सरकारी सेन्ट्रल जेल। स्थान हम सबको पसन्द आया। गाधीजीने नाथाभाजीमें पूछा, 'नाथाभाजी आप जमीनके माहिर हैं। कहिये अिम जमीनमें क्या-क्या हो सकेगा ?'

नाथाभाजी ठहरे 'आखावोला', (साफ-साफ बोलनेवाले)। अेक शब्दमें अुन्होंने जवाब दिया 'बबूल !'

मैं हँस पडा। गाधीजी और डॉ० मेहता अेक-दूसरेकी ओर देखने लगे। नाथाभाजीने तुरन्त कहा, 'आप क्यों मानते हैं कि बबूलकी आम-दनी नगण्य है ? असली बात यह है कि जमीनका कोअी महत्त्व नहीं। खेड, खातर (खाद) और पानी तीनोंका प्रवन्ध अच्छा हुआ तो चाहे जैसी जमीनमेंसे हम किमान अच्छी आमदनी कर सकते हैं।'

यह सुनते ही मुझे अमेरिकाके प्रख्यात नीग्रो वैज्ञानिक कार्व्हरका स्मरण हुआ। वे भी हमारे नाथाभाजीके मतके ही थे।

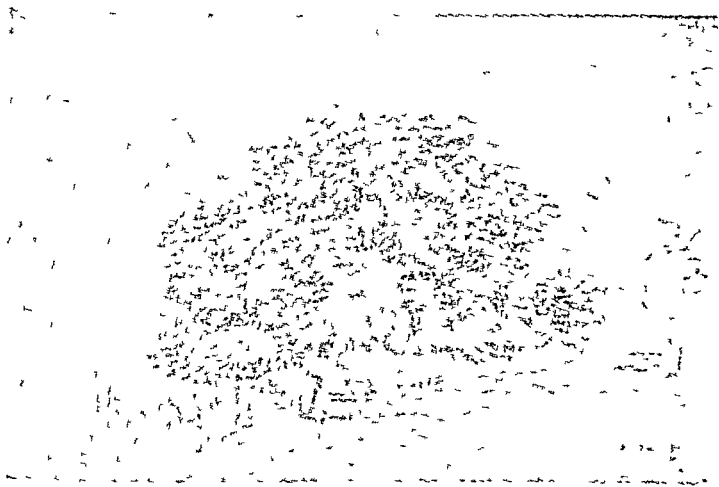
[यही पर कहना अुचित होगा कि बम्बयी अिलाकेमें नाथाभाजी

की प्रतिष्ठा असाधारण था। जिस गमानम गती हो नहा सस्ता थी तमाकूके लिंभे भा जो जमीन अच्छी नहा थी उसे स्थान पर कल्मी दरक प्रयोग करके नायाभाभीन पसठ हज़ारका पुताफा किया था। सरकारी कृषि विभागके अध्यापक और विद्यार्थी भी बड़ीगके पास रणानी जाकर नायाभाभीकी कृषि-बढ़तिका अध्ययन करते आय हैं।]

जमीनवाहन मन्दिरके नजदीककी थोड़ी जमीन अपने लिंभे रखकर बाकीकी हम बच डाली। मरा आग्रह था कि कुछ ज्यादा दाम देकर भा सारी पूगी जमीन हम लेनी चाहिये। मैंने यह भी सुझाया कि जास पास जितनी भी जमीन मिल सके लेनी चाहिये। मैंने कहा 'आश्रम खूब बन्गा ही। आज जिस जमीनकी कीमती नहीं है। जब आश्रमकी स्थापना होगी तब हमारे कारण ही जासपासकी जमीनकी कीमत बढ़ेगी और फिर दसगुना दाम देकर हम वह खरीदनी पड़ेगी। जमीनकी कीमत बढ़ायगे हम और अमुका सजा हमको भुगतनी पड़ेगी। मेरी बात गाधीजीके सिद्धांतम नहीं बरती थी। तबिन हुआ यसा ही जसा मैंने कहा था।

अधर आश्रमके लिंभे जमीन सरादा गभी जोर अग्र अहमत्वावाद म जिन्यूजेजा शुरू हुआ। जोर हम लोगको कोचख छोडना पडा।

श्री जम्यालाल साराभाभीक बहारा हमने एक बडा तम्बू एक गामियाना और कभी रावटियां मगवायी। अमत्वाधका मात्राम छाटी छाटी रावटिया खडा करनका मुझ अनुभव था अिसलिंभे तम्बू जादि खड करनका काम मैंने हा अपने हाथमे ले लिया और अनर ल्पेगाको अस काममे तयार किया। बादमे हम लोगाने बासकी खटाओकी शोष टिया तयार की। जितना पतन्ग पारदर्शक कि वारिण तो क्या धूप को भी बाहर नहीं रख सकती थी। श्री त्रिभोरलालभाभी नरहरिभाभी, भाकळचन्ग गह भूपतभाभी पापन्गलभाभी जादि हम कभी लाग



सर्वसाक्षी त्रिमली

आश्रमकी शाला चलाते थे । सावरमती नदी और सरकारी रास्ता—जिन दोनोंके बीचका भाग आश्रमकी प्रवृत्तिके लिये था । और सरकारी रास्तेके पश्चिमका भाग राष्ट्रीय शालाके लिये था ।

नदीके किनारे, आश्रमकी भूमि पर, रेतीवाली जगहमे सुवह-शामकी प्रार्थना होती थी । आश्रमका वह हृदय था । उस स्थान पर गाधीजीने कभी प्रवचन दिये जिसमे आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, ब्रह्मचर्य विषयक, वच्चोकी स्वच्छताके बारेमे बगैरा अनेक प्रवचन होते थे ।

प्रवाससे लौटनेपर गाधीजी अपने मुसाफिरोके अनुभव भी कहते थे । कभी-कभी जिन अच्छे लोगोंका परिचय होता था उनके भी गाधीजी देते थे और जन्तमूर्त होकर अपने और आश्रम

गुणदोष भी बतलत थे। अतः त्रिणा प्रवचन चरणेवागम थी वितोरा भाव और मैं भीता पर कुछ-न-कुछ बहत थे। श्री मगलनाम्भाओ गाधी आश्रम-व्यवस्थासे सम्बन्ध रखनबाग्ये मूचनान भी बहत थे और राज किसने कितना मूत वाता अमका त्रिमाब भा वनाया जाना था।

आश्रम तयार नानक राज गुरगले टां० प्राणजीवन मत्ताने आश्रमके नजदीक धाना जमान खरीदकर अपने त्रिभे अके बगान बनवाया, जिसे खाल बगला बहत थे। बादम वह आश्रमका ही द त्रिया गया। असीके मामन अपन त्रिअ थोडा जमीन खरीदी थी आश्रमी अर्वातना बाओ गाखत और अनक पति था बवन गाखतन। यह जमीन भी आखिरकार वा तमका ही मिली।

श्री गिरजागकर जोगा अहमलादाक निष्टमाय ज्यातिपी ५। मिलमार्तिकाके साथ जुतवा अच्छा सम्बन्ध रहता था। त्रिहान थोटी जमीन खरीदकर वहा पर छोटासा ज्यातिभवन बनवाया जिम आप जाकर आश्रमने खरीद लिया।

असक अलावा जल्के नजदीक आश्रमन १२० अककी नदी जमीन खरीद ली थी। अम जमीन पर अक पुराना मदान भी था।

आहारके प्रयोग

गाधीजीने जब अहमदावादके पास दो बगले किराये पर लेकर वाडजके नजदीक आश्रम शुरू किया तब अुनके मन पर जैन साधनाका काफी असर था । अथवा यह कहना अधिक सही होगा कि अुनकी साधनाका ढग असा था कि जनोका अुनके प्रति अधिक आकर्षण रहता था ।

शाकाहारका गाधीजीका आदर्ग पश्चिमके शाकाहारियोसे काफी मिलता-जुलता था । दूध और दूधसे बननेवाले पदार्थोका सेवन करना अुनके शाकाहारके विरुद्ध था । सूखा कोपरा (नारियल) कूटकर अममे पानी मिलाकर जो अेक तरहका दूध बनता था वह अैसे लोगोको दिया जाता, जिनकी दूधकी आदत छूटी नहीं थी । जो लोग मिर्चके आग्रही थे अुन्हे मूलीकी फली-मोगरी दी जाती थी । मोगरी कुछ तीखी होते हुअे भी लाल या हरी मिर्चके दोष अुसमे नहीं थे ।

अुन दिनो मै खाते समय मौन रखता था । गाधीजी अैसे मयमकी काफी कदर करते थे । गाधीजीने पूछा, “कितने दिनके लिअे यह व्रत लिया है ?” मैने कहा, “अैसा कोअी नियम नहीं है । जब जी चाहे, छोड सकता हूँ ।” गाधीजीने पूछा, “अेक साल तो कममे-कम निभाओगे न ?” मैने कहा, “वैसा भी नहीं ।”

“तो रोज सुबह २४ घण्टेका व्रत लेते हो ?”

“अैसा भी नहीं । जी चाहें तब छोड सकता हूँ ।” मेरे जवाबमे

गाधीजीको सत्ताप नहीं हुआ। अन्होंने पूछा मोनरा नियम और अब ही दफे परोस लनका नियम कितने दिन चला है ?

मैंने कहा दो-तान साग्न चला हांगा। और वसा ही कोजी महत्वका कारण न दोर पड तो वरसा तक चलानवाला हू।

और सचमुच यह नियम बरसा तज चग। और जब छोडा तज विचारपूवक ही छोडा। अमुका कारण भा महीं देना अनुचिन नहीं हागा।

आश्रमम मेरा सारा समय आश्रमागिक विद्यार्थियाका पगनम जाता था। बाकीका समय शिक्षकनि और बाहरसे आये हुअे लोगोसे विचार विनिमय और चर्चा करनेम जाता था। घरकी घान अगर कुछ बरनी हो तो नहाते समय ही पत्नीस कुछ कर सकता था। जयथा अुसे भी समय मिलना मुशिरल था। अपन दोना लडकोसे बात चीत हो ही नहीं सक्ती थी। अब दिन न्यालम गया कि यह जयाय है। भोजनके समय हम साथ बठकर खात है। लकिन अुस वक्त मेरा मौन रहता था। न टुक मुझसे बातचीत करते थे न मैं उनगे कुछ पूछ सकता था। भोजनका समय बौद्धिक वायुमण्डलका प्रसन्नता का विचार विनिमयका कुछ आमाद प्रमोदका हांना चाहिय। अुसकी जगह वह अब तरहम गूय सा अदामीन-सा रहता था। स्त्रा पुत्र तो असके आगे वा गय थ। घरम काजी मेहमान जाय तो अह यह अच्छा नहीं लगता था। लकिन तत्त्वनिष्ठको कौन समयावे ? आखिर कार जेव दिन मुअ हां विचार हुआ कि बच्चके साथ वार्तागप बरनेका यह समय जुहीको दना चाहिय।

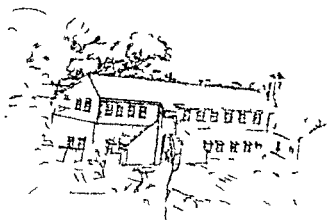
जेव दिन जब भाजनके गिय हम सब अितटा हुआ जोर अपने अपन आसन पर बठ गअे तज मैं अपना यह विचार सबके सामन प्रगट

किया। मुनते ही मेरा छोटा लडका आनन्दमे आकर कूद पडा। स्वावमें भी अुसने मोचा नहीं था कि अैसा कुछ हो सकेगा। मेरे मनमे आया कि कितने सात्विक आनन्दमे मैंने अिन वच्चोको वचित रखा था।

दूध नहीं लेनेका नियम सिर्फ आश्रमवासियोके लिये ही था। हम गालावालोंने असा नियम नहीं किया था। कुछ सालके बाद गाधीजीने देखा कि आश्रमके व्यवस्थापक श्री मगनलालभाजी दुवले होते जाते हैं। अुनके सिर पर काम तो बहुत था। दिन-पर-दिन बढ़ता भी था। जो कुछ भी प्रयोग गाधीजीको सूझा अुसे आजमानेका काम मगनलालभाजीका ही था। आखिरकार सब दृष्टिसे सोचकर गाधीजीने तय किया कि दूधके विना शाकाहारी लोगोका चलनेवाला नहीं है। जिस निष्ठासे और प्रसन्नता से दूधका त्याग करनेका प्रयोग आश्रमवासियोने चलाया था, अुतनी निष्ठासे अैसे प्रयोग करनेवाले दूसरे लोग मिलने मुश्किल थे। अिसलिअे अुन्होंने आश्रमवासियोको दूध लेनेकी अिजाजत दी। दूध न लेनेवाले वे स्वय अकेले ही रहे। दीर्घकाल तक अुन्होंने अपना यह नियम चलाया।

वादमे अुन्होंने अपने लिये भी दूध न लेनेका नियम कसे छोडा और फिर वकरीका ही दूध लेना क्यों शुरू किया यह सब गाधी साहित्य पढनेवालोको मालूम ही है।

अेक दिन गाधीजीने कहा कि “मनुष्य और जानवरोके लिअ वचपन मे माँका दूध कुदरतने दिया ही है। दूध वच्चोका आहार है। सारी अुम्र दूध लेते रहना कुदरतके नियमका भग है। लेकिन दूध लेकर ही मनुष्यके लिअे मासाहारका त्याग करना सम्भवित हुआ। अिसलिअे हमारे धर्मकार पूर्वजोने दूधको पवित्र-आहार बताया है और दूध देने वाली गायको पवित्र बनाकर अुसकी रक्षाका भार मनुष्य पर रखा। लेकिन दूधके विना चलाना मनुष्यके लिअे मुमकिन तो होना ही चाहिये। पृथ्वी पर जो कन्द, मूल, फल और पत्ते हे और धान्य हैं अुन पर प्रयोग करके भविष्यके



आहसक विमानवत कुछ-न कछ आहार टट निकालगे हा जा दूधकी
जगह पूरा-पूरा काम द सकेगा । भावन शाला

भारतके स्वराज्यका प्रधान सकल्प कर बठा हू अिस वास्त में
आहारका यह प्रयोग अिस वक्त छोड देता हू लकिन मैंन अपना थदा
खोअी नही है । दूधके स्थान पर वनस्पतिका कोअी आहार मनुष्यको
मिलना ही चाहिअ ।

जब गाधीजीन मुना कि अशियायी राष्ट्रोंम सोया नामके धान्यका
प्रचरन है और अुसके दूधस दही भा वन सस्ता है तब गाधीजीन
मायावास मगनाकर और असकी खेती भी करव बाफा प्रयाग करके
दस । मूगफलीका दूध भी निकालकर अुसक भा प्रयोग किय । लकिन
दूधका स्थान न सक जमा कोअा पत्थ हम जमा तक मिग नहा ।

नमक न खानेका प्रयोग गाधीजीने दक्षिण आफ्रिकासे चलाया था । आश्रममे जब रसोआी बनती था, तब अुसमे नमक नही डालते थे । नमकके विना जिन्हे नही चलता अुन्हे अूपरसे वह दिया जाता था । मैने भी गाधीजीके पास आनेके पहले नमक छोडकर देखा था । आश्रममे दाखिल होनेके वाद भी वह प्रयोग मैने किया था । जिस नतीजे पर मै पहुँचा था, अुसी पर गाधीजी भी पहुँचे कि—

जब तक मनुष्य फल, सूखा मेवा और पत्ते शाक आदि खाकर रहता है, तब तक नमकके विना मनुष्यका अच्छी तरहसे चल सकता है । किन्तु अनाजको ही मुख्य आहार बनाने पर मनुष्य नमकके विना नही चला सकेगा । मैने आगे जाकर असा अनुभव किया कि चावल और गेहूँके साथ नमक न मिलेगा तो चलेगा, लेकिन दाल खानेवालेको तो नमक लेना ही चाहिये । चावल गेहूँके साथ दूध लेनेसे वह पूर्ण आहार बनता है । दाल आदि केवल धान्य पचानेके लिये नमककी आवश्यकता है ही ।

मैने यह जो सूक्ष्म भेद निकाला है अुसके वैज्ञानिक प्रयोग करके देखना चाहिये । कुदरतमे अितना तो देखा गया है कि जानवर नमकके पत्थर चाटनेके लिये दूर-दूर तक दौडते जाते है । और दूसरी कोआी नमकीन चीज नही मिली तो अेक-दूसरेका पसीना भी चाटते है । अिस परसे चन्द लोग अनुमान निकालते है कि नमक आदि क्षार मनुष्यके आहारका अेक आवश्यक अंग है ।

आश्रममे मसालोका त्याग यह भी अेक आग्रहका विषय था । शाक, फल आदि मे जो कुदरती क्षार मिलते है वही काफी है, अूपरसे मसाला लेना केवल स्वादका ही पोषण है, आरोग्यके लिये मसालेकी आवश्यकता नही है । मसाला खानेसे आहारमे सयम नही रहता, यह था आश्रमका मूलभूत सिद्धान्त । गुरु-गुरुमे अुसका पालन हम सब लोग बडी ही कडाओसे करते थे । वादमे बहुतेके व्यक्तिगत रसोआीघरमे मसालेने

प्रवेश किया। आश्रमकी सामुदायिक रमाजाम जाखिर तब मसाला वज्य हा रहा।

अिम पकरणको पूरा करनेके पहले जेक छोटासा किस्सा दना चाहिये।

जब हम साबरमतीम थे तब जेक दफ दंगम जवाल पडा। आश्रम वासियाका आवश्यक गाकका मिलना मुश्किल हुआ। शाक-सजाक अभावम स्व स्थय संभालना कुछ मुश्किल हुआ। तब गाधीजान कहा कि, 'दूर दूरसे जीर हडसे ज्यादा धन खच करके गाक-सजाकी मगवाना आश्रमके लिय याग्य नहीं है। हम गरीबाक और पक्षीराके प्रतिनिधि हैं। हमारा आहार सस्ता ही होता चाहिये। जिमलिय हालाकि म मसालेके सेवनका विरोधी हू आप लोगका शाककी जगह अचार खान की अिजाजत देता हू।

अकालके दिनोम सब आश्रमवासियान अिस अिजाजतस लाभ अुठाया। बादम अकाल दूर हाने पर गाक सजाकी (फल और पत्त) मिलना आसान हुआ तब भी अचार जो आश्रम जाहारम जाया सा आया। अुसका वहिष्कार फिरम किसीन नहीं किया।

मुझ कहना चाहिय कि गाधीजाके आहारके सब प्रयोग हम आश्रम-वासा पूरी निष्ठास करते थे। महादेवभाजी दिल्लीगामे हम लोगका 'The tribe of vow takers' कहने थे।

(मैन अुनके अिन अग्रजी गंगाका अनुवाद किया था—अन्-विश्रामियाही जमान।)

तबिन आग जाकर महादेवभाजी म्यय ले-जान खनाम पेश गय। अिनम तान या चार दफ हा गाना जमा कुछ नियम करनके बाद व

वीचमे कुछ खाते नही थे । अितना ही नहा किन्तु सौफ या अिलायची भी मुँहमे नही डालते थे । आहारके प्रयोग करनेका स्वतन्त्र अुत्साह गाधीजी का, विनोबाजीका और कुछ हद तक मेरा रहा । वाकीके सब आश्रम-वासी हमारे प्रयोगोमे निष्ठासे शामिल होते थे । किन्तु नही कोअी चीज शुरू नही करते थे । अितना ही नही, चन्द आश्रमवासी हम तीनोंके प्रति कुछ डरसा रखते थे कि पता नही कि अिन लोगोकी खोपडी पर नही क्या धुन सवार होगी ?

आश्रममे खेती और दुग्धालय

आश्रमका स्थापनाके साथ खेताका सबाल अठ्ठा । आश्रमके व्यवस्थापक श्री मगनलालभाजी गाधी खेतीके बडे पशपाती थे । जिसे खेती प्रिय है उसे पशुपालन भी प्रिय होता ही है । मगनलालभाजीने आश्रममे दुग्धालय खोलनका भी सोचा ।

गाधीजीके मनमे अिस बारेमे अुत्साह नहीं था । वे कहत थे कि, “जत्र तक स्वराज्य मित्रा नहीं है भाराकी सब जमीन जीर सब मवान अग्रजाक ही है । स्वराज्य प्राप्तिके लिये और राष्ट्र निर्माणके लिये वस्त्र विद्यानी जसी आवश्यकता है वसी खेतीकी नहीं । अग्रजोने हमारी वस्त्रविद्याका नाग किया । जुत्राहे बकार हुत्र । यह सारा जुद्योग वे हिन्दुस्तानस विलापत लत गय । खेतीके बारेमे असा नहीं है । यहाँकी जमीन हमेगा यही रहगी । हमारे किसान अपनी विद्यामे प्रवीण हैं । स्वराज्य पानकी कोशिशामे मनीको स्थान नहीं है ।

अस मर विचार हात हुअे भां खेतीको जीर दुग्धालयको आश्रम मे मीने स्थान दिया है । कयाकि मी मगनलालके अत्साहकी वत्तर वरता हूँ । अुमका सतोष भां आश्रमके लिये जरूरी तत्त्व है ।

अिस तरह आश्रममे खेती गुरू हुआ । दुग्धालय भी गुरू हुआ ।

मीने यहाँ गागागा न कहत अ दुग्धालय कहा है । कयाकि प्रारम्भ मीने आश्रममे गावों और भमें दाना रखी जाना थी । जीर हम वनाश्रमवामा भमका हा दूध पनत करत थे अिसलिये कि भमक दूधमे

मक्खन ज्यादा आता है ।

मेरी पत्नीने यहाँ तक देख लिया कि आश्रमकी भैंसोमे अक कुछ कम काली थी, अुसके दूधमेसे ज्यादा मक्खन निकलता है । असी भैंस का दूध हमे मिले यह काकीका आग्रह रहता था । श्री मगनलालभाभी भी काकीको अिस वारेमे सतुष्ट करने थे । अिसका अक कारण था ।

आश्रम-शालाके हम शिक्षकगण पूरे आश्रमवास, नही गिने जाते थे । हम लोग अपने खर्चके लिये थोडीसी तनखाह लेते थे । और ब्रह्मचर्य आदि आश्रमके कुछ नियमोमे हम वरी थे । अब शालाके शिक्षक पैसे वचानेके लिये दोहरी नीति चलाते थे । बाहरका दूध सस्ता मिला तो बाहरसे ले लेते थे । और बाहरका दूध महंगा हो गया तो आश्रमके दुग्धालयसे लेते थे ।

फलत आश्रमके दुग्धालयकी ग्राहक-सख्या निश्चित नही थी । कभी-कभी आश्रमका दूध वच जानेमे अुसका खवा या मक्खन बनाना पडता था, अिसमे दुग्धालयको नुकसान होता था ।

मेरा अभिप्राय था कि जब आश्रममे हम लोगोकी सेवाके लिये दुग्धालय खोला है तब बाहरसे दूध ले ही क्यों ? दुग्धालय घरका है । हमारे आधार पर ही वह खोला गया है । अुसके प्रति अपना जा धर्म है अुसे भूलकर केवल थोडे पैसे वचानेके लिये हम बाहरसे दूध ले तो स्वदेशी धर्मका अुसमे भग है और सस्थाके प्रति अिसमे आत्मीयता भी कम है । जबसे आश्रममे दुग्धालय शुरू हुआ, मैने बाहरसे दूध कभी भी नही लिया । श्री मगनलालभाभीके मनमे मेरी अिस निष्ठाकी कदर थी । काकीने चुपचाप अिस कदरसे लाभ अुठानेका तय किया, और कम काली भैंसका दूध काकीको मिले अँसा मगनलालभाभीसे फतवा ले लिया ।

जब गाधीजीके ध्यानमे आया कि आश्रमके दुग्धालयमे गाय भी

है और भग भा है तब बुद्धा। दुःखान कहा कि भग ता गायत्री शत्रु है। हम गोरक्षा करना चाहते हैं। आधमम भगवा शत्रु करान आधम धमके विरुद्ध है। भक्त गभी और गायत्री शत्रुया बड़ गभी। और हमारे दुःखालयन दुःख गोगालाका रूप स लिया।

अब दिन हम सौराष्ट्र राजकीय परिषदके स्थित गाइल गय थे। (मुझ स्पष्ट यात्र नहीं कि यह स्थान गाइल ही था या मोरबी।) वहाँ के राजाने गांधीजीको अपनी गोगाला देखनेकी वितनी की। गांधीजी अस्ताहस गये। मैं भी अनुके साथ था। वहाँ हमन अब दो अत सौ देसे कि अगर हाथीकी और अनुका गुती होता तो शायद हाथी ही हार जाता। अतने पुष्ट और गुत्तर साह मैं अपनी जिन्गीम और कही नहीं देसे।

गोगाला देखनेके बाद गांधीजी राजासाहसे कहा कि हमारे

आश्रमकी गोशालाके लिये आप हमे अेक अच्छी-सी गाय दीजिये । मैंने मनमें कहा कि अपानपत्कालमें ऋषि याज्ञवल्क्य भी इसी तरह राजा जनकसे गाये माँगते होंगे । राजासाहवने कहा कि आप हमारी गोशाला आज ही देख आये हैं । जो गाय आपको पसन्द आवे आप ले लीजिये । मैंने आपको दे दी ।

गाधीजीने तनिक भी सकोच किये बिना गोशालामें जो सबसे अच्छी गाय थी वही माँग ली । मुझे यह अच्छा नहीं लगा । कितने प्रेमसे राजासाहवने इस गायको रखा था । रोज जाकर उसका दर्शन करते थे । स्वयं उसे खिलते थे । यह गाय तो क्या, राजासाहवके गोशालाकी वह नाक ही थी । मानो अिनका मुकुटमणि ही था । राजासाहवने प्रसन्नतासे गाय दे दी, और वह हमारी गोशालाकी शोभा बन गयी ।

मुझे दु षके साथ कहना पडता है कि आश्रममें उस गायकी अुतनी हिफाजत नहीं कर सके । राजासाहवकी गोशालामें उस गाय पर जो कान्ति था और उसकी जो शान थी वह आश्रममें नहीं रही । हालाँकि हमारे आश्रमकी गोशाला आदर्श गोशाला मानी जाती थी, और दूर-दूरके लोग उसे देखने आते थे ।

आगे चलकर जब आश्रमका संकोच किया गया तब आश्रमकी गोशाला देहातोमें भेजी गयी । लेकिन मेरा अुद्देश्य आश्रमकी गोशाला का अितिहास लिखनेका नहीं है । आश्रम-जीवनमें गोशालाका स्थान क्या था यही मुझे बताना है ।

*

*

*

सावरमती आश्रमसे बाजारकी चीजे लानेके लिये हमारे अिमामसाहवको अहमदाबाद जाना पडता था । काफी फासला था । असलिये अेक घोडा और अेक ताँगा रखनेका तय हुआ । आश्रमके अिमामसाहव

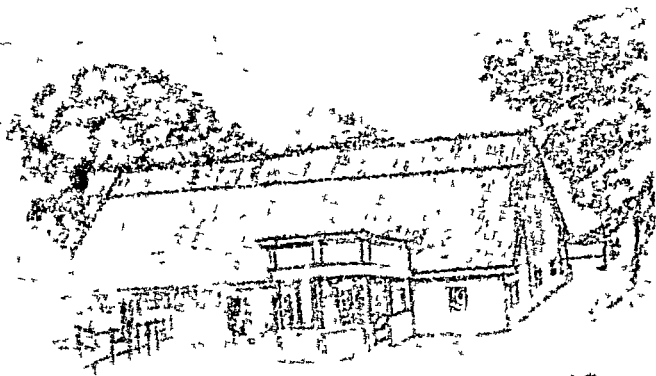
अहुल कादर बावजीर जब दक्षिण आश्रमम थे तब जुनका धंधा ही तागना था। कभी घाडे, तागे और नाकर रखवर अच्छी तिजारत करत थे। वहाके सत्याग्रहके दिनामें भुनका सारा धंधा बठ गया। वे अक्चिन हो गय। तब गाधीजीने अहु आश्रमम रहनके लिय बुलाया। हिन्दुस्तान जान पर व थोडे ही दिनाम अपन परिवारके साथ आश्रमम वायमके लिये आ वगे। यहा पर भा अेक तांगा और घोडा रखनको भिमामसाहबको मूग यह बिलकुल स्वाभाविक ही था।

दक्षिण आश्रमके फिनिकम सेटलमेण्टम श्री मगनलालभाभी येता करत ही थ। गोराकी मतीकी अपक्षा मगनलालभाभीकी स्वता कुद्ध विरोध अच्छी थी। अुसकी जुपज भी ज्यादा रहती था। सावरमती के आश्रमम जिस तरह हम सब लोग अपन-अपन स्वधमके अनुसार ही चल। मैं अयापक रहा। मगनलालभाभीने भी आश्रम चलानके जलावा खादा काम और गोगाला बढाओ और भिमामसाहब घोडा गाभी लकर गहरम खरादी करनके लिय जान लग।

स्वे स्वे कर्मणि अभिरत ससिद्धिम् लभते नर ।

श्री मगनलालभाभीन आश्रमम अच्छे अच्छे वक्ष बोत्रे जनाज अगाया गाक भाजीका प्रबध किया और थोड ही दिनामे जेक सी बीस अकड नओ जमीन लकर आश्रमकी सेती बनाओ। चन् ही आश्रम वासी खेती या गोगालाम लिचस्पी रखत थ। लकिन जी लेते थे पूरे अुत्साहक साथ। विद्यार्थियाको खनाम काम करनका अच्छा मौका मिलता। चन् विद्यार्थी मतीम अधिक ध्यान देकर मगनलाल-भाभीका मताप प्राप्त कर सक थ।

एक दिन अग्रज सरकारके गग आश्रम देखनको जाय। अ हैं देखना था कि आश्रमम क्कम कितना लिया जा सकता है। गागा



मगन निवान

कार्यालय, वस्त्रालय आदि तो मस्थाके प्रवृत्तिके मकान गिने गये । लेकिन मगनलालभाभीका घर तो अेक खानगी निवास था । अुस पर टॅक्स क्यो न लिया जाय ? मगनलालभाभीने कहा, “मै किसान हूँ । यहाँ खेती करता हूँ और अपनी खेतीकी जमीन पर मकान बनाकर रहा हूँ । अिस पर आप टॅक्स नही ले सकते ।” अिस जवावसे सरकारी कर्मचारी चौक गये । कहने लगे, “किसानका घर अितना बडा और अँसी शानका नही होता ।” मगनलालभाभीने जवाव दिया कि “अंग्रेजी राज्यमे क्या हरअेक किसानको गरीब भीखमगा ही रहना चाहिअे ? और टूटी-फूटी झोपडी मे ही रहना चाहिये ? आप ही कहिये कि सरकारके हिसावसे किसान का घर कितना छोटा और खराब होना चाहिये ?” सरकारी कर्मचारी गरमाये और चले गये ।

आश्रममे रुग्ण-शुश्रूषा

मुझ याद है कि गांधीजीने जेव दिन स्पष्ट किया था कि बीमारो को जिकट्टा करके अनुकी चिकित्सा करनेके लिये आश्रम नही है ।

जब सन् १९३० म गांधीजी नमक-सत्याग्रहके लिये अस्सी साथियो को लेकर जहमदावादमे दाडा चन तब अुहोने अपने साथियोसे भार पूवक कहा था कि हम स्वराज्य लेने चल हैं । रास्तेम गोली चलेगी । न चली तो भी हम हर तरहके कष्टके लिय तयार रहना चाहिये । हमम स बोओ बीमार पडा तो मैं अुमके लिय जेक क्षणके लिये भी ठहरनवाला नही हू । अुसे रास्तेकी बाजू पर मुलाकर बाकीके हम सब सीध आगे जायेंगे । बीमारको भगवानके भरास छाड दगे । रास्तसे जानेजानवाल लोग अमकी मदद करेंगे यह विश्वास ता है हा ।

अुपरकी दो बातें प्रारम्भम ही प्रिसलिय दी है कि दाना गांधीजीके वायसिद्धांतक नमून हैं । उनिन अुनका स्वभाव अुनम व्यक्त नहा होना ।

गांधीजीके सहवामम जा गग करमा तक रू हैं व सबके सब कह्ग रि गांधीजीके जीवनम अुनका सबम बग जान् बीमारोकी सेवा हा था ।

हिमाका गारारिख या मानमिक् दद दंगत ही गांधीजी अम विघल जान थ कि स्वय सेवा करन बठ जान थ । बीमारोके लिय समय दना और गच बनना अुनक लिअ कभा भा भारन्थ या अरधिरन् नही लगा । कभा-कभा ता अगा लगना कि बामारोकी सेवा करनेरा मोता मिन्

पर वे बहुत ही राजी होते थे और क्यों न हों ? वे स्वयं प्रेममूर्ति थे, सेवामूर्ति थे । सहानुभूति तो मानो अनुका प्राण ही था ।

मुझे याद है कि किसी अके आदमीसे गम्भीर नैतिक गुनाह हुआ था और गांधीजी कडे होकर उसे प्रायश्चित्तका रास्ता बता रहे थे । अितने मे वह व्यक्ति बीमार पडा । बीमारीका समाचार सुनते ही गांधीजीने उसकी प्रेमसे और कोमलतामे अैसी सेवा की कि सबको और खास तौर पर मरीजको बडा आश्चर्य हुआ । सज्जनोके प्रति प्रेमभाव और दुर्जनोके प्रति अुदासीनता या तटस्थभाव अैसा भेद गांधीजीके पास था ही नही ।

प्रेम और सेवाभावके कारण ही गांधीजीने रूग्ण-शुश्रूषाकी कला और अमका विज्ञान दोनो हस्तगत किये थे ।

दक्षिण आफ्रिकामे अुल युद्धके दिनोंमें घायलोंकी सेवा करते अुन्होंने रूग्ण-शुश्रूषाका सारा ज्ञान और कौशल्य वाकायदा हासिल किया । प्लेग या अैसे ही कोअः सासर्गिक रोगके फल जाने पर सामाजिक स्वच्छता और सामुदायिक सेवाके लिअे आवश्यक सगठन करनेका अुन्हे मौका मिला । अुससे भी अुन्होंने काफी तजख्वा हासिल किया । पू० कस्तूरवा की या मणिजालकी गम्भीर बीमारीके दिनोंमे अुन्होंने क्या-क्या किया अुनका वर्णन गांधीजीकी आत्मकथामे हमे मिलता ही है ।

रूग्णोकी सेवा करते घनी और गरीब, अपना और पराया असा भेद अुनको छूता तक नही था । अमीर बीमारके लिअे जो अिलाज वे करते थे वही गरीबोके लिये भी अुन्हे करते हमने देखा है ।

गांधीजीकी सारी चिकित्साकी द्युनियादमे अुनका जो जीवनसिद्धान्त काम करता था वह था शरीर, मन और आत्माकी अेकताका, तीनोंके अटैतका ।

आजकलकी पश्चिमकी चिकित्सामे रोगका अिलाज करने मानसिक

और आत्मिक आरोग्यका विचार डाक्टर लाग करते ही नहीं। बुद्ध ता गरीरम ही मतलब है।

गांधीजी जब जीवनके नियम दूत थे, राजनीतिक आन्दोलन चलाते थे और बीमाराकी शुद्धी करते थे बुद्ध रोगमुक्त बनानेकी कोशिश करते थे वे अिम गरीर मन और आत्माकी एकताको कभी नहीं भूलते थे।

जो अिलाज ठूटा वह करोडाके त्रिय कारगर होना चाहिये यह भी अनया जाग्रह था। अिमत्रिअ गरीरका रोगमुक्त करनेके प्रयत्नम बुद्धने अुपवास बस्ता जादि गरीरगुदिक तत्वा पर ज्यादा ध्यान त्रिया। जाहार म जर्नरी परिवर्तन करके हा व रोगको हटानकी कोशिश करते थे और मिट्टी पानी खल्गी हवा, धूप मूसप्रकाश और ताराप्रकाश आदि नमगिक तत्वाकी मन्त्र ही वे सारी चिकित्सा करनेके आग्रही थे। चिकित्सा म और जाहारम भी मिच मसाला जादि अुत्तेजक पदार्थोंको टाटना मास गराव जादि आमशक्तिको क्षीण करनेवाले पदार्थोंका परन्ज रखना और मयमका महत्व कम करनेवान पाचक चूण जादि अिलाजा का त्याग करना—प्रधानतया यह था अुनका जाराग्य विज्ञान। गरीरिक और मानसिक मयम ब्रह्मचय अस्वात् या रमसवनका मयम अिन बाताका भी अुनके मन बहुत महत्व था। अनिष्ट वाचनका त्याग बेकार वाचनके प्रति अरुचि और आध्यात्मिक ग्रन्थाका पठन-पाठन और पारा यण अिन बाताका ता अुनकी साधनाम बडा महत्व था।

और सर्वोपरि या अुनका रामनामका आधार और अ्रुम पर विश्वास।

रामनामक अूपर अुन्होंने बहुत बुद्ध लिखा है और रामनामका शारी रिक और मानसिक राग निवारणक त्रिय अुनका आग्रह मा अुन्होंने कअा बार व्यक्त किया है।

बीमारोकी मेवा और चिकित्साका अनुशा अन्माह एक आवश्यक तत्त्व मानकर प्रयत्नपूर्वक भुन्होंने माध्य किया हो अंमा नहीं लगता ।
 उनके स्वाभाविक विष्वप्रेमका ही वह एक रूप था । आत्मीपम्य और
 विश्वात्मैक्य उनके लिये केवल बुद्धिकी मददमे स्वीकारे हुअे सिद्धान्त
 नहीं थे । वह तो अनुशा स्वाभाविक सिद्धि थी । गीताके शब्दोमे अगर
 हम कहे तो वह अनुकी 'अनेक-जन्म-समिद्ध' कमाओ थी । गाधीजीकी यह
 हृदयकी कोमलता देखकर श्री चार्ली अँड्रयूज कहते थे कि Gandhiji
 has a feminine soul. 'गाधीजीको भगवानने नारी-हृदय वरुणा है ।'
 अनुकी आन्मगवितमे नारी-हृदयके सब लक्षण पाये जाते हैं ।

आश्रमका और बाहरका चाहे जितना काम सिर पर हो, गाधीजी
 रोज सब बीमारोकी मुलाकात तो लेने ही थे । 'कैसे हो ?' करके पूछ-
 कर भाग जाना अनुका तरीका नहीं था । मरीजकी शारीरिक और
 मानसिक हालत सहानुभूतिके साथ पूरी-पूरी पूछते-समझते ही रोगियोकी
 आधी बीमारी दूर हो जाती थी । और फिर वे गम्भीर होकर अल्लाज
 मुझाते थे और जरूरी साधन जुटाने थे ।

समय कम होने पर और बीमारोकी सख्या अधिक होने पर गाधी-
 जीको बीमारोको देखनेके लिये एक स्थानमे दूसरे स्थान पर जोरोसे
 दौडते मँने देखा है । अिसीलिये कहता हूँ कि प्रेम, सहानुभूति और मेवा
 अनुके जीवनका स्वाभाविक और प्रधान अश था ।

बीमारोके लिये शौचपेटी (कमोड), वेडपॅन (विस्तर-शौचपात्र), गरम
 पानीकी रवड थैली, अेनिमा (वस्ती) अँसे-अँसे साधन आश्रममे हमेशा मौजूद
 रहते थे । नमक, खानेका सोडा (सोडा वायकार्ब), आयोडीन, जर्म्
 बाँधनेकी कपडेकी पट्टियाँ आदि चीजे पर्याप्त मात्रामे आश्रममे हमेशा
 मौजूद रहती थी । अिसीलिये गाधीजीके होते हुअे आश्रममे बीमार पडना
 वादशाही आराम लेनेके समान था । प्रारम्भके दिनोमे अपुवाम और

बस्ती पर गांधीजीका भार अधिब रहता था। जिसलिअ चन्द बीमार गांधीजीको चिकित्सास डरत थे। लकिन जब अुनको फलवा रस सत्रे, नीबू, मोसम्बी अगूर ट्राण दाडिम मव (सफरजन), टमाटर, गाजर, भूलीका रस त्तादऽजाकी सऱ्जी, नीमकी पत्तियाँ आदि दिया जाता तब अुनकी वह चिकित्सा बडी ही रोचक मालूम होती थी। भामूत्री आहारमे भा केने मूगफला, मूखा मवा, जबले टूअ प्याज आदि अच्छी-अच्छी पोष्टिक चीजें मिलनेमे बीमारोका स्वास्थ्य बहुत ही जल्दी सुधर जाता था। जरूरत पडने पर जतून (olive oil) मूगफली तिल या सरसोका तल अथवा रड पाम आजील जसे पोष्टिक पदार्थ भा व देत थे।

कमोकि दूध दही बनस्पति नही हैं प्राणीके शरीरमसे निबलनेवाले पदार्थ हैं जिसलिअे अिनका त्याग करनेका प्रयत्न भी अुहोने करके देखा। केवल बनस्पतिसे दूधके जसा अत्यंत आवश्यक पदार्थ किसीन किसी दिन मनुष्य जाति तूढ निकालेगी हा असो जनकी अपना दृढ श्रद्धा थी। लकिन अनुभवसे अुहाने देखा था कि मासाहारका त्याग मनुष्यको तभी शक्य है जब मनुष्य दूध दही मखन घी छाछ, पनार आदि गारस पदार्थोंका सेवन करे। जिस क्षणम गांधीजीन काफी प्रयोग करके दसा। और हर प्रयोगका गहरा निरीक्षण भी किया।

बीमारोकी शुश्रूषा करते दूसरे-दूसरे आश्रमवासियाँ भी मदद लेते लते वआ लगाको अुहनि तयार किया। निमर्गोपचारके साहित्यका अध्ययन गांधीजीने बहुत बारीकीमे किया था और अुनका निजी तजरबा भी कम नहा था। जब गांधीजी १९३०म परबडाके कारावासमे रागदी थे तब गांधीजीके स्वास्थ्यके बारेम सरकारका रिपाट महीनम दा दफ दनके रिअ्रे स्टील नामके डाक्टर गांधीजीस मिलने आने थे। वे गांधीजीके पाम बठकर निमर्गोपचारके अन् दो पाठ हर दफा सीखकर ही जाते थे।

वापाराको अपना सहानुभूति देने टूअ व अपनी साधना भी चलाने

ये और मरीजको अुन्नत जीवनकी दीक्षा भी देते थे ।

निसर्गोपचार प्रणालीकी रुग्ण-शुश्रूषा और वीमारोकी गाधीजीकी मुलाकात आश्रम-जीवनका अत्यन्त महत्त्वका अग था, जिसके द्वारा स्वय मरीज और अुनकी सेवा करनेवाले मरीज-सेवक दोनोको सहज ही विश्व-जनीन प्रेममूलक आश्रमधर्मकी दीक्षा मिलती थी ।

श्रमधर्म शरीरधर्म

टालस्टायके जब मित्रन रोटीके लिये मान जाहारके लिये शरीर श्रम करनेकी आवश्यकतापर बहुत भार लिया। मनुष्य विद्वान हो या अविद्वान राजा हो या एक हरजकेको अपन-अपन शरीरम रहना ही पडता है। जिसलिये हरजके देहधारीको अन्न पानी वस्त्र और निवास स्थानकी आवश्यकता होता है। जिसम भा जाहारके बिना किसीका चलता ही नहीं।

असा हालतम जा लाग खाते ता है लेकिन जाहार पदा करनेम मन्द नहीं करते शरीरश्रम नहीं करते व अपना बासा दूसरोपर डालत है। यही कारण है कि दुनियाके गराब लोगोके मिरपर कामका बासा बन्ता है जोर अन्नका अुच्च बगक लोगोकी जास शोषण हाता है।

सारे सामाजिक जयामाका मूळ इसी बातम है कि बहुतम देहधारी मनुष्य आहारना उत्पत्तिम मन्त्र नहीं करते अपना अपना बासा नहीं अुगत।

रगियन मनापा टालस्टायका यह बात उधा जोर अुहनि स्वयं गताका काम करना गुन किया। हम कविता बनायगे और आप हमारे मित्र अन्नान जोर गाक-सजी अुगाभिय असा श्रम विभाग निर्दोष नहीं हा मरता। जाहारके लिये श्रम करना अेक असा धर्म है जिसके मित्र दूसरा काभा पयाय है हीनहा। अगर मन्त्र लिये काजी दूसरा खाना साय जोर अुगस में जा सन् तभा राटीके मित्र शरीरश्रम करनेके धर्मस में बच मरता है।

गाधीजीको वचनसे शरीरश्रमके प्रति अरुचि थी नही । जब अन्होने टॉलस्टॉयके सिद्धान्त पढे तो अुनका भी निश्चय हुआ कि आहारके बिजे यानी अन्नोत्पत्तिके लिये कुछ-न-कुछ श्रम करना ही चाहिये ।

दक्षिण आफ्रिकामे टॉलस्टॉय फार्म और फिनिक्स सेटलमेण्टके जीवनमे गाधीजीने शरीरश्रमके अपूर काफी भार दिया । खेती और बगीचेका काम तो वहाँ होता ही था । साथ-साथ घर बनानेका काम, खाना पकानेका काम, टट्टी साफ करनेका काम और विशेष रूपसे छापखानेका काम कुछ-न-कुछ हरअेकको करना ही चाहिये अैसा वहाँका सार्वत्रिक नियम था ।

जब गाधीजी दक्षिण आफ्रिकासे भारत कायम रहनेके लिये आये, और सत्याग्रहाश्रमकी स्थापना हुअी तब वहाँ भी यही नीति और यही नियम चालू हुअे ।

अिसके पहले शान्तिनिकेतनमे भी गाधीजीके लोग शरीरश्रम करते ही थे ।

काचरवमे टट्टी साफ करना, जमीनमे खड्डे खोदकर मलको अुसमे गाडना, अनाज पीसना, रसोअीके वरतन माजना, कुअेसे पानी लाना आदि काम सबको करने पडते थे । गाधीजी स्वयं हर काममे मदद करते ही थे । अिसके अलावा कपडे सीनेका भी काम करते थे ।

जब आथम सावरमतीके किनारे नये वाडजके पास कायम हुआ तब अपूरके सब कामोके अलावा तम्बू खडे करना, झोपडियाँ बनाना, कुअेके लिये जमीन खोदना वगैरह काम भी वढ गअे, जो काम हम-सब लोग, निरपवाद सब लोग, पूरे अुत्साहके साथ करते थे । और फिर कातने और बुननेका काम भी सीखते थे और वढाते थे । अहमदावाद जाकर बाजारमे चीजे खरीद लाना यह काम भी कम महत्त्वका नही था ।

बीमाराकी गुध्रूपा नी कभी-कभी बर जाता थी ।

मुबह जल्दी अरुना और रातका जल्दी सोना यह आश्रमका अक महत्त्वका नियम था । लेकिन अुसम अक बडा विघ्न अुपस्थित हुआ ।

जब गाधीजा हिन्दुस्तान आय और अपन विचारका अमल और प्रचार करने लगे तब सारे समाजम अुमकी चर्चा होती ही थी और सरकारी अमलदार भा कभा कभा चिक्कर अागाम कहते हमार पास क्यों आत हो ? जाआ गाधीके पास । अुहाने सब सवाल हल करनेका ठेका लिया है ।

लोग यह नसीहत मान या न मान अुस समयका सरकारने स्वय अिसका अजीब पालन गुरू किया । अहमदावादके आसपास द्वारा नामकी अक जरामपेगा जातिके लोग रहने थे और स्वधमका यथासक्ति पालन करते हुअे अधर-अुधर चोरियां करते थे । अपनी वश परम्परागत कलाकी दीक्षा अपने बच्चाको वारायदा देत भा थे । सरकारने अम लोगोंमे अूबकर अुह कहा, जाओ गाधीजीके पास । और सरकारने आश्रमके पास खुली अुजाड जमीनम अिन लोगोंकी बस्तीकी स्थापना की ।

मजाम नहीं माननेवाले कानूनकी मदद नहीं माग्नेवाल हम अहिमक लोगोंके आश्रमम अपनी कला आजमाना अुनक लिय आसान था । अपन बच्चाको वस्तुपाठ पढ़ानि (teaching through example) मे अपनी कलाम प्रवीण बनाना भा अुनक लिय आसान था । य द्वारा लाग आश्रम-दशानके लिय यमोंके रातका आन लगे और हम लोगोंको अस्तन्य वतका महत्त्व समझान लग । फलत हम लोग रातको आश्रमक अिदगिद गत लगाने लग । सारे अिनक परिश्रमक वा रातकी ना अिम तरहग सोना हमार लिय आसान नथे था ।

मैंने अपने लिये रातके अके वजेसे तीन वजे तकका समय पसंद किया था। जल्दी सोकर अके नींद पूरी की और रातके बाद फिरने घण्टा-डेढ़ घण्टा सो लिया यह कार्यक्रम मेरे लिये अनुकूल था। अके हाथमे लालटेन, अके हाथमे लकड़ी लेकर आश्रमकी सारी भूमिके अर्ध-गिर्द घूमते रहना और नींदको हटानेके लिये गीता-अुपनिषद्के मन्त्र बोलना ध्यानके लिये भी अनुकूल प्रवृत्ति थी।

जब तक परिश्रमका काम अिस तरह चला, तब तक ही आश्रममे मेरे मन सत्ययुग था। बादमे प्रत्यक्ष समाजसेवा शुरू हुअी। लोग जहाँसे बुलावें वहाँ जाना, व्याख्यान देना, रास्ता, हवेली, मन्दिर आदि साफ करना, गाधीजीके सिद्धान्तका परिचय कराना यह अके प्रवृत्ति बढ़ गयी। श्रमविभागका तत्त्व और शरीरश्रम कभी-कभी घण्टा, दो घण्टा, सूत कातने तक ही मर्यादित हुआ। चन्द लोग बहुत परिश्रम करते थे और मेरे जैसे शब्दजीवी लोग शरीरश्रम कम करने लगे।

स्त्रियोको अपने-अपने घरका काम करनेके लिये भी काफी समय नहीं मिलता था। बच्चोको सँभालना, सूत कातना आदि काम अुनके पास था ही। अिसके अलावा वापूजीने अुन्हे आश्रमके रसोयीघरका और गोशालाका काम सँभालनेके लिये प्रवृत्त किया।

बच्चोकी बाकायदा पढाअीमे बूनना, बढअीका काम सीखना आदि शरीरश्रमके तत्त्व थे ही। अितना सत्र करनेपर भी बच्चे शामको खेलते ही थे और त्योहार-अुत्सवके दिन विशेष कार्यक्रम भी करते थे। और मैंने विद्याथियोको नदीमे तैरनेकी कला सिखानेका खास काम अपने पास लिया था।

अिस तरह आश्रमका सारा जीवन अुद्योग, शरीरश्रम, परिश्रम और तरह-तरहकी प्रवृत्तियोके कारण छत्नेके जैसा गूँजता रहता था। तो भी



बरत विद्यालय

मैं अपने अनुभवम कह सकता हूँ कि सब लोग जवसा परिश्रम नहीं कर सकत थे। कुछ दिनके बाद हम लोगोको अपन अपन घरम नौकर भी रखन पड। और खेतीके कामम किसानोकी मदद भी लेनी पडी। वुननवान जुलाहा भी हम कभी-कभी आश्रमम रखत थे। और जहा तक हो सके थुह आश्रमवासी बनानकी कोशिश करत थ।

जब गाधीजीका आत्मनिरीक्षण करत गवा हुआ कि सत्याग्रहाश्रम अितना बडा नाम लेनके लायक नहीं है तब जुहान आश्रमका नाम बदलकर अम अद्योग-मन्दिर कहना पसन्द किया। जिस नाम परिवर्तनम गाधीजीका जाध्यात्मिक मताप-सा मिया। लेकिन नया नाम चला नहीं। आश्रम आखिरतक सत्याग्रहाश्रम ही रहा। लेकिन अद्योग मन्दिरके नय नामके कारण जितना तो सरक मनपर जम ना गया कि आश्रम जीवनका प्रधान-नव है अद्योग।

खर्चके वारेमे आश्रमको स्वावलम्बी बनाना आसान नही था । आश्रममे रहनेवाला हरअेक आदमी अपने खर्चके जितना कमाता तो सही, लेकिन सारे पूरे आश्रमकी सब प्रवृत्तियोका खर्च गाधीजीको मिलनेवाले दानमेसे ही होता था ।

भिक्षाश्रम नहीं

मुझे याद नही कि आश्रममे रहने आये हुअे अेक पञ्चमी व्यक्ति रेजिनाॅल्ड थे या दूसरे कोअी, अेक दिन आकर गाधीजीसे कहने लगे कि 'मे मुनता हूँ कि आपका आश्रम दानधर्मके पैसेपर चलनेवाली सस्था है, Charity institute है । यह मुझे गुरुमे मालूम होता तो शायद मैं यहाँ नही रहता । अब अपने खर्चके पसे मुझे आपको देने ही चाहिये ।'

गाधीजीने कहा कि 'जिस किसीने आपसे कहा अुसकी दृष्टि अलग थी, गलत थी । आश्रममे रहनेवाला अेक भी व्यक्ति दयाधर्मका अन्न नही खाता । हरअेक आदमी अपने खर्चके जितना यहाँ आश्रममे कमाता ही है । आश्रमको अनेक प्रवृत्तियाँ चलानी पडती हे । अुस सार्वजनिक कामके लिअे लोगोमे पसे मिलते है । यहाँ बहुतसे अंसे लोग है जो केवल आजीविका लेकर सेवा देते है और जो लोग तनखाह पाते है वे भी बाहर अनको जितना मिलता अुममे कम लेते है और धन-सग्रह नही करते । आपको सत्याग्रहाश्रममे रहते मकोच करनेका कोअी कारण नही है ।'

धन और समयका हिसाब

गांधीजीके सत्याग्रह आश्रममें सत्याग्रह-आश्रम और राष्ट्रीय गाथा अने दो विभाग थे। राष्ट्रीय गाथा आश्रमके अन्तर्गत स्वतंत्र सस्था थी। राष्ट्रीय गाथाके अध्यापक आश्रममें ही रहते थे। आश्रमका आश्रम आश्रमके प्रत और बुसका वायु-मण्डल अध्यापकाको पसंद था। तत्रिन जिन बातोंसे वे बंध हुए नहीं थे। हालांकि सबका प्रयत्न आश्रमके प्रताका और नियमोंका पालन करनेका ही था। अध्यापक ज्यादातर दानी-शुदा—परिणीत—थे। और अलग अलग घरोंमें रहते थे। श्री महाश्वेद देसाई हम अध्यापकाके साथ रहते थे। हमारी तरह व न तो आश्रमके नियमोंसे बंध थे, न राष्ट्रीयशालाके अध्यापक-मण्डलके थे तत्स्य थे। जब पुत्र होनेके बाद अहोत्र आश्रमके प्रताका स्वीकार किया।

चंद आश्रमवासी आश्रमके भी सदस्य थे और राष्ट्रीय शालाम अध्यापनका काम भी करते थे। जिनमें श्री विनोबा भावे श्री मगनलाल गांधी श्री छोटेलालजी जैन श्री लक्ष्मीदास आसुर और श्री नारायणदास गांधी जिनके नाम अिस वकन याद जाते हैं। अध्यापकोंमें जो गुरुसे आखिर तक रहे उनमें मेरे साथ श्री किशोरलाल मास्वारा श्री नरहरिभाभी परील श्री मगनभाभी देसाजी श्री हरिहर भट्ट श्री अप्पासाहय पटवधन श्री जुगतराम दव श्री छगनराज जोशी, श्री भसालीभाभी अित्यादि भी थे।

आश्रमके सदस्य तनवाह नहा लेते थे। जुनका सच आश्रमकी ओरमें लिया जाता था। शालाके अध्यापकाको प्रथम मासिक ६० रुपय

और वादमे शायद ७५ रुपये मिलते थे। सबकी तनखाह अक-सी रहती थी लेकिन चन्द लोग आवश्यकता कम होने से कम लेते थे।

गाधीजीमे तत्त्व और व्यवहार दोनोका समन्वय करनेकी अजीब शक्ति थी। अन्होने अक दिन कहा कि "अध्यापक भी आश्रमके वायु-मण्डलमे रहते है। अुनका आदर्श यह होना चाहिये कि वे अपनेको और अपने परिवारके स्त्री-पुरुषोको और कुमार-कन्याओको अक तरहसे आश्रमवासी ही मान ले। स्त्री-पुरुष, वच्चे सब अपनी शक्तिके अनुसार सेवा देते जाअे। और सबको अुनकी कमोवेश शक्तिका खयाल किये बिना अक घण्टेके अक आनेके हिसावसे पारिश्रमिक या वेतन दिया जाय। यह होगी अुनकी न्यायोचित तनखाह।

"लेकिन मैं जानता हूँ कि अितनेमे आप लोगोका चल नही सकता। असलिये आपको मासिक वेतन बाँध दिया है। आप असका हिसाब अपने मनमे असा रखे कि अक घण्टेके अक आनेके हिसावसे मासिक आपको जितना मिल सके वह आपकी कमाअी है। अससे अधिक आपको जो दिया जाता है वह राष्ट्रकी ओरसे आप भिक्षा पाने है।

"मैं जानता हूँ कि प्रति घण्टा अक आनेके हिसावसे मुझे पूरे अध्यापक नही मिलनेवाले। आपसे अच्छे अध्यापक मुझे नही मिल रहे है। असलिये आपको आवश्यक तनखाह मैं दे रहा हूँ। मैं जितना दे रहा हूँ अससे जिनकी आवञ्यकता ज्यादा हो अुनको मैं नही रख सकता। वे आश्रम छोडकर समाजमे चाहे जो सेवा करे। वह भी देशसेवा ही है। आश्रम अपनी मर्यादाका अुल्लघन नही कर सकता।"

और अक आदर्श गाधीजीने हमारे सामने रखा था। अन्होने कहा कि जिस तरह हम आश्रमके पैसोका हिसाब रखते है, पाअी-पाअीका हिसाब पूरी अीमानदारीसे रखते हे अुसी तरह हमे अपने समयका भी

१३४ आधम-सहिता

हिमाव रखना चाहिये । पसक्रे हिसावम ह्म राजमल (cash book) ओर खाताबही (ledger) रखत है अुसा तरह क्षण-क्षणका हिमाव भा ररना चाहिये ।

जम बाजू रोज ह्म भगवानकी जारम लखक त्रि २४ घण्टे मिलत त्रि जिनमम ह्मन निद्राम कितने पनात किय प्रायनाके लिअ कितना समय दिया गौब, दस्तवन राना आदि शरीरकी आयदयवनाआम कितना समय दिया, परि रम ओर अुद्याग कितन घण्ट किया, नात भाजन आत्म कितना समय गया कितनाबोयी पढाओ अखबारोका वाचन अध्ययन चितन जामाद प्रमोत् जादि प्रवर्तियाम कितन कितन घण्ट या कितन कितने क्षण दिय गय अिनका भा हिमाव रखना चाहिये ।

महीनक अन्तम हिसाव लगाया जाय शरीरकी मवाम कितना समय दिया अद्योगम कितना दिया पन्त पनानम कितना दिया अित्यादि मार हिमाव रखना चाहिये । अिस तरह जहाँ समयका दुरुपयोग होता है अथवा समय व्यथका जाया हाता हो अिसका हिसाव देखकर जीवनम नित्य सुधार करनेका सूचना ।

कल्पना सबको भाओ, कओ लाग अपन दिनक व्यवहार पर अपनी ही मानसिक चौकी रखकर समयका सदुपयोग करन लग । तकिन मैं नहीं मानता कि बाकायदा बहीलाता रखकर किसीने हिसाव रखा हो या गाधीजीको दिखाया हा । लकिन आश्रमम हरअव यकिनको अपने समयका हिसाव रखना आध्यात्मिक दृष्टिमे या औमानदारोकी दृष्टिम बहुत जरूरी था ।

कुत्तोंकी समस्या

मराठीमे अेक कहावत है । सेवा करनेवाला कोअी तैयार हो गया तो सेवा करानेवाला, खुशीमे सेवा लेनेवाला कोअी-न-कोअी मिल ही जाता है । देशकी सेवा करनेके लिये गाधीजीने सावरमतीके किनारे दधीचि आश्रमके पास अपना आश्रम खोला । तव अैसे अपरिग्रहका व्रत रखनेवाले आश्रमियोंको अुनके छोटे-मोटे परिग्रहसे मुक्त करनेके लिये चौर आने लगे । अुसका जिक्र तो मैंने अिसके पहले किया ही है । शांति, मुव्यवस्था और कानूनकी स्थापना करनेका जिनका कर्तव्य है अैसे लोगो ने छारा नामकी अेक जरायमपेशा (गुनहगार) जातिके लोगोको आश्रमके पाम ही वसाया । अुनके अुपद्रवसे हम काफी परेशान हुअे । अिन छारा लोगोमेसे अेकने तो अेक दिन श्रीमती प्रेमावहनके कन्धेपरसे

१. अिसके बारेमें प्रेमावहन अपने ता० १७-१-५१ के पत्र में लिखता है कि, “छारा लोग शाल ले गये यह बात तो सही है । लेकिन श्री लीलावती बहन आसरके शरीर परसे, न कि मेरे शरीर परसे वे खीच ले गये । हम आश्रमसे अ्रहमदावादकी ओर बैलगाडीमें बैठकर जा रही थी । लीलावती बहन मेरे पीछे बैठी थीं और वह मेरी ओर देर रही थी । अितनेमें दो छारा आये । अुन्होंने शरीर पर लपेटी हुअी गान जोगों से खीच ली । लीलावती बहन गिर गयीं और अुन्होंने चिल्लाना शुरू किया । हम पीछे देखने लगे । तो क्या, लीलावती बहनके शरीर परकी शाल नीच करके छारा लोग भाग गये ।”

छारा लोगोको भी मालूम हुआ होगा कि अग्नेज सरकारने आश्रमवासियों को कानूनका रक्षण देना छोड दिया है । जहा तक मुके याद है मुझे कहने वालेने लीलावती बहनका नहीं किन्तु प्रेमा बहनका ही नाम दिया था । लेकिन कहनेवालेकी भूल हो सकती है । अब तो हमें मत्य बात गुद प्रेमा बहनसे ही मिली है ।

अनुकी गाल जुठा ली और देखते देखते वह गायब हो गया ।

पता नहीं अहमदाबाद म्युनिसिपालिटीके परोपकारसे, या बुदरती तौर पर, लेकिन आश्रमकी स्थापनाके घाड़ ही दिन बाग़ जनमानेक लावारिस कुत्त आश्रमम आने लगे । जहाँ देखें कुत्त ! छोटे बड़, तगडे बूग़ बीमार लँगड लूत कुत्त आश्रमवासियाके दशनके लिय आने लगे । अिनमसे कभी कुत्त हिम्मतके साथ आश्रमवासिय के रसोओघरम भी घुमने लगे । रातको शायद अनुकी अपन पूबजाकी याग़ आती होगी । नौ दम बजेके बाग़ काफी रो लते थ । अुम समयके आश्रमके व्यवस्थापक श्री छगनलाल गायीन हरअक रसोओघरके दरवाजेके साथ अक छोटा आधी अूचाओका दरवाजा बना दिया ताकि कुत्त अदर घुस न पायें ।

गुजरातम (और भारतके अय हिस्साम भी) लावारिस कुत्तको गिगाना बडा घम माना जाता है । गोरक्षाके पिजरापोलम कुत्ताको रगनका भी जितनाम किया जाता है । कही-कही तो गाँवभरक कुत्ताको गिगानक लिय फग़ जिनट्टा किया जाता है । अुस फण्टकी आमन्नीम रोटिया बनाकर जगह-जगह कुत्ताको दी जाती है ।

जैसे गायके प्रति मनुष्यकी कृतज्ञताने अपना अेक धर्म बनाया है अुसी तरह मकानो और जानवरोकी रक्षा करनेवाले कुत्तोके लिये दया-भावका रहना जरूरी माना है । धर्मशास्त्रमे कुत्तोको अपवित्र माना है । लेकिन मनुष्यके हृदयमे जो स्वाभाविक धर्म है, सरल दयाधर्म है, अुसने कुत्तोंको खिलानेमे बडा पुण्य बताया है ।

आश्रमके काफी परिवार कुत्तोको खिलाने लगे । फिर तो अिन अतिथियोकी सख्या बढ गयी और अुनकी हिम्मत भी ।

अेक दिन कुत्तोके सवालका हल निकालनेके लिये आश्रमवासी बुजुर्गों की अेक सभा वैठी । कुत्ते कितने परेशान करते हैं अिसका वयान कयी लोगोने सुनाया । आखिरकार मैंने सुझाया कि अिन कुत्तोको खिलाना हम वन्द करे । खानेको मिलता है अिसीलिअे वे आते है । हम अुन्हें खिलाना वन्द करे अिसके साथ भोजनके वादका अुच्छिष्ट हम अिघर-अुघर न फेंकते हुअे अुसे जमीनमे गाड दे । अुस जूठनकी अच्छी खाद बन जायगी ।

सबको मेरा सुझाव पसन्द आया । लेकिन अुसका अमल हो नहीं सका । दयाधर्मी हिन्दू कुत्तोका न खिलायें यह वने ही कैसे ?

फिरसे समिति वैठी । हमारी समितिमे स्त्री और पुरुष दोनो तरह के सदस्य थे । मैंने नया प्रस्ताव रखा कि हम अेक-अेक परिवारके लोग अक-अेक कुत्तेको अपनाये और अुसीको खिलाये, औरोको नही । अंसा करनेसे अपनाये हुअे कुत्ते आर्य वनेगे और वाकीके अनार्योंको स्वय ही भगा देगे । आर्य वने कुत्ते रसोअीघरमे नही आयेंगे । खानेकी चीजोको चाटेंगे नही । किसी चीजको मुंह नही लगायेंगे । अिस तरह स्वार्थ और परमार्थ दोनोका लाभ हमे मिलेगा । मेरा यह प्रस्ताव सबको पसन्द आया । लेकिन अुसको कार्यान्वित करनेका किसीको सूझा नही । दया-

धर्मो लोग जा कुत्ता आया अम खिलान लगे । कुत्ताना आर्योकरण हो नहा मता ।

नासरी सभाम में तासरा प्रस्ताव पग किया कि हम कुत्तके लिये जजारे खरीदकर जुअ अरु जगह बतारम बांध रख और सब धरोका कुत्तके हिस्साका खाना अकट्टा करके भुह खिलाव । अिमम जजारेके लिये पमे खच करनका बात था । खाना अकटठा करके कुत्तको बाकायदा दा दफा खिगनेका प्रबन्ध करनकी बात थी । वह प्रस्ताव किमाका जचा नही ।

अिमक बादकी सभाम में अुग्नि हाकर पण्डित होकर कहा कि जब आप मग अरु भी प्रस्ताव नही मानत तब मैं अित कुत्तका मार टाउनका प्रबन्ध करूंगा । आप सब कोभी बतुन है कि अिम कुत्ताने तग लिया है । तब मैं सारा पाप अपन मिरपर लकर अिअ सत्म हो कर दू गा ।

कुत्तोकी ओरसे होनेवाली परेशानी असह्य तो है। हम प्रस्ताव करते हैं कि आखिन्दा हम कुत्तोकी चर्चा करना ही छोड़ देगे। जो परिस्थिति है उसे मान्य रखकर हम उसे सहन करनेका निश्चय करते हैं। What cannot be cured must be endured ”

यह प्रस्ताव भी किसीको नहीं भाया। आश्रमका ग्रामका भोजन काफी जल्दी होता था। और ग्रामकी प्रार्थनाके पहले और भोजनके बाद अधर-अधरकी वाते करनेके लिये समय मिलता था। अिसलिये लोग अिकट्टा होते थे और चर्चा भी करते थे। और चर्चामे वीच वीचमे कुत्तोका सवाल भी अुठता था। मैंने आखिरकार सोचा—यद् यत् परवशं कर्म तत् तत् यत्नेन वर्जयेत् । यद् यद् आत्मवश तु स्यात् तत् तत् सेवेत यत्नत. ॥ मैंने स्वयं अ्वानातक-निवारिणी सभामे जाना छोड दिया। और कुत्तोका नाम भी छोड दिया। अिस निश्चयमे दो अपवाद करने पडे। अुनके वारेमे किसी समय सक्षेपमे लिखूंगा।

अहिंसाकी भी मर्यादा

आधमजीवनम जावनका सम्पूणताकी ओर अटक जागति रहनी ही चाहिये । शहरवासी अपना कुदरतक साथका सम्बन्ध बरीब भूल ही जाते हैं । गाँवके लोग कुदरतसे अलग तो हो नहीं सकते । लेकिन जान, शारिद्रय, आलस्य और अनुमाहके कारण और जीवन-यात्राकी विषमता के कारण भा जुनका जीवनरस जितना शीण होता है कि कुदरतका आनन्द वे ले नहीं सकते और कुदरतम रही आध्यात्मिकता पहचानना भा अनुक निअ मुश्किल हाता है । फलत मनुष्यजातिने कुदरतके साथ रहा हुआ असका आध्यात्मिक सम्बन्ध खो दिया है । जमीन पानी नदी, तालाब पहाड, बादल और छ ऋतुआके रूपम प्रकृति हमारे जीवन म प्रवण करता है और हमारे जीवनका जविभाज्य अंग बनती है । असका आर फिरस मनुष्यको जाग्रत करना आधमजीवनका एक महत्त्व का अङ्ग हाता चाहिये ।

अिसी तरह जगल और ग्रामाण पशुपक्षी वृमीकीट मछलियाँ जानि भूचर खचर और जलचर प्राणियाँके साथका हमारा अन्व सम्बन्ध भी हम भूल गय हैं । लग जकसर जगलम जान ही नहीं । जगलकी बीग शहरम मगवाकर सताप मानते हैं । जगलम जाते हैं बनस्पतिके शत्रु और पशुपक्षियाँके शिकारी । जिस महापापका निवारण करनेका कामम कम जुमका जर ध्याय रखनेका काम भा है आधम जावनका । नेताक तरह हम जीवसंश्लिषा सहार भी करने है और पोषण भा करते हैं । बटा तालाब बनाया तो वहाँ पानी पीनेके लिअ चिखने हा पशुपक्षी जात है और मनुष्यकी हिंसा-वृत्ति गन्तिक शिकार

बनते हैं। अंसे स्थानमे पशुपक्षियोंके लिअे अभयका वायुमण्डल पैदा करना यह भी आश्रम-जीवनका अेक आवश्यक अग और काम है।

धर्म धर्मके वीच, वश वशके वीच जो अनावश्यक, किन्तु भयानक सघर्ष असस्कारी मानवने तैयार किये है, अूनका निवारण करनेका रचनात्मक तरीका ढूँढनेका काम तो आश्रमका मुख्य काम है।

सम्पूर्ण जीवन—निष्पाप, ज्ञानपूत, सुव्यवस्थित और समृद्ध जीवन स्थापित करनेके लिअे ही आश्रमजीवनके प्रयोग होते है। आश्रमके साथ खेतीका सम्बन्ध केवल स्वावलम्बनके लिअे नही, किन्तु सम्पूर्ण जीवन की आवश्यकताके स्वरूप रखा गया है।

मानवीय सस्कृतिके प्रस्थानका प्रथम आविष्कार है अग्निका अुप-योग। जिस दिन मनुष्यने अग्निके द्वारा खाना पकानेका, अीटे पकानेका और मिट्टीके वर्तन बनानेका अिल्म ढूँढ निकाला अूस दिन मानवी जीवनकी प्रकृतिमे सस्कृतिका प्रवेश हुआ।

ठण्डी, गरमीसे वचनेके लिअे मनुष्यने प्रथम चर्म, वादमे बल्कल और अन्तमे कपडे बनानेकी कलाका आविष्कार किया वह सस्कृतिका दूसरा प्रस्थान था।

हल चलाकर जमीनको जोतना, खाद डालकर अुसे सकस बनाना, और बीज बोकर दसगुना अनाज पाना यह है सस्कृतिका तीसरा प्रस्थान।

मनुष्यने चक्रका आविष्कार करके छ प्रकारसे अूसका प्रयोग किया। चक्कीके द्वारा आटा पीसना, तरह-तरहकी चीजे खरीदना, चरखे पर सूत कातना, पहियेका अिस्तेमाल करके गाडी चलाना, कुअेके अूपर घटमाल चलाकर पातालका पानी अूपर लाना और कोल्हू चलाकर

तिलका या गनेका रस निवाल्ना और कुलाल (कुम्हार) चक्की मददत मिट्टीके बतन आदि बनाना यह सब चक्रगतिका चमत्कार है।

सती करते जम कीटसष्टिका सहार होता है वसे ही असख्य पक्षियोंका पोषण भी होता है। लेकिन सतीके साथ पशुओंको गुलाम बनाकर अनस सवा लनेका मनुष्यको सूझा यह भी मानवी ससृष्टिका एक सबल अंग है। ऋषिपक्षमीके दिन जसा ही आहार करनेका नियम होता है जिसमें बल जाति पशुओंकी सेवा लनेका पाप न हो। सालभर में अन्न जिन जसा रगकर मनुष्यको बनाया गया है कि अुसकी ससृष्टि की बुनियात्तम एक प्रकारका अन्नाय और अधम पाया जाता है।

आश्रमजावनका बुद्ध्य है निष्पाप सवामय जीवन चलाकर जीव मात्रक साथ आत्मक्यका अनुभव करना।

अग जीवनमें भां कुछ-न-कुछ हिंसा जा हा जाती है। जा हिंसा आज अपरिहाय मा मानूम होता है वह बन् विज्ञानकी मन्त्रम हम टार सकत है। अिसमिन् आश्रमजीवनका एक काय यह भा है कि विज्ञान का मन्त्रम जिमा कम कम का जाता है अियक प्रयाग करत रहना। हम मानत थ कि गहक जमी स्वादिन् और मुफीन् चीज पानक लिअ शास्त्रा मकिगयाका जिमा करना अपरिहाय है। किन्तु आज गहकरी मकिगयाक जावनका अध्ययन करक शास्त्र पानका अहिंमक अुपाय मनुष्यजातिन न् निज्ञाना है। आश्रमजावनका यह भा एक काय हागा पाहिअ कि अग गापात्त नारा मोनगना अमयत्त दनका घम हमन मन्नर रगा है अमा तर मधुमागा पात्तका घम और तराका भारत का जनताका हम गिगाव।

मनुत्तर प्राणिाक माय मनुष्यका मन्त्रम वसा हा अिमता निम्न आश्रमजावनक द्वाग करक जिमाना अिम कनध्या ग्यातार

करते हुअे महात्माजीने दो-तीन प्रयोग आश्रमके द्वारा किये । हिन्दू नसारको जिसके कारण बडा आघात पहुँचा वह था गायके वीमार बछडेकी अन्तिम वेदनासे अुसे मुक्त करनेके लिये अुसे मरणदान देने का । असे मरणदानमे हिंसा नही, किन्तु अहिंसा है यह गाधीजीने समाजको समझाया ।

अिसी तरह भावनावश होकर जिस हिंसासे हमारे लोग बचते आये है अुस हिंसाको टालना हमारा धर्म नही है यह भी गाधीजीने हिम्मतपूर्वक लोगोको समझाया वन्दरोके वारेमे ।

हमारी खेती जैसी चाहिये वैसी आज नही है । कभी देगोके मुकाबिले हमारी खेतीकी अपुज बहुत ही कम है यह बात आज सब तरहसे स्पष्ट हो चुकी है । अैसी हालतमे अनाज, फल, फूल और शाक-पानका नाश करनेवाले वन्दरोका आतक सहन करना भारतीय सस्कृति के लिये असह्य हाना चाहिये । लेकिन वन्दरोका आकार और थोडा-बहुत स्वभाव भा मनुष्योके जसा है अिसलिये वन्दरोको नही मारना, अुनका आतक लाचारीसे सहन करना यह हो गया है हमारे लोगोका स्वभाव । और रामायणमे जब हमारे लोगोने पढा कि सीतामाताकी मुग्ध करनेके लिये हनुमान, अगद, सुग्रीव आदि वन्दरोने मदद की थी, तब तो हमारे धार्मिक हृदयोने तय किया कि वन्दरोको हम नही मारेगे । अगर वे नुकसान करते है तो अुनको भगायेगे । वे फिरसे आयेगे तो अुनसे होनेवाला नुकसान लाचारीसे वरदाश्त करेगे । लेकिन वन्दरो को मारनेका नही सोचेगे ।

जनताका धर्म-जीवनके वारेमे निर्णय देनेका आश्रमका कर्तव्य समझकर गाधीजीने जाहिर किया कि वन्दरोको मारना हिंसा है जरूर, लेकिन खेतीका और शाक-फलका ख्याल करते हुअे वन्दरोका आतक वरदाश्त करना धर्म नही है । थोडे वन्दरोको मार डालनेसे ही वाकीके

१४४ आधम-सहिता

बन्दर मन्त्रके लिख भाग जायग और मतीना हम बचा सकने । धम-
कारोने हिरन खरगोण और सुअरको मारना जैसे भृगयाधर्मो राजाआ
का धम बताया है असी तरह बन्दरोको मारकर अपनी खेतीको बचान
का धम गाधीजीने किसानोको बताया ।

अहिंसा अतरोत्तर बढ़नी चाहिये असम कोअी नका नही है ।
लेकिन जो प्राणी हिंसा अपरिहाय है अुसस बचकर मनुष्य अपने आहार
का नाग सटन कर यह कोअी धम नही है । गाधीजी ही असा अपुण्य
भारतक लोगोको कर सकते थ । और लोग भा गाधीजीके ही मुद्दे
असा धमनिणय मुननेका तयार हुआ । वशक मर्यादाधम सावकारिक
नहीं होना बन्दराने बचनका अहिंसक माग किसा दिन मिलगा ही ।

प्रान्तोंकी विविधता

हमे भूलना नहीं चाहिये कि जैसे धर्मोंकी विविधता अिस देशमे है वैसे हिन्दू धर्मके अन्दर भी वर्ण और जातिके आदर्श और रस्म-रिवाज की भी विविधता है, जिसे हम धार्मिक विविधताके अन्दर ही शुमार कर सकते हैं ।

अिसके अलावा प्रान्तीय भेदके कारण भी जीवन-गत बड़ी विविधता भी है । वह धार्मिक विविधता भले न हो, लेकिन समस्त जीवनमे अतरी हुआ गहरी विविधता तो है ही । अिसमे भाषाभेदकी प्रधानता तो है ही, लेकिन कठिनायी अुत्पन्न करनेवाली विविधता तो आहारकी है । गाधीजीका आग्रह था कि आश्रममे हरअेकको अुसके अनुकूल आहार मिले । अिस आग्रहके कारण व्यक्तियोंको तो समाधान रहता ही था । लेकिन मेरे खयालसे आश्रमके प्रबन्धको पर यह बडा ही बोझा होता था ।

मद्रासकी ओरमे जो लोग आश्रममे रहने आये अुनका लाल (या हरी) मिर्च या अिमलीके बिना चलता नहीं था और गाधीजी तो मिर्चके कट्टर विरोधी । तो भी अुन्होंने दक्षिणके लोगोंके लिअे अूपरसे मिर्च देनेका प्रबन्ध करवाया ।

आश्रममे बगालकी ओरमे बहुत कम लोग आये । लेकिन आअे अुनके लिअे गाधीजीने मछली खिलानेका प्रबन्ध तो नहीं किया, लेकिन ज्यादा भात देनेकी ओर गाधीजीका पूरा ध्यान रहता ।

मे जन्मसे महाराष्ट्री नहीं, लेकिन कर्णाटक, गुजरात, मिध, युनन-

प्रातः बगल आदि अनेक प्राणाम रहा हुआ । मग किया भी आहार का आग्रह नहीं था और विरोध भी नहीं था । मैं गाकाहाग था ता समूचा आभम भी गाकाहागो था । अिमात्र मर कारण आभमको बोआ तरागस नही बुगानी पनी ।

रकिन अक चीजके कारण मै भी प्रव धकाके लिअ तकगोपनेह बनता था । महाराष्ट्रम छाँछका वनाम गुड नहीं गलन । माना जाता है कि छाँछका वनाम गुड टालनम वह पनाथ गरावके जमा अपवित्र बनता है । मै अिमी कल्पनाम पला हुआ । जब आभमम कही बनाआ जाती मय मर लिअ बिना गुडका वना बनता थी । मन बहन कहा कि वनीके बिना मरा चल सकता है रकिन आभमम मर लिअे अग्य वना बनान ही थे । आखिरकार प्रवगाका वल कम करनक लिअ मैम गुल्वाली वनी बरदास्त करनका तय किया ।

अिमाम साहबको मिच खानका विषय आगत था । जीर मिच गो आभमके लिअ ममन (निपिद्ध) चीज था । फगत अिमाम साहब और अुनके परिवारक लिअ बाजारम मूला प्रीर मूगेका मागगी (फनी) गभी जाती थी ।

पजावियोकी गुजरातका रोटी पसन्द ननी था । अुनको गगना ही नही था कि गुजराती गीमो वाकर पल भर मकता है ।

हरअकका जमक अनुक आहार देनका नजागत गाधीजी तक ही सीमित थी ।

जब आभमम यूरोपियन गग रहन आत तब गाधीजी अुनकी सातिरगाराकी आर विगप ध्यान रखत । और कहत थ कि अिन गगाका भाजन करनक बाद जीर गध धानक वा मयवामक लिअ पान-मुतारी या ममाग नही रना चाहिअ । यूगपियन गगोका बटनके

लिअे कुर्सी या स्टूल और मेजकी व्यवस्था रहती ही थी, भोजनगालामे भी और प्रार्थनाके समय पर भी । आश्रमके विद्यार्थियोंको आश्रमके अमे नियमोके कारण अच्छी तालीम मिलती थी और वे दिलके अुदार और भिन्नमत-सहिष्णु बन जाने थे ।

आश्रममे कही भी जमीन लीपनेके लिअे गायका या अन्य पशुका गोवर अिस्तेमाल नही होता था, क्योकि मुसलमान लोगोकी दृष्टिसे गोवर अपवित्र चीज थी ।

जिस तरह हमारे धर्ममे गृहस्थाश्रमी व्यक्तिके लिअे आतिथ्य-धर्म सिखाया है और मेहमानको हर तरहकी सहूलियत देनेकी कोशिश की जाती है वैसे ही अतिथि-मेहमानका मेजवान (यजमान) गृहपतिके प्रति भी धर्म होना चाहिअे । अगर आतिथ्यमे कुछ कमी रही तो गृहपति मानता हे कि अुसने अपना धर्म नही पाला । वैसे ही अगर अतिथिने गृहपतिको परेगान किया तो वह भी पाप है अितनी बात धर्मकारोकी ओरमे अतिथियोंको बताना रह गया है । अिसी तरह आश्रमधर्ममे भी भिन्न रिवाजवाले, भिन्न प्रान्तीय व्यक्तियोंको समझाना आवश्यक था कि अपने-अपने खास रिवाज और आग्रहका बोझ आश्रम पर जितना कम डाला जाय अुतना अच्छा ।

आश्रममे जो चीनी या जापानी युवक आकर रहे, अुन्होने अपने लिअे कभी, कुछ भी सहूलियत नही मांगी । खान-पानमे और रहन-सहन मे जैसा भी आश्रमका प्रवन्ध रहा, अुममे वे समा जाने थे ।

प्रार्थनामे और त्योहार मनानेमे आश्रमकी जो दृष्टि थी अुमके वारेमे तो मैं लिख चुका हूँ । अीमाअियोंका ब्रटा दिन और अिस्लामियोंका बड़ी वफातका दिन और अीदका दिन हम अपने ढगमे मनाने थे । त्योहारोके वारेमे आश्रमका जो रुख या वह मेरी किताब 'जीवनका काव्य' मे आ ही गया है ।

आश्रम और प्रायश्चित्त

‘बहुश्लेषा हि मानवा

मनुष्यका स्वभाव ही असा है कि क्या अच्छा है वह जानत हुआ भी मनुष्य बुराभीकी आर आकर्षित हो जाता है और जसक हाथा दाप होने है वह गुनाह करता है पाप करता है।

अपनिपदके अब जपि रहने है कि—

“किमह साधु नाकरवम् ।

किमह पापम् अकरवमिति ॥”

मर हाथा साधु कृत्य गुभ कृत्य कयो नहा हाप ? पाप हा कयो होने है ? जसा परिताप मनुष्यका हमारा करना पडता है । ब्रह्मज्ञान होनेपर साक्षात्कारके आनन्दका अनुभव करनेपर ही वह परिताप दूर हाता है ।

दुर्योधनन ता सोफ साफ कहा धम क्या है मैं जानता हू । तकिन असरी तरफ मेरी पवति ही नहा होती । अधम क्या है मो भी मैं ठीक जानता हूँ । तकिन अुम टालनका जो ही नही चाहता । जसी बोधी अब शक्ति मर हृदयम बढा है । वह मुग जमा प्ररणा करती है वसा ही मैं करता हू—

‘जानामि धम न च मे प्रवति

जानाम्यधम न च मे निवति ।

केनापि देयेन हृदि स्थितेन

यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ॥

दुर्योधन रजोगुण और मयुना मूर्ति था । सत्त्वगुणो अजु न भी

गीतामे भगवानसे पूछता है, "हे भगवान, अिच्छा न होते हुअे भी मानो कोमी अुसे जवरदस्ती जोड देता हो, अिम तरह किमकी प्रेरणामे मनुष्य पापका आचरण करता है ?" —

"अथ केन प्रयुक्तोऽयम् पापं चरति पूरुष ।
अनिच्छन् अपि वाष्णोय ! बलात् अिव नियोजितः ॥"

यह मव बताता है कि मनुष्यमे अनेकानेक दोष भरे हुअे है । जिसने-जिसने दोष किया अुसे कतल करनेका अगर निश्चय किया जाय तो शायद ही दो-तीन व्यक्ति बच पायेंगे । (भार शायद ही पर है ।) मानव है ही दोषोसे भरा हुआ—

"स्खलितः स्खलितो वध्य ' अिति चेत् निश्चितम् भवेत् ।
द्वित्राः यद्ध्येव शिष्येरद्; बहुदोषा हि मानवाः ॥"

अैसी हालतमे मनुष्य क्या करे ? धर्मशास्त्र कहता है कि अपराधी पश्चात्ताप करे और प्रायश्चित्त करे । जो भूल अपने हाथो हो गयी, अुसके लिये जब तक मोह है, मनुष्यको प्रसन्नता होती है । लेकिन मोह दूर होने पर गुनाह होनेके 'पश्चात्' मनुष्य 'ताप' करने लगता है, दुखी होता है, अुसे रज होता है । अिम पश्चात्ताप यानी मायूसीके द्वारा अुसका पाप कमोवेश धुल जाता है । अगर गुनाह बडा है और मोह जवरदस्त है, तो पश्चात्ताप पूरा नहीं होता, जोरोसे नहीं होता । अैसी हालतमे पश्चात्तापकी मददमे प्रायश्चित्त करना पडता है ।

प्रायश्चित्त वह तप है, जिसके द्वारा मनकी शुद्धि होती है ।

'प्रायो' नाम तपः प्रोक्तं 'चित्तं' मानस(निश्चय)मुच्यते ।
तपो-निश्चय-संयोगात् प्रायश्चित्तम् अिति अियते ॥

किया सो किया अब आयन्दा अैसा काम फिरमे नहीं करूँगा अैसा निश्चय करना और निश्चयको दृढ करनेके लिये अुपवास आदि

तप करना अमे द्विविध कायका प्रायश्चित्त कृत है ।

जब मनुष्य समाजके लिये कुछ गुनाह करता है तब समाज देखनेको नहीं बठता कि गुनहगारको क्या हुआ कामके लिये पश्चात्ताप हुआ है या नहीं । और पश्चात्ताप हुआ भा हा ता भा जिसका अस्तु नुकसान किया हा अस्तुका तो भगतान करना ना चाहिये । अिसलिये समाज दोषा आत्मीको मजा करता है । जिस तरह प्रमाण दोष, गुनाह पापके लिये हमारे पास दो अंगज है । (१) पापा स्वयं पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त करे । (प्रायश्चित्त किस रूपसे करना कितनी मात्राम करना अिसका नियम करनेके लिये दाय करनेवाले व्यक्तिको अमके गुरुजन मदद अवश्य कर सकन है । तकिन प्रायश्चित्त ता स्वच्छान ही करनेकी चीज होती है ।) (२) जबवा समाज उस आत्मीके दोषकी जांच करके दोषकी मात्राके अनुमार भुम सजा करे या दण्ड करे ।

प्रायश्चित्त व्यक्ति स्वच्छास कर जाता है । अुसमे गुरुजन भी धमगास्व मदद करते ह । सजा समाजरी ओरमे सरकार करता है जो सरकारको दण्डके कानून मन्त करत ह ।

हमारे देशमे सजा करनेका काम जानि ससना हा अस्तर कर लर्न था । अिसमे भी जमे राजसत्ताकी बस हा नातिसत्ताकी मन्त धमगास्व करता था ।

कभी कभी गुनहगार स्वयं राजाके पास जाकर अपन गुनाहके स्वीकार करना था और राजामे सजा माग जाता था ।

गांधाजीके आश्रममे रहनेवाले सय मामूली आत्मी ही थे । अुन हावा कओ दाय ही जान थ । आश्रमकी स्थापना सत्य और अहिंसाके बुनियात्पर हानके कारण आश्रममे सजाके लिये बिल्कुल स्थान न था ।

(अगर किसी लडकेने पढाओके वर्गमे गरारत की तो अउसे वर्गके बाहर निकाल दिया जाता था। लेकिन असका अुद्देश्य गरारती लडकेको सजा करनेका नही था। वर्गके बाकीके लडकोको गरारतसे बचानेका था। किसी बीमारको गहरकी बस्तीसे दूर करते हैं या अम्पतालमे पहुँचा देते हैं अुसी तरह आत्मरक्षाका वह प्रकार था।)

मैंने अूपर कहा कि गाधीजीके आश्रममे सजाके लिये अवकाश नही था। किन्तु दोषका प्रायश्चित्त करनेके लिये गुनहगार व्यक्ति स्वय अुपवास आदि कुछ-न-कुछ तप कर लेता था। अक्सर गाधीजीके पास जाकर अपनी भूल प्रकट कर गाधीजीसे प्रायश्चित्तके बारेमे सलाह ली जाती थी।

गाधीजीका प्रधान नियम यह था कि जिसने दोष किया, नियम-भंग किया वह मुवहकी या गामकी प्रार्थनाके समय सब आश्रमवासियोंके सामने और मेहमानोंके सामने भी अपने दोषका अिकरार करे। गाधीजीका कहना था कि पाप अघेरेमे, अेकान्तमे, गुप्ततामे ही बढता है। पापको खुल्ला कर देनेपर पापकी मात्रा अेकदम घट जाती है और तपमे पुण्यका अुदय होने लगता है।

प्रार्थनाके समय, सबके सामने अपना पाप प्रकट करनेकी जवरदस्ती किसीपर की नही जाती थी। लेकिन गाधीजी अपनी पूरी शक्ति लगाकर अंने प्रायश्चित्तनीको अपना पाप प्रकट करनेके लिये प्रोत्साहन देते थे।

कभी-कभी दोषी और प्रायश्चित्त व्यक्तिकी अिजाजत लेकर वे स्वय अुसके दोषोंको, पाप या गुनाहको प्रकट कर देते थे। अिसमे भी गाधीजीकी अहिमा ही काम करती थी। आदमीको कभी-कभी गरमके मारे बोलना भी मुश्किल हो जाता है। कभी-कभी पञ्चानाप करनेपर भी अपने पापका वर्णन सौम्य करनेका लालच होना है। और

लालच तो बहुत बुरा है। जब पापको खुला कर देना है प्रगट करना है तब उसमें सकोच क्यों किया जाय ? लेकिन मनुष्यकी हिम्मत नहीं होती। प्रायश्चित्त करते समय भी मनुष्य कुछ-न-कुछ ढक्कना चाहता ही है। असी हालतमें व्यक्तिकी कमजोरी ध्यानमें रखकर ही गांधीजी स्वयं उसकी ओरमें दोषपा विस्तारमें बणन कर देते थे। और दोषीको प्रायश्चित्त उपस्थित रहकर वह सारा मुनता पड़ता था।

दोषीकी ओरमें पूरा अिकरार करनेके बाद गांधीजी आश्रमवासियों से कहते थे कि जितना कहना जरूरी था सब मैंने कह दिया है। अब ज्यादा समयनकी या ढूँढ निकालनकी कोशिश कोशिश न करे। और वे यह भी कहते थे कि प्रायश्चित्तने प्रायश्चित्त किया है। अब उसके प्रति कठोरता, तुच्छता या अपहाम नहीं बताना चाहिए। मनुस्मृतिमें भी लिखा है—

‘कृत निर्णेजनाश्च न जुगुप्सेत क्वहचित् ।’

—जिन्होंने प्रायश्चित्त करके अपना पाप धो डाला है उनकी ओर जुगुप्सा तिरस्कार तुच्छता या अपहाम बरतना नहीं चाहिये।

गांधीजी सबको यह भी समझाते थे कि किसीके हाथों दोष हुआ तो दूसरे यह न मान कि हम पुण्यात्मा हैं हम तो श्रेष्ठ हैं। पाप तो हर आदमी से हो सकता है। अगर नहीं हुआ है, तो वह शीश्वरकी ही कृपा है।

और भी एक बात है। सत्यके पालनका यह भी अंक अंग है कि हम मधुमुच जैसे हैं वम ही दुनियाके सामने पेश हो जायें। दुनिया हम वम ही पहचाने। अिम तरहमें चलना आसान नहीं है लेकिन पश्चात्ताप और जाहिरा प्रायश्चित्त करनेमें हम दुनियाके सामने खुल जाते हैं।

अिमका दण्ड चाह जितना हो लेकिन असम अक आराम तो रहता ही है कि दुनियाके सामने दण्ड करनेका आवश्यकता नहीं रहती।

जिससे अके तरहका आराम मिलता है और आगे बढ़नेका रास्ता साफ हो जाता है ।

गाधीजीने अपने लिये हमेशा ही यह कठोर मार्ग चलाया । और उसका लाभ पहचाननेमे ही वे दूसरोको इसी मार्ग पर ले जानेको अतुसुक रहते थे । दण्ड या सजाके मार्गके ही जो आदी होते थे उनको यह प्रायश्चित्तका मार्ग अजीब-सा लगता था । वे अन्दर-अन्दर कहते थे— “बड़ा विचित्र है आश्रमका यह तरीका । चाहे सो पाप करो और अके दफा सबके सामने आकर कह दो कि हमसे असा हुआ । थोडा-सा रो लो । और छुट्टी पाओ । कितना आसान कर दिया है महात्माजीने ।” लेकिन असे लोग भी धीरे-धीरे समझ गये कि सबसे बड़ा पाप है असत्य और अपने दोषको छिपाना । दोष और पापका सबके सामने स्वीकार करने पर आदमी तथा ही मनुष्य बन जाता है । गाधीजीकी प्रेरणासे जिन लोगोने यह तरीका आजमाया उनका तनिक भी नुकसान नहीं हुआ । वे शुद्ध और निर्भय हुअे और नम्रताके साथ वे जोरोमे आगे बढ़ भी सके ।

पापका प्रायश्चित्त और गुनाहके लिये समाज या सरकारकी ओरमे होनेवाली सजा दोनोके बीचका फर्क अपूर स्पष्ट किया ही है । कभी-कभी यह फर्क साफ नही हो सकता था ।

गाधीजी आश्रमके सस्थापक, आश्रम-व्यवस्थाके सर्वेसर्वा थे । जिस-लिये आश्रमके बारेमे सब ‘अधिकार’ अन्हीके थे । आश्रममे किने रखना किमे नही रखना, नियम बनाना, उनमे तबदीली करना या अन्हे रद्द करना, सब-कुछ गाधीजीके अधिकारके अन्तर्गत था । साथ-साथ गाधीजी आश्रमवासियोके नेता और गुरुजन भी थे । सब आश्रमवासियोकी धर्म-बुद्धि (Conscience) गाधीजी ही थे । जिसलिये गाधीजीकी सत्याह ग्य नमाहत कभी-कभी हुक्म या सजाके रूपमे लिये जाते थे ।

अब दिन किसीसे आर्थिक व्यवहारम अपराध हुआ। गांधीजीन जाहिरा तौरपर पश्चात्ताप करनकी सूचना तो दी ही लेकिन साथ साथ यह भी कहा कि क्याकि आर्थिक अपराध हुआ है तुम्हारे पास जो-कुछ भी द्रव्य संग्रह हा जुसम मुक्त हो जाआ। सारी रकम या पूंजी आश्रम को दे दो।

अब असि हम सजा कह या प्रायश्चित्त ? गांधीजी अस प्रायश्चित्त हो कहते है। मैंने भा अम प्रायश्चित्त ही माना। लेकिन गांधीजीकी नसीहत नती मानी जाती ता गांधीजी कह सकत थ कि प्रायश्चित्त स्वच्छा ना सवाल है। लेकिन जो भी व्यक्ति प्रायश्चित्त करनक लिय तयार नही है असे मैं आश्रमम कस रख सकता हू ? यह होता था गांधीजीका धमसकट। असलिअ प्रायश्चित्त गांधीजीकी जिच्छा हो या न हो परिणाममें सजाका हा रूप हो जाता था। सिवाय कि जादमी स्व छाम आश्रम छोडना पसंद करे।

गांधीजीकी नसीहतम दूसरा भी अब जबरदस्त हिम्मा रत्ता था जो तजास भी भयानक साबित होता था।

जिस किसीक भी हाथस धाडा भी जपराग हो जाय और गांधीजी अमुने प्रायश्चित्तका रास्ता बताव और असा प्रायश्चित्त करनकी अमु व्यक्तिकी समारी न ही तो गांधीजी सोचन लगत थ कि प्रायश्चित्तरूपी धमकी बात अितनी स्पष्ट होते हुआ भी दोषी व्यक्ति नही समन पा रहा है, तो अमु व्यक्तिम नतिक जागतिकी जगह नतिक जडता आ गजी है। अमे दोषका अिलाअ करना जरूरी है।

अमे समयपर गांधीजी स्वय अुपवास यान फाका करनपर अुत्सुक हो जात थ। या अपन हा गाऊ पर तमाचा मार देत थ या सिर कूटन थ। यह तो भावनाप्रधान या भावक आश्रमवासियोंके लिय सजास भा

भयानक, कठोर और हिंसक साबित होता था। और घबड़ाकर आदमी गान्धीजीका बात मान भी जाता था।

आश्रममें आनेवाले चर्चाप्रिय कभी लोग पूछने थे कि यह नैतिक जबरदस्ती—moral coercion—हिंसक है या नहीं? दूसरे जवाब देते कि आजका समाज गुनहगारोको फाँसी तककी अनेक कडी सजाअे देता है। और उसमें सजा पानेवालेकी शुद्धि या अुन्नति होती है अँसा अनुभव नहीं है। केवल अपने सन्तोषके लिये, केवल बदला लेनेके सन्तोषके लिये सजा कर लेने है। अँमे समाजको क्या अधिकार है कि किसीकी अुन्नति के लिये और नैतिक जागृतिके लिये अुस पर कुछ प्रभाव डाला तो अुसमें भी हिंसा देखे? सीधी सजा ता प्रभाव डालनेवालोको भुगतनी पडती है। गुनहगारको बुरा तो लगता है, लेकिन अुसकी नैतिक भावना जाग्रत होती है।

अिस विषयके अनेक पहलू है। मानवजातिने कानूनके द्वारा गुनाह और अुसकी सजाका अेक बहुत बडा विज्ञान या शास्त्र बनाया है। पश्चात्ताप या प्रायश्चित्त और तपके वारेमें दुनियाके सब धर्मोंने किसी समय बहुत-कुछ सोचा था। वे सब बाने आज कुछ पुरानी-सी हुअी है। जब मानसशास्त्र या चित्तविज्ञान स्थूलसे सूक्ष्म हो रहा है, प्रायश्चित्तकी बाते नये सिरेसे सोचनी चाहिये। अिस विषयके पुराने विस्तारमेंसे रग्वने लायक क्या है सो भी देखना चाहिये। आश्रमने िस वारेमें काफी अनुभव लिया था। अुसका भी वयान अनेक लोगोके द्वारा अिकट्ठा हो जाय यह जरूरी है।

अब दिन किसीस आर्थिक व्यवहारम अपराध हुआ। गाधीजीन जाहिरा तोरपर पश्चात्ताप करनका सूचना तो दी ही लेकिन साथ-साथ यह भी कहा कि क्याकि आर्थिक अपराध हुआ है तुम्हार पास जो-कुछ भी द्रव्य मग्रह हो जूसस मुक्त हो जाओ। सारी रकम या पून्नी आश्रय को दे दो।

अब जिस हम सजा कह या प्रायश्चित्त ? गाधीजी अुम प्रायश्चित्त ही कहते हैं। मैंन भी अस प्रायश्चित्त ही माना। लेकिन गाधीजीका नसीहत नहीं मानी जाती ता गाधीजी कह सकत थ कि प्रायश्चित्त स्वच्छा नर सवाल है। लेकिन जो ना व्यक्ति प्रायश्चित्त करनका लिय तयार नहीं है अुस में जाधमम कस रख सकता ह ? यह होता था गाधीजीका धमसकट। जिसलिअ प्रायश्चित्त गाधीजीका जिच्छा हो या न हो परिणामम सजाका ही रूप हा जाना था। सिवाय कि आत्मो स्व छान आश्रम छोडना पसंद करे।

गाधीजीकी नसीहतमे दूसरा भी अब जबरदस्त हिम्मा रत्ता था जो तजास भा भयानक साबित होता था।

जिस किसीके भा हाथम थोडा भी अपराध हा जाय जोर गाधीजी अुमे प्रायश्चित्तका रास्ता बताव और असा प्रायश्चित्त करनकी अम व्यक्तिकी तयारी न हो तो गाधीजी मोचने लगते थ कि प्रायश्चित्तरूप धमकी बात अितनी स्पष्ट हाते हुआ भी दापा व्यक्ति नहीं समन पा रहा है, सो अुम व्यक्तिम नसिक जागतिकी जगह नसिक जडता आ गयी है। अंमे दोषका अिलाज करना जरूरी है।

अमे समयपर गाधीजी स्वय अुपवास यान फाका करनपर जुतान्क हो जाने थ। या अपन हा गाँ पर नमाचा मार देने थ या निर कूटत थ। यह ता भावनाप्रधान या भावुक आश्रमवासियोक लिय सजास भा

भयानक, कठोर और हिंसक साबित होता था। और घबडाकर आदमी गा-गीजीका वात मान भी जाता था।

आश्रममे आनेवाले चर्वाप्रिय कअी लोग पूछने थे कि यह नैतिक जवरदस्ती—moral coercion—हिंसक है या नही ? दूसरे जवाब देते कि आजका समाज गुनहगारोको फाँसी तककी अनेक कडी सजाअे देता है। और अुससे सजा पानेवालेकी शुद्धि या अुन्नति होती है अँसा अनुभव नही है। केवल अपने सन्तोषके लिये, केवल बदला लेनेके सन्तोषके लिये सजा कर लेने है। अँसे समाजको क्या अधिकार है कि किसीकी अुन्नति के लिये और नैतिक जागृतिके लिये अुस पर कुछ प्रभाव डाला तो अुसमे भी हिंसा देखे ? सीधी सजा ता प्रभाव डालनेवालोको भुगतनी पडती है। गुनहगारको बुरा तो लगता है, लेकिन अुसकी नैतिक भावना जाग्रत होती है।

अिस विषयके अनेक पहलू है। मानवजातिने कानूनके द्वारा गुनाह और अुसकी सजाका अेक बहुत बडा विज्ञान या शास्त्र बनाया है। पश्चात्ताप या प्रायश्चित्त और तपके वारेमे दुनियाके सब धर्मोने किसी समय बहुत-कुछ सोचा था। वे सब वाते आज कुछ पुरानी-सी हुअी है। जब मानसशास्त्र या चित्तविज्ञान स्थूलसे सूधम हो रहा है, प्रायश्चित्तकी वाते नये सिरेमे सोचनी चाहिये। अिस विषयके पुराने विस्तारमेसे रखने लायक क्या है सो भी देखना चाहिये। आश्रमने िस वारेमे काफी अनुभव लिया था। अुसका भी वयान अनेक लोगोके द्वारा अिकट्टा हो जाय यह जरूरी है।

आश्रम कलके और भविष्यके

गांधीजीने म्यायी रूपसे भारत लौटत ही अपने आश्रमकी स्थापना की। बुसे बु होने अपनी अच्छी-सी अच्छी कृति मानी। आश्रमकी सफ लता निष्कलता मेरी ही सफ लता निष्कलता है अमा वे मानने थ कहते थ।

आश्रमका प्रभाव लगेके जीवन पर अच्छा पल। गांधीजीके अिस आश्रमके नमून पर देगम अनेक आश्रम स्थापित हुअ। था जमनालालजी न विनोबाको नेकर वर्धाम नागनाडीम और पौनारम आश्रम चलाया। गांधीजी स्वय सेवाश्रम जाकर रह। श्री गकरलाल बकरने वम्बडीके पास साधकाश्रम कुड तिन चलाया। बुसमे श्री वेणवराव देगपाडकी सहायता थी। बगाश्रम प्रफ लचन्द्र घोष जस अनेक माथियान अभयाश्रम चलाया। विहारम मदाकत आश्रमकी स्थापना श्री मजरु हकने की। और अब राष्ट्रपति डा० राजद्रवाबूका वह स्थान हा गया है। अम अस अनेक आश्रम दगम स्थापित हुअ। चंद आश्रम कवल खादीका काम ले बठ। दूसरान हरिजन कायमे अपनी सारी शक्ति के लित की जिसम श्री मामा फल्केका आश्रम गायद सबप्रथम था। बरहज दोहरीघाट आश्रम अनेक स्थानक आश्रम भी याद आते है। राजाजीके आश्रमका ता हम कम भूल सकते ?

आज अिन सब आश्रमोंकी स्थिति क्या है ? अनुस लोकाको कौन सी पररणा मि लता है ? गांधीजीके अक आश्रममेस रचनारमक काय करन कागे अखिल भारतीय मस्थाअ अनेक निकली। अिन सगकी हा ल आज कसी है ?

मस्थाअे सब चलती है । समाजको अुनमे कुछ सेवा भी मिलती है । स्वराज्य सरकारकी ओरमे, गाधी स्मारक निधिकी ओरसे और स्थानिक जनतासे अैसी सस्थाको मदद भी मिलती है । यह सब ठीक ही है । लेकिन क्या आजके भारतको, आजकी दुनियाको अुनसे कुछ सविशेष प्रेरणा मिलती है ? अनसे प्रेरणा लेकर क्या सामाजिक जीवनमे क्रान्ति हो रही है ? जो प्रेरणा शिक्षा-मस्थाओमे समाजको नहीं मिलती, वह अगर अिन आश्रमोसे मिले तो अिनका होना कृतार्थ है । अिन सब सस्थाअके सचालक मुयोग्य है, निष्ठावान हैं, कर्मठ है । अिन सस्थाओकी टीका-टिप्पणी करनेका तनिक भी अुद्देश्य नहीं है ।

लेकिन थोडा चिन्तन अवश्य करना है । गाधीजीके जीतेजी अिन सस्थाओकी टीका-टिप्पणी नहीं होती थी सो नहीं ।

गोखलेजीके Servants of India Society (भारत सेवक समाज) के अध्यक्ष श्रीनिवासशास्त्रीको सत्याग्रहाश्रमके प्रति तनिक भी आकर्षण नहीं था । अुसकी वात हम न करे । वे moderate और आधुनिक जो ठहरे ! लेकिन श्री जवाहरलालजी, सरदार वल्लभभाजी और आचार्य कृपलानी जैसे गाधीजीके राजनैतिक साथी भी आश्रम-जीवनकी आलोचना करते थे ।

अिस वातको हम भूल जाये । स्वयं गाधीजीने सत्याग्रहाश्रमके प्रत्यक्ष जीवनको सोचकर तय किया कि आश्रम अपने आदर्श तक नहीं पहुँच रहा है, अिसलिये अुन्होंने आश्रमका नाम बदलकर अुमे अुद्योग-मन्दिरका नाम दिया । यह नाम चला नहीं । सत्याग्रहाश्रमका नाम ही कायम रहा । आगे जाकर गाधीजीने सरकारकी दमन-नीतिके निषेधमे अुने आश्रमका विसर्जन किया और वे वर्धा चले गये । जो सत्याग्रहाश्रम था अुसकी जायदाद हरिजन आश्रमको दे दी । अब वह श्री परीश्रितलाल मजुमदारकी निगगनीमे अच्छी तरहमे चल रहा है ।

गाधीमतके कायकर्ताआत्री सहायताके लिअ और उनके मगटनके लिअे श्री जमनालालजीने गाधी-मवा मघकी स्थापना की। श्री बिसोर-लाल मसहवालालने बडी निष्ठाके साथ अुम चलाया। गाधीजीन अुम मवा-मघका भी बगालम पन्ना नदीके किनारे विमजन किया।

यह सब असा क्यों हुआ ?

अक बात स्पष्ट है कि गाधीजीने मनुष्यजातिकी शक्ति-अशक्तिकी पहचानकर शक्ति बढानेके लिअ भरसर कोशिश की। अुहोंने सखा कि आजका मनुष्यअितना अू चा नहीं चर सकता। प्रधान धमको गौण कर पर्याय धम चलानेका अिलाज सयके मव धममस्थापक आजमाते आय है। गाधीजीने भी थोडी कुछ सौम्यता धारण की। लेकिन असम के प्रगति नहीं देख सके।

दूसरी अक बात ध्यानमे आती है। ये सारे आश्रम सबधर्मी हात अुन भा हिन्दुअोक ही चलाये अुन थ। अिनम मुसलमान पारसी औसाभी यहूदी आदि धर्माभिमानी लोग बहुत कम सख्याम आय और जो आये अुनमेसे बहुत ही कम आश्रम जीवनके साथ ओतप्रोत हो सके।

और अक बात। गाधीजीके आश्रमका खचा चन्द धनी लाग नन थे। गाधीजीका व्यक्तित्व अिनना प्रभावगाली था कि अिन आश्रमोम दाताआका प्रभुत्व तनिर भी नहीं था। लेकिन मुय मालूम नहीं कि कौन-कौनम आश्रम सामाय जनताक पात्री-पसेस चल होग।

अिन सब आश्रमाका वायुमण्डल सयम प्रधान था। लेकिन अुसम किसीको भी सन्ताप नहीं हुआ। जो लोग जीवनम सयमका प्रधानता नहीं मानत थ अुनको अुसीकी गिवायत थी ही। और जो लोग सयमम मानत थ अुनका सिकायत था कि अिन आश्रमम सयमक नियमोका ता पालन होता है। लेकिन सयमकी मुवास या असका प्रभाव आश्रम-जावनम शील नहीं पन्ता।

आश्रम-जीवनमें अनेक सिद्धान्तोंका दृढतासे पालन करनेकी बात थी। अके ही नियमका पालन करनेवाले बहुतसे लोग अके रह सकते हैं। अनेक नियमोंका पालन करनेकी बात आती है तब किसीमें अकेकी, किसीमें दूसरेकी कमजोरी, तो किसीमें तीसरेकी। अमे वायुमण्डलमें परस्पर सहानुभूति टिक नहीं सकती, असन्तोष स्थायी रूप पकड़ता है और धृति क्षीण होती है।

ये कठिनाइयाँ तो थी ही। लेकिन मुख्य सवाल यह था कि आश्रम-के व्रत और नियम और आश्रमी-जीवन आत्म-शुद्धि-द्वारा मोक्ष-साधनको प्रधानता देता है या समाज-सेवा द्वारा सामाजिक अुन्नतिको ? जिसकी स्पष्टता कभी नहीं हुयी। गाधीजीके मनमें अैसी दुविधा न थी। वे दोनोंका समन्वय कर सकते थे। लेकिन वह तो अुनके व्यक्तित्व-की ही खूबी थी।

नतीजा यह हुआ कि अिन आश्रमोंमें लोगोंकी अभिरुचि मन्द पड़ी। जहाँ लोकमेवा प्रधान हुयी वहाँ आश्रमवासियोंकी आश्रमिता ही गायब हुयी।

तत्त्वनिष्ठा, व्रत-पालन, मयम, त्याग और चारित्र्यमें जो अूँचे थे अुनमें समाजमेवाकी, लोकसंग्रहकी, सफलताकी और नये-नये साधकोंको आकर्षित करनेकी शक्ति बहुत कम पायी गयी। जो व्यवहारकुशल थे, अन्यान्य रचनात्मक कार्यमें लग गये। और जिनको रजोगुणी राजनीतिमें दिलचस्पी थी वे अुस क्षेत्रमें जाकर प्रभावशाली बन गये।

सर्वांगीण आश्रमवृत्ति कार्यमाधक न बनी। बहुतमें आश्रमवासियों-का शक्तिमें अेकागिता होनेके कारण अुन्होंने अपना-अपना क्षेत्र ढूँढ़ लिया। कअी लोग मचालनमें डूब गये और थोडे चिन्तनमें।

अव देशकी हालत अैसी बनी है कि भौतिक जोर औद्योगिक प्रगति

गाधीमतके वायकर्ताआकी सहायताके लिअे और अनक मगटनके लिअे थी जमनागलजाने गाधी-मवा सघनी स्थापना की । श्री बिंसार-लाल मगहवाडाने वडा निष्ठाके साथ अुम बनाया । गाधीजीन अुम मवा सघका भी बगालम पद्या नलीक विनार विसजन किया ।

यह सब असा क्यों हुआ ?

अक बात स्पष्ट है कि गाधीजीन मनुष्यजातिकी शक्ति-अशक्तिका पहचानकर शक्ति बनानेके लिअे भरमक कोशिश की । जुहाने दस्ता कि आजका मनुष्य अितना अू चा नहीं चर सकता । पधान धमके गौण कर पदाय धम चलानका अिअज सबके सब धममध्यापक आजमाते आम हैं । गाधीजीन भी थोडी कुछ सौम्यता धारण की । लेकिन अुमम वे प्रगति नहीं देख सके ।

दूसरी अक बात ध्यानमे आती है । ये सारे आश्रम सबधर्मी हात हुअे भा हिन्दुआके हा चलाये हुअ थ । अिनम मुसलमान पारसी बीसाबी, यहूदी आदि धर्माभिमानी लोग बहुत कम सग्याम आय और जा आये अुनमेंसे बहुत हा कम आश्रम जावनके साथ जोतप्रोन हो सके ।

और अेक बात । गाधाजाके आश्रमका सर्चा चद धनी लाग द थ । गाधाजीका व्यक्तित्व अिनता पभावशाली था कि अिन आश्रमाम दाताआका प्रभुत्व तनिक भी नहा था । लेकिन मुष मालूम नहीं कि कौन-कौनम आश्रम सामाय जनताक पाओ पससे चल होग ।

अिन सत्र आश्रमाका वायुमण्डल सयम प्रधान था । लेकिन अुसम किमाके भा सन्तोष नहीं हुआ । जो लाग जावनम मयमकी प्रधानता नहीं मानत थ अुनको अुसीकी गिहायत थी ही । और जा लोग सयमम मानत थ अुनका गिवायत था कि अिन आश्रमाम मयमके नियमोका ता पाउन हाता है । लेकिन मयमकी भुवास या अुमका प्रभाव आश्रम जावनम शीख नहीं पन्ना ।

आश्रम-जीवनमे अनेक सिद्धान्तोका दृढतासे पालन करनेकी बात थी। अके ही नियमका पालन करनेवाले बहुतसे लोग अकेत्र रह सकते हैं। अनेक नियमोका पालन करनेकी बात आती है तब किसीमे अकेकी, किसीमे दूसरेकी कमजोरी, तो किसीमे तीसरेकी। असे वायुमण्डलमें परस्पर सहानुभूति टिक नहीं सकती, असन्तोष स्थायी रूप पकडता है और धृति क्षीण होती है।

ये कठिनाधियाँ तो थी ही। लेकिन मुख्य सवाल यह था कि आश्रम-के व्रत और नियम और आश्रमी-जीवन आत्म-शुद्धि-द्वारा मोक्ष-साधना को प्रधानता देता है या समाज-सेवा द्वारा सामाजिक अन्नतिको ? जिसकी स्पष्टता कभी नहीं हुयी। गाधीजीके मनमे अँसी दुविधा न थी। वे दोनोका समन्वय कर सकते थे। लेकिन वह तो अुनके व्यक्तित्व-की ही खूबी थी।

नतीजा यह हुआ कि अिन आश्रमोमे लोगोकी अभिरुचि मन्द पड़ी। जहाँ लोकमेवा प्रधान हुयी वहाँ आश्रमवासियोकी आश्रमिता ही गायब हुयी।

तत्त्वनिष्ठा, व्रत-पालन, सयम, त्याग और चारित्र्यमे जो अूँचे थे अुनमे समाजसेवाकी, लोकसंग्रहकी, सफलताकी और नये-नये साधकोंको आकर्षित करनेकी शक्ति बहुत कम पायी गयी। जो व्यवहारकुशल थे, अन्यान्य रचनात्मक कार्यमे लग गये। और जिनको रजोगुणी राजनीतिमें दिलचस्पी थी वे अुस क्षेत्रमे जाकर प्रभावशाली बन गये।

सर्वांगीण आश्रमवृत्ति कार्यसाधक न बनी। बहुतमे आश्रमवासियों-का शक्तिमे अेकागिता होनेके कारण अुन्होने अपना-अपना क्षेत्र ढूँढ लिया। कअी लोग सचालनमे डूब गये और थोडे चिन्तनमे।

अब देशकी हालत अँसी बनी है कि भौतिक और औद्योगिक प्रगति

तो हो रही है लेकिन भावनात्मक आश्रमवाद राष्ट्र पर जीवनभरसे हट रहा है। मनुष्यवृत्त अकारिणी अदूरदृष्टि, स्वायत्त अभिमान मत्तात्म, अशुभ अभिमान अहमहमिका अहममेयसी भावना अमायाजिक और अराजकीय दोष बढन लग हैं। यह सब देखकर चन्द लोकाके मनमे विचार आ रह है कि गाधीजीन दशम जो चारित्र्य-शुद्धिका जीवन-शुद्धिका प्रभाव दिखामा वह गायद अुनके आश्रमी प्रयोगके कारण ही होगा।

असलिये अब फिरसे अम आश्रमाकी स्थापना क्यों न की जाय ? लोगाने गाधीजीके पुण्यका फल तो ले लिया। किन्तु अुनका पुण्यभाग छोड़ दिया। अब हम दाप समझ गअ। असलिये पुण्यभाग पर फिरसे क्या न जायें ? आश्रमी प्रयोग फिरसे मजीवन क्यों न कर ? असा अेक नौ आश्रम जगर प्रभावशाली सिद्ध हुआ तो सारे देशका वायुमण्डल सुधर जायगा और राष्ट्रके नेताआकी प्रधान चिंता कम हो जायगी।

यह विचार मावत्रिक नहीं है। थोडे लोगा तक सीमित है। अुनको मूलना नहीं कि यह सब कैसे किया जाय ?

सच वान तो असी दीख पडती है कि अब भविष्यके लिये पुराने ढंगके आश्रम चलाय ता भी काम नहीं द सकेंगे। प्राचीन कालकी अुज्ज्वलता स्मरकर जिन्हान आश्रम-जीवनके प्रयोग किये अुनकी प्रेरणा सही था। किन्तु वह कायपद्धति और वह कायक्रम भविष्यके लिये अनुकूल नहीं होगा। आयुष्म जो सस्कार-केन्द्र और सहजीवनके प्रयोग किय जायेंगे अुनका बुतियात्म भूतकालके गौरवका नहीं किन्तु भविष्यकालका अुज्ज्वलताका स्पष्ट दान होना चाहिये। भारतीय अनुभवके निचाडका हम अपना पूजा बना सकने हैं किन्तु हम जगत्की सब मसृष्टियाका अनुभव आत्माय भावसे अपनाना हागा। गंगा-यमुना धगर पवित्र नदियाँ है तो नील अिरावती यान्साकेंग सान ह्याभिन, यम्प हृदयन, अँम-नान आदि नदियाँ भा अुनती ही पवित्र है। मनुष्यने

जितनी भी सस्कृतियाँ आजमायी हैं वह सब हमारी भली-बुरी पूँजी है। उसका स्वीकार करके रशिया, अमेरिका, आफ्रिका, और जापान अ० सब देशोंके साथ अुनके गुणदोषोंको भूले विना हमे अपनी आत्मीयता बढ़ानी है और सब देशोंके मानव-हित-चित्तक सज्जनोको हम साथ ले सके अैसे जीवन-केन्द्रोंकी स्थापना करनी होगी। अिसमे सबसे अधिक हम लोगोकी ही कसौटी होगी। वयोकि हम लोगोने अपनी सकुचितताको कभी दफे आध्यात्मिकता माना है। तमोगुणको सत्त्वगुणका जामा पहनाया है। और अलग रहनेमे पवित्रता देखी हे। हमारी पुरानी साधना ही हमारा बुढापा बन गयी है। हमे नये किस्मकी आत्म-शुद्धि करके अपनी दृष्टिमे यौवनकी आस्तिकता लानी पडेगी।

अिस भविष्यकी साधनाका गहरा चिन्तन करनेके दिन आये हैं।

नो हो रही है तबिन भावनात्मक जादूवाद राष्ट्र य जीवनमेसे हट रहा है। मनुचिन्ता जहागिता अदूरदृष्टि स्वाय अभिमान सत्तालोभ, अनाभिमान अहमहमिका अहमूनयसी भादि अनामाजिक और अरा क्तीय दाप बलन उग है। यह सब लेखकर चंद लोकाके मनम विचार आ रह हैं कि गाधीजीन नेम जो चारित्र्य-शुद्धिका जीवन-शुद्धिका प्रभाव दिवाया वह "आय" अुनके आश्रमी प्रयागके कारण ही होगा।

अिसलिये जब फिरम अम आश्रमाकी स्थापना क्यों न की जाय ? लोगोने गाधीजीके पुण्यमाग तो ले लिया। किन्तु अनका पुण्यमाग छोड दिया। अब हम दाप समथ गअ। जिसलिये पुण्यमाग पर फिरम क्यों न जायें ? आश्रमी प्रयोग फिरम मजीवन क्या न कर ? असा अक भी आश्रम अगर प्रभावशाली सिद्ध हुआ तो सारे देशका वायुमण्डल मुधर जाग्रता और राष्ट्रके नेताओकी प्रधान चिंता कम हो जायगी।

यह विचार मात्रिक नहीं है। थोड लागो तक सीमित है। अुनको सूझता नहीं कि यह सब कम किया जाय ?

सब वान तो अमी दीख पडती है कि अब भविष्यके लिये पुराने उगक आश्रम चलाय तो मो काम नहीं द सकेंगे। प्राचीन कालकी अुज्ज्व लना दखकर जिन्हान आश्रम-जीवनके प्रयोग किये अुनकी प्रेरणा सही थी। किन्तु वह कायपद्धति और वह कायक्रम भविष्यके लिये अनुकूठ नहीं होगा। आयत्न जा मस्फार केन्द्र और सहजीवनके प्रयोग किय जायेंगे अुनकी बनियात्म भूतकालके गौरवका नहीं, किन्तु भविष्यकावका अुज्ज्वलताका स्पष्ट दगन होना चाहिये। भारतीय अनुभवक निचाडका हम अपना पू जी बना सकने हैं किन्तु हम जगत्की सब मसृष्टियाका अनुभव आत्मोय भावम अपनाता हागा। गगा-यमुना धगर पवित्र नदियां है तो नील अिरावती, यान्सीकेग सान हाअिन येम हडसन अमेरान आदि नदियां भी अुनकी हा पवित्र हैं। मनुष्यने

जितनी भी सस्कृतियाँ आजमायीं हैं वह सब हमारी भली-बुरी पूँजी है। उसका स्वीकार करके रशिया, अमेरिका, आफ्रिका, और जापान अ० सब देशोंके साथ अुनके गुणदोषोंको भूले विना हमें अपनी आन्वी-यता बढ़ानी है और सब देशोंके मानव-हित-चित्तक सज्जनोंको हम साथ ले सकें अैसे जीवन-केन्द्रोंकी स्थापना करनी होगी। जिसमें सबसे अधिक हम लोगोंकी ही कसौटी होगी। क्योंकि हम लोगोंने अपनी सकुचितता-को कभी दफे आध्यात्मिकता माना है। तमोगुणको सत्त्वगुणका जामा पहनाया है। और अलग रहनेमें पवित्रता देखी है। हमारी पुरानी साधना ही हमारा बुढापा बन गयी है। हमें नये किस्मकी आत्म-शुद्धि करके अपनी दृष्टिमें यौवनकी आस्तिकता लानी पड़ेगी।

जिस भविष्यकी साधनाका गहरा चिन्तन करनेके दिन आये हैं।

बहनोके चापू

[पू० गाधीजीन भारत भ्रमण करत आधमकी बहनाको जा पत्र लिखत जुनका सम्पादन श्री वाराणासीने किया है। जिस किताबकी अहाने जो प्रस्तावना लिखी है उसमें आधमक स्त्री जीवनकी अच्छा गाँधी मिलती है। जिसमें जुम जिस किताबमें परिशिष्टमें स्थान देना उचित माना है।]

आधम जावक वाग्म चर्चा करत हुअ अक बार मैं पू० वापूजीस कहा था कि 'आधमम जितने पुरुष जाय हैं वे सब आपका प्रवृत्ति आकर्षित होकर जाय हैं। राष्ट्रमवा तो सबका आदर्श है ही जुनमें कुछना आकर्षण राजनीति स्वराज्यके लिए है कुछ लोग यह दरकर आय हैं कि हिन्दू धर्मकी पुनरागति आपके द्वारा होगी कुछको अतिना ही आकर्षण है कि आपके जरिये अहिंसा जीवित और प्रभावशाली हान लगी है, कुछना मुख्य आकर्षण असह्यता निवारण हा है जबकि हममें कुछ महत्त्व लेकर जाय हैं कि राष्ट्रीय शक्ति प्रयोग करनेके लिए यह जुनमें स्थान है। मगर यह नहीं कहा जा सकता कि आधमकी स्थिति आधमके जागृका स्वकार आधी है। गगनहन जसी अक दा बहनके अपवात् छाँद ना दाकीकी सब बहन अपने पति मिता या भाजी बगरा निमान-विचार पीछे-पाछे जाआ है। यह स्पष्ट बात है कि आधम-जीवन जुन जबरदस्ती म्वाकार करना पना है। कुछ बहनाक मनमें आधमक आत्मिक प्रति विराय नना वा जगति जकर है। मैं

सिर्फ ब्रह्मचर्यके आदर्शकी ही बात नहीं कहता, मगर हम जो कौटुम्बिक जीवनको गौण बनाकर सामाजिक जीवन वितानेकी तालीम देना चाहते हैं, वह भी कुछको पसन्द नहीं है। हमारी लक्ष्मीवहनमे गाधर्व महा-विद्यालयके सामाजिक जीवनकी आदी होनेके कारण कुछ होगियारी आ गयी है, परन्तु यह देखकर कि जिनमे सामाजिक जीवनका अतुसाह है, अुन्हीको सारा भार अुठाना पडता है, अिस आदर्शके प्रति अुनका भी समभाव नहीं रहा। हमारे भोजनके नियम भी वहनोंको परेशान करते हैं।

“दूसरी बात यह है कि रोज थोडी-थोडी चर्चा करके स्त्रियोको सब कुछ समझानेका धैर्य (धीरज) पुरुष-वर्ग मे कम है। ज्यादातर यही वातावरण दिखायी देता है कि जैसे-तैसे निभा लिया जाय। नतीजा यह है कि स्त्रियाँ आश्रमजीवनको परिपुष्ट बनानेके वजाय शिथिल करनेकी कोशिश करती दिखायी देती हैं। और अिस तरह हमारा वोज बढता जा रहा है। अिसका अुपाय आप ही कर सकते हैं।”

अिस पर बहुत चर्चा हुयी और तय किया गया कि वापूजीको स्त्रियोके लिये अेक कक्षा चलानी चाहिये। वापूजीने अुसमे अेक कीमती बात जोडी। अुन्होंने स्त्रियोके लिये अेक स्वतन्त्र प्रार्थना शुरू की। अुसके सारे श्लोक वापूजीने स्वय ही चुने और स्त्रियोके लिये वक्त निकालकर अुसमे अपनी आत्मा अुडेल दी।

अिस सबका अद्भुत असर हुआ। स्त्रियोमे अेक नयी जागृति आयी। अुनके सवालकी चर्चा होने लगी। आश्रम-वासियोको अुनकी मुश्किलो का अधिक स्पष्ट भान हुआ। कयी विशेष कक्षाएँ चली, और तरह-तरहके प्रश्न हल होनेके लिये पैदा हुअे। फिर तो वापूजीने लगभग क्षेत्र-सन्यास लेकर आश्रममे ही अेक साल वितानेका फैसला किया। अनेक प्रवचन दिये। साल पूरा होनेके बाद वापूजीने दक्षिणकी यात्रा शुरू

की। वे दिन गुजरातके वाढ सक्ठके ५। अुसके वात् म्नासम वाग्रस अधिवेगन हुआ। वापूजी वाग्रसकी राजनीतिमे अलग हा गय थे और अुहोने राजगोपालाचायको अुनक खानीके काममे मदद देनेक त्रिय दक्षिणका सपर किया। अुसी कामके मिलासलम अुहोन लवा-सीलोनका भी दौरा किया। जुडीसा भा गय। गौहाटी वाग्रसके वात् अहोन फिर राजनीतिमे प्रवेश किया और स्वराज्य ल्वा सलाह दनका जिम्मा लिया।

सन् १९२७ २८ और २९ के तीन वषाके दरमियान पू० वापूजानं वह्नाके नाम पत्र लिखर स्त्री मण्डलका अपना जमाया हुआ वातावरण जाग्रत रखनकी वागिनी की। वे स्त्रियोक सामने रचनात्मक कामका कोअी सुझाव रखत और यन्नि वहन अुसे मान लेता तो ब अुठ प्रास्ता हन दत थ। यन्नि ब घबरा जाती या वहमम पड जाती तो फौरन अपना गुपाव वापम लकर या अुस नरम करके अह जमयदान त्त और अम विचारको ठगरी तरह घुमाकर फिरसे अनक सामने ज्याग मफ्तान रखने थ। मपरके दौरानमे स्त्री जागतिक जा तो अुगाहरण अनक सामने आते, अुनके बारेमे वह्नाको लिखकर प्रोत्साहन दत थ। जिस तरह कओ ढगामे प्रयत्न करके वापूजान आश्रममे स्त्री जागतिवा वातावरण जमाया था। अुमके मोठ फल तुर त देखनको मिल।

जत गाधीजीन स्वराज्य आन्दोलनक अग्ररूपमे ढाडी-बूच गुरू की तब आश्रमक बहुतर पुत्र्य और युवक अुनक दग्म गराव हा गय थ और आश्रमके तमाम विभागाना भार आश्रमकी वह्नाने अपन सिरपर ल त्रिया।

आश्रमक वाहरकी वह्नाने भा अुन दिना बडा काम करके त्रियाया। अुममे भी गराववन्नीक त्रिअ गरागवाना पर धरना दनका काम गराव क टक्याराका ममपानेका काम और गराव पीनवात णोगाके धरम जातर गरावक खिलाफ कमर कमनके त्रिअ स्या-गुप्पाको प्रगति करनका काम ना वह्नाने अम्मत त्गमे ही किया था। अन त्रिनाकी दग-जागति

और खास तौर पर स्त्री-जागृत्तिकी याद करने पर आज भी मन आश्चर्य-चकित हो जाता है और बोल उठता है कि 'सचमुच ही अुस जमानेमे कुछ जादू-सा कर दिया गया था।' अिसमे शक नही कि अुन दिनों मनुष्यने जैसे अपने बूतेसे वाहरका काम कर दिखाया था ।

• २ :

वापूजीके पत्रोमे तीन बातोका सतत आग्रह दिखायी देता है

(१) सामाजिक जीवनका महत्त्व वहनोंके मन पर ठसाना (दिलमे पक्के तौरपर अुतारना) और अिस सामाजिक जीवनको जाग्रत करके दृढ बनानेके लिये तरह-तरहके अुपाय करना ।

(२) 'शिक्षाका अर्थ है अक्षर ज्ञान' अिस वहमको मिटाकर शिक्षा का सच्चा अर्थ है चरित्र-निर्माण और जीवनकी दृष्टिसे आवश्यक कौशल, यह नया विचार सबसे मनवाना ।

(३) हम समाज पर और अुसमे भी दवाये हुअे वर्ग पर बोज़ न चने और हमारे जीवनमे किसी-न-किसी तरहसे पाप प्रवेश न करे, अिसके लिये शरीर-श्रम, अुद्योग-परायणता, सादगी और समयके प्रति निष्ठा पैदा करके अुसीका वातावरण स्थिर करना ।

अिन तीन आग्रहोके साथ-साथ तबूरेके मुरकी तरह स्त्री-स्वातन्त्र्य की बात अिन पत्रोमे अखण्ड रूपमे आती ही है । स्त्रा सचमुच अवला नही है, पुरुषोकी आश्रित होनेका अुसके लिये कोअी कारण नही । समाजका नेतृत्व पुरुषोके हाथमे रहे, यह भी कोअी सनातन नियम नही । स्त्री अपने जीवनका अपनी स्वतन्त्र अिच्छाके अनुसार निर्माण और विकास कर सकती हे, और अिसी तरह मानव-प्रगतिमे हाथ बँटा सकती हे । वापूजी वहनोंको अिस किस्मकी शिक्षा अुनकी शक्तिके अनुसार देते कभी थकते ही न थे ।

१६६ आश्रम सहिता

आश्रममें कभी कभी चोर आते थे। अम जसकरका गम नष्टाकर बापूजीके प्रश्न छडा कि जस चोर आस तस वस्तु क्या करें? आश्रममें अगर पुष्प नै ही नहा, तो वहन अपनी रक्षा कर सकगी या नकी?

अस चर्चाके समय ज्ञान बापूजाका जा पत्र लिखे ज यदि जाज हमारे पास गत, तो वह जस कामता मसाला साबिन हाना। जस तो बापूजीके जवाबमें सिर्फ वपना ही की जा मसनी है कि वहनाके पत्राम क्या रखा गगा।

पुष्पन स्त्रा जातिना परावान बनया। अपनी भाग गन्माको प्रधानता दसर ज्मन स्त्राना जाका जेहागी परावीन और कृत्रिम बना दिया। पुष्पना जीप्या आर स्वामित्व बुद्धिक कारण हा स्त्री-जाति अवग जमहाय और अनाव मानी गजा। अस सबका विचार करने पर यहा तय रहा कि स्त्रा रक्षाका जाखिरी जिम्मनारी पुरषानी हा है और जस तस आश्रममें जस भी पुष्प हा स्त्रियाना बचाव करत करत मर मिटना हा अमुगा धम है। यह स्वीकार करनक बाद भी बापूजा ज्ञान है कि जमा भन तो तुम जपन आप और जपन जगम अपनी रक्षा न कर सका नकिन धार गार यह गमित तुम्ह पत्रा ता करनी हा है।

अच्च वण और धमजाधा जातियाके राब जा भन है वन सिर्फ पत्र लिख लागाम हा है या पुष्पाम हा है सा गत नही। स्त्रियाम भा वह अननी या मजबूताक साथ धर किअ वग ह यह जानकर बापूजा जिन पत्राम वहनाका मजदूरनियाक साथ मगाजाकी गाठ गान्तरी प्रग्णा बन है।

आश्रमका वन्नाम कुट्ट सिक्कुट गग जमा ग कुट्ट जपन वनिया जमा या कुट्ट अनुभवनीन या कुट्ट गहरा वानावरणन जात्रा हुआ या ना कुट्ट गावान साधा आश्रम पहुँची ग और यत्र गत भा नन कि गमर अक ग प्रान्तका या। जना जिननी ज्याग विविधता ग वही

अेक भी वात कहते दम वार सोचना पडता हे । असल्लिअे अन पत्रोमे गाधीजीने बहुत ही सावधानीमे अपनी वात रखी है । जितना गले अुतरे, मर्व-सम्मतिमे करना तय हो, अुतना ही करना, वाकीको छोड देना— यह अभयदान तो कदम-कदम, पग-पग पर दिया हुआ ही है ।

अुन्होने प्रारम्भ किया है समय-पालनके आग्रहमे । प्रार्थनामे आना ही है, तो वक्त पर आना चाहिअे । मस्कृतमे 'समय' शब्दके दो अर्थ हे अक है समय यानी वक्त और दूसरा है वचन । अन दोनो अर्थोमे 'ममय प्रतिपाल्यताम्'—यह है वापूजीकी पहली सीख । प्रार्थनामे ममय पर आना, प्रार्थनामे ध्यान लगाना, श्लोक जवानी याद करना, गीताके अध्याय कठमथ करना, अुच्चारणकी तरफ खास तौर पर ध्यान देना— यह सब धीरे-धीरे आ जाता हे । प्रार्थनामे जानेका निश्चय करनेके बाद वह असाधारण कठिनाओके विना टाला नही जा सकता । जिसका निश्चय किया, अुसका पालन होना ही चाहिये । प्रार्थना तो हृदयका स्नान है । जैसे रोज नहानेमे हम नही चूकते, वैसे ही हृदयको शुद्ध करनेवाली प्रार्थना भी हम नही छोड सकते ।

पुराने जमानेमे धर्मनिष्ठाका अर्थ था मन्दिरमे देवदर्शनके लिअे जाना । आजकल भगवान रामचन्द्रने चरखेका रूप धारण कर लिया है । यह राममूर्ति चरखा छोडा नही जा सकता । यज्ञके तौर पर यानी परमार्थके लिअे किये जानेवाले कामके रूपमे चरखा चलाना ही चाहिअे । अस कलिकालमे 'वसन रूप भये श्याम' यह हमे भूलना नही चाहिये । त्याग द्वारा ही जीवन अुन्नत होता है । मगर त्याग यो ही नही हो जाता । सेवाके लिअे, परोपकारके लिअे त्याग करना आसान होता है । अिसी-लिअे चरखा-यज्ञ का आग्रह रखा गया है । यह चरखा नियमित चलाना चाहिअे । नियमित किया हुआ काम माफिक आता है । अेक ही वारमे बहुत-सा करने लगे, तो अुस कर्मसे आत्मा दुखी होती है । प्रार्थना और चरखेका मामूहिक कार्य करने लगे, तो अुसमे आपनमे अेक-दूसरेका और

सबका जीन्दरके साथ सहयोग सधता है ।

असा कहकर गाधीजीने स्त्रियामे पारिवारिक भावनासे भी व्यापक सामाजिक भावना पदा करनेकी कोशिश की है और अिसके लिये जन्दर मे मानसिक विकास करनेकी और बाहरसे अपनमसे जेव प्रमुख मुकरर करके अुने सबकी सेवा करनमे मदद देनेकी बात सामने रखी है । 'बहनाके बीच सहयोग अत्यन्त आवश्यक है । सारे आश्रमका जेव कुटुम्ब माना और अुसके द्वारा वित्र-कुटुम्ब भावनाकी तयारी करो । आज स्थो-सविकाओकी सास जरूरत है क्यारि स्त्रियाके हासमे स्वराज्य की कजी है । तुम कुगल बनकर, पवित्र जीवन बिताकर सारे भारत वषम फल जाआ । लगाका यह खयाल कि स्वा भार और अबला ही हाती है, गलत सावित कर देना । सभाम अिकट्टी होओ तब बहुत बात चीत न किया करो । लगाकी चगडेका नामूर मिटा ही देना चाहिये । अिकट्ट ता अिसलित होत हैं कि हमारे हृदय मित जायें । अित्यादि महत्त्वकी बात समधानेके बाअ गाधीजीन धीरे धार अुह सावजनिक भावनाअ्य सौपा है क्यारि यह चाज स्त्रियाका परिचित क्षेत्र है ।

माननालयक साथ साथ भण्डार आ ही गया । भण्डार सभालन, हिसाब रखनकी बात आ गयी । अिमलिये जुसकी गिना भी लनी ही रहा । यहाँ तक पत्रचनक बाअ बापूजीन स्त्रियाओ वालमन्दिर सौप दन क मिएरिण की ।

स्त्रियाकी गिनाके मामतमे बापूजीन अुनके मामन बहुत हा आमान कायत्रम रता है । अिसन-अतवा मुनावरा रता ज तर मुधारो, अुच्चा रण गढ करा हिसाब अिसना काजा मुअिये बात नहा । अिमक लिअ बाअ बाका गुणाकार और भागाकार तक्का मणित आना चाहिये ।

अमक बाअ जाता है अयोग मअिरका गिना । अिस गि ताम वअन सा बात जा तात है । हम धार धार अिमान, जुगल नगा और ग्वाल

बनना है। पाखाने साफ करनेकी साधना भी राष्ट्रीय शिक्षाका महत्त्वपूर्ण अंग है। हमारे लिये और बच्चोके लिये जब तक दूधकी जरूरत रहेगी, तब तक गोशालाकी चिन्ता भी रखनी ही पड़ेगी।

अिस प्रकार अुन्होंने शिक्षाके आवश्यक अंग स्त्रियोके सामने रखे हैं। मगर वापूजीका खास आग्रह यह है कि सच्ची शिक्षा—अुत्तम-तालीम—हृदयकी ही है। अिसके लिये पहली बात निर्भयताकी है। जन्म-मृत्युका हर्ष-शोक छोड देना चाहिये। अगर जीना अच्छा लगता है, तो मृत्युके वाद जन्म आयेगा ही। और जन्म नही चाहो, तो अिस लोकमे ही मोक्षकी साधना की जा सकती है। अिसलिये दोनो तरहमे मृत्युका डर निकाल ही देना चाहिये।

पुरुषके विना हम असहाय है, अनाथ है, यह खयाल सबसे पहले निकाल देना चाहिये। अिसलिये गहने और शृगार दोनो छोड देने चाहिये। सच्चा सौंदर्य हृदयमे है, अुसीका हमे विकास करना चाहिये। रूप बनाना और गहने पहनना सब विकार बढानेके लिये है। विकारी न होनेका नाम ही ब्रह्मचर्य है। वह सध जाय तो अिसी जन्ममे मुक्ति है। विकार मिट जाय, तो रोग भी मिट जाय। हमे जो जवानी मिली है, वह विकारोको पोषण देनेके लिये नही, बल्कि अुन्हे जीतनेके लिये है। कला हम जरूर सीखे, मगर सच्ची कला सादी और कुदरती होती है। मुघडना और व्यवस्थिततामे बहुत कुछ कला आ जाती है।

स्त्रियोमे जो स्वाभाविक कलावृत्ति होती है, अुसका विचार करके चापूजी कहते है कि प्रदर्शन वगैराका बन्दोबस्त करना अिन्हीका काम है।

स्त्री-सगठनमे जब बीचमे शिथिलता आ गयी, तब अुसका खतरा समझकर गाधीजीने साफ कह दिया कि नियम नरम न किये जायें। नियम नरम करके लागू करनेके बजाय अुन्हे निकाल देना ज्यादा अच्छा

१७० आधम सहिता

है। शिरही न रह सवा गामाजिब जायना विराम न करमा ता अग रह सकता न। जग क्रिया गम मध्यघाते माध भा रह गरती न।

अथव अवसर पर वापूजा अतमुग हावना रग गिगान है। चार जाय तव क्या तिया नाय अमना उदा करन दुअ अज्ञान म्पष्ट न कहा कि म्म अपरिपन्न वनना पाग्य अच्चा नरह नहा वरन आ गफ्तम रहन न, त्रिमासिज चारा हाता न। धमक नाम पर वानना अनक रिनाजामी जउ अगाकर अ नान म्पष्ट कर तिया कि धमपाग्य वा अय है नि स्वाय परापनार विकार पर विजय और वायरताका त्याग। किमी भा वाजकी छिपाना पाप है तयाकि जमायना जम्म हिम्मत—सात्मवा अभाव हाता है।

धमका मवम वग और प्रधान अग है भरित। अमकी रात करत दुअ वाडम मगर गगगआम जावर अुहान कहा है—भक्ति माना थडा। और वह थडा जितनी आवरक पति हा अुचना हा तदक प्रनि भा न।

भक्तिकी जितना गहरा मामामा हम और क्या सायन नी मिन।

धमका अय है परोपकार। अिनता वहनक वाण परापनारम हात वाणे अहकार और मैं वनका निरा ही डागना चाहिय यह वहनका अुन्हानि अब भा मौका नही छाग। वह यहा तक कि गगा नगी वरसातम कीमती थीर बहुत-सा काचड फाकर हमारी जमीनको अुपजाअु बनाता है और आग वहता है—जितना वहनक वाद वापूजा और भा जाडत है कि अपना क्रिया हुआ अुपकार कृतव बालकाक मुहम मुनना पड जिस सकोचक कारण गगा तुरत भाग जाती है।

हमारे दगम जहां देखो वही सफाजीकी कमी है। नलीके घाटपर गहरकी गलियोम—जितना ही नही, मगर भगवानक मदिदराम भी अस्वच्छता और गदगी फली हुआ होती है। मानो घरके बाहर हमारी कोओ जिम्मेदारी ही नही।

परिशिष्ट—२

गांधीजी प्रणीत सर्व-समाजी विवाह-विधि

अपने जावनक महत्त्वक प्रगणवा यागार पवित्र जोर गुम बानक लिअ मनुष्यने कुछ सस्वार और विधियाँ बना रता है । जिनम सबसे महत्त्ववा है विवाह विधि । भिन्न परिवारक भिन्न गात्रक और भिन्न प्रणके दो जीव प्रेमके कारण एकत्र रहना चाहत हैं । अक-दूसरेम आत प्राप्त होनेका निश्चय करत हैं और अक नय सानमानवा स्थापना करना चाहते हैं । अर युवक अक मुपतिवा अपने जीवनकी सामा बनाकर, वग विस्तारका सरल्य करता है । जा दा ध व ज बनना चाहत है । अकके अनेर होन हुआ भी अपनी अंबता दिन पर दिन अधिक महगूत करना चाहते है । जीवनक जिस महान् परिवर्तनके लिअ अचित विधिकी आवश्यकता है ।

जिन आर्गाकी लकर दम्पति जीवनका आरम्भ हाता है अउ जादगोंका प्रतिनिम्ब समाजका विवाह विधिम मिलना चाहिय । या देखा जाय तो परस्पर प्रेम निष्ठा और आर ही सम्बन्धवा मुख्य बन्धन है । जावनम भल बुरे अमरय प्रमग अपस्थित हात हैं । मनुष्यका स्वभाव भी बदल जाता है । जीवनके जादगोंम भा तबदीलियाँ हाती हैं । असे नि यके परिवर्तनम प्रेमका स्थायी रूपस स्थिर रखना और समस्त जावन-यात्राम अुम निभाना अुम समृद्ध करना और अुसकी सुगधि चारा ओर फाकर गृहस्थाश्रमका समाजके लिय आशावादकारा बनाना य है दम्पति-जीवनकी बनियाद ।

पतिकी माली हालतमे तवदीली हुओी तो पत्नी तुरन्त अुसके अनु-
सार अपने जीवनमे, अपनी आदतोमे परिवर्तन कर ही डालती है ।
पतिका वैभव बढा तो पत्नी गृहलक्ष्मी बनकर आसपासके सब लोगोको
सम्हालती है । भाग्यवश पतिको बुरे दिन देखने पडे तो पत्नी श्रम-
सहिष्णु बनती है और अपनी प्रसन्नतासे पतिकी हिम्मत बढाती है ।
अृतु-चक्र बदलते ही, जिस तरह पशु-पक्षियोका जीवन-क्रम बदलता है,
अुसी तरह भाग्य-चक्र बदलते ही पति और पत्नी अेक-दूसरेके प्रति अनु-
कूल होनेकी पराकाष्ठा करते हे ।

वैवाहिक जीवनमे दोनो मिलकर प्रथम अन्न-वस्त्र, घर और अपु-
करण आदि मसाला जुटाते है । गाय, बैल आदि पशुओकी मदद लेते
है । वृक्ष-वनस्पतिसे आहार प्राप्त करते है । कपास, अून आदि तन्तुओ
से कपडे बनाते है । सहजीवनके नियम बनानेके लिअे जीवनका गास्त्र
ढूँढते है । पहाड, नदी, तालाव, वन-अुपवन आदिका सहारा लेते है ।
प्राथमिक अवस्थामे गुफायें ढूँढते है या पहाडके पत्थरको काटकर कृत्रिम
गुफायें, लयन बनाते है । आगे जाकर बडे-बडे प्रासाद बनाते है । नगोकी
(पहाडोकी) रक्षा पाकर, नगरोकी स्थापना करते है । पेशेके अनु सार
समाजके भिन्न-भिन्न वर्ग और वर्णकी स्थापना करते है । आमोद-प्रमोद
के लिअे संगीत, चित्रकला, नाट्य, नृत्य आदिका आविष्कार करते है ।
और अनन्त कालमे अपना स्थान निश्चित करनेके लिअे श्राद्धके द्वारा
परम्परा मजबूत करते है ।

जिस तरह दम्पति-जीवन याने गृहस्थाश्रम और मानवी नस्कृति
दोनो अेक-दूसरेके साथ सम्बन्धित है । अंमे सस्कारी जीवनके आदर्शोको
व्यक्त करनेके लिये हमारी विवाह-विधिमे सप्तपदीकी व्यवस्था की थी ।

“जो लोग सान कदम माय चरने है, अुनके ग्रीच मंत्री होनी है”
यह कहावत पुरानी है । जिनका यह शब्दार्थ कुछ कामका नहीं । जाजाय

रास्न पर सरुटा गग सात वदम क्या सात मो वदम माथ चरत है लेकिन अर दूसरका नाम तर नही जानत । सपनपदीका 12 है कि गुद्ध जीवनके सात जादगोंम जिन लागत अर दूसरका साथ दिया जुटाने बीच जावन माया मया होता है और वह जीवनक जत तर टिन भा सकती है । सपनपदीक जिन सात जादगोंकी स्थापनाके निज जो जावन साधना जरुरा है जुगोको महात्माजीन सपनयन का नाम दिया । यन ही जीवनकी साधना है । मस्कारी जीवन यन दान जीर तपवी बुनियाद पर गन्य है ।

विवाह विधि द्वारा महस्थाश्रमक जीर मानवा जीवनक आर्गांगी व्यस्त करनकी योगिग भिन भिन अपियान की है । हरजर धमन अगन-अपन लागत निज विवाह विधि कामम की है । लेकिन अर जब अनक धर्मोका हम विगाट पुत्र बनान जा र ह तर सब धम-ममभाय या सब धम ममभाव म्तर नजा विधिकी जाप्यरता है । सब धम ममभावक अपि महात्मा गांधीजीन हम असा अर विधि तयार करव दी है । जिन तरह अर विधियो कानूनक द्वारा माय हुआ है असा तरह जिन युगका नजा विधि भा समाज माय जीर विधान माय होना चाहिये ।

स्वतंत्र भारतक राज्यता हम Secular democracy कहत है । Secular क माना जान है वह अरया जिसरा धमक माय काजा सम्बध नजा है । हमका राज Secular है । वह धमका नही मानता है । वह नरता है कि धम अर त्यामगा है और अ्तरा गारा सामाजिक अ्याय और अ्याचारका महारा मितता है ।

हमारा राज्य-व्यवस्था अर अयम Secular नजा है । हमारा सरकार जीर हमारा मन्त्रि भा धार्मिकताका आधार्मिकताका अिग्रन करता है । लेकिन चूमम जिमा ना अर धमका विगय पन्नाय

गांधीजी प्रणीत सर्वसमाजी विवाह-विधि : १७५

नहीं है। सब धर्मोंके प्रति उसके मनमें अकेला आदर है, अकेली श्रद्धा है। असी हालतमें जब भिन्नधर्मी लोगोंके बीच विवाह होनेकी परिस्थिति खड़ी होती है, तब विवाह-विधि असी होनी चाहिये, जिसके अन्दर धार्मिकता पूरी हो, किन्तु किसी विशेष धर्मका आग्रह न हो। धर्मपरायण किन्तु विशिष्ट धर्म-निरपेक्ष विधिके द्वारा ही असे विवाह सम्पन्न हो सकते हैं।

गांधीजीकी बनायी हुयी विवाह-विधि हम नीचे देते हैं। इसके लिये आवश्यक कानून बनाकर लोगोंको अकेली सहूलियत बनाकर देना जरूरी है। स्वराज्य सरकारका यह पवित्र कर्तव्य है। इसके द्वारा समाजकी धार्मिकता बढ़ेगी और सब धर्मोंके बीच कुटुम्ब-भाव पैदा होगा।

गांधीजी प्रणीत विवाह-विधि

श्री..... और श्रीमती.....की विवाह-विधि होती है उसे मैं अश्वर को दरम्यान समझकर करता हूँ। आप दोनों भी असा करे। इस विधिमें आप जो साक्षी बने हैं, अपने मन पवित्र रखे और विवाहाकाक्षीकी पवित्र अिच्छाके सहायभूत हो।

अब मैं अश्वरको धन्यवाद देनेवाला भजन गाता हूँ, सो ध्यानसे सुने।

(राग भैरव, ताल धमार)

“आज मिल सब गीत गाओ.

अस प्रभुके धन्यवाद

जिसका यश नित गाते हैं

गन्धर्व मुनिगण धन्यवाद...आज

मन्दिरोमें कन्दरोमें परवतोके शिखर पर

देते हैं लगातार सौ-सौवार मुनिवर धन्यवाद

आज मिल सब गीत गाओ।”

- १ प्रश्न आप दानो स्वस्य चिरत है ?
 उत्तर (दोनी) जी हाँ ।
- २ प्रश्न आपन कल सात यज्ञ ^१ जसा चलाया गया था किय ?
 उत्तर जी हाँ ।
- ३ प्रश्न आप लोग जानते है न कि यह सम्बन्ध रिपममयके लिये
 और भोगके त्रिय नहीं है ?
 उत्तर जी हाँ ।
- ४ प्रश्न अिस आश्रमम ^२ आप धमभावम त्यागभावस और सेवा
 भावसे प्रवश करत हैं ?
 उत्तर जी हाँ ।
- ५ प्रश्न अिस कारण दाना अ दूसरके भवाजायम विधाय नहीं
 डालोग तकिन अक दूसरको मदद करोग ?
 उत्तर जी हाँ ।
- ६ प्रश्न अक दूसरके प्रति मा बचन कमस हमगा बफानार रहोग ?
 उत्तर जी हाँ ।
- ७ प्रश्न हिन्दुस्तान जब तक स्वतन्त्र नहीं हागा तब तक आप
 प्रजात्पत्ति कामम नहीं लगनका भरसक प्रयत्न करोगे ?^३
 उत्तर जी हाँ ।
- ८ प्रश्न जो अस्पृश्य मान जात हैं उनक साथ राटा वटाका व्यव
 हार करन-करानम मानत है न ?
 उत्तर जी हाँ ।

१ सप्तपञ्च कल गो सात यज्ञ करनेक ह बह विधि अन्तमें लिये गये ह । यह
 यज्ञ विवाहके लिये किये जायें । यहाँ कला शब्दका प्रयोग अिसलिये है । एक घर क्यूँ
 को यह यज्ञ अगन दित्त बनाये गये थे । अिसलिये आश्रम ^२ दान प्रश्न अिस तरह
 रहना चाहिये "आपने मात यज्ञ किये हैं ?

२ गृहस्था-धर्म ।

३ अब अिस प्रश्नका उत्तरत नहीं रही ।

६ प्रश्न स्त्री-पुरुषके समान अधिकार है असा आप मानते है न ?

अुत्तर : जी हाँ ।

१० प्रश्न आप लोग अेक-दुमरेके मित्र है, दासदामी कभी नही, यह भी ठीक है न ?

अुत्तर . जी हाँ ।

११ प्रश्न नम्बर दो प्रश्नमे बताये सात यज्ञ सप्तपदीका स्थान लेते है, वह भी आप समझते ह न ?

अुत्तर जी हाँ ।

अब मै आपको असि बन्धनमे अपने हाथसे काते हुअे सूतके मारफत डालता हूँ । आप लोग असि सूत-हारको जतनसे रखे और याद रखे कि आपका बन्धन कभी आप नही तोडेगे और आपने जो प्रतिज्ञा की है, अुसके पालनमे आप असि धर्मत्रियाको याद करके भगवानसे माँगे कि सर्वशक्तिमान परमात्मा आपको सहाय करे ।

अब हम साथ मिलकर रामधुन गायेगे ।

(विवाह-विधि समाप्त)

सात यज्ञ

१ विवाह बन्धनतक तुम दोनोको अुपवास रखना चाहिये । (फल ले सकते है ।)

२ तुम दोनोको गीताका १२वाँ अध्याय पढना चाहिये । और अुसके अर्थका चिन्तन करना चाहिये ।

३ हरअेक, अपने हिस्सेके जमीनके टुकडे जिनमे पेड अुगे हो, साफ़ करे ।

४ हरअेक गोगालामे जाकर गायकी सेवा करे ।

५ हरअेक कुअेके आसपास सफाअी करे ।

६ हरअेक पाखानेकी सफाअी अच्छी तरह करे ।

७ हरअक राज बात ।

यह सब काम हरअक जहाँ तक हा मके यत्नवा भावनाम कर ।

*

*

*

अस विधिसे अनुसार पहला विराट विधि श्री प्रमाकरजान कराय
या जो हरिजन माँ बापके पुत्र है और जिनके माँ बाप गिस्ती बन
गय थ ।

वरके साथवी बात चीनम गाधीजीन यह भा कहा था I believe
in one man one wife and vice versa for all time

मैं मानता हू कि हर हालतम अक पुरुषको अेक ही पत्नी हो और
अेक स्त्रीको अेक ही पति ।

आश्रम-संहिता

['आश्रम-परम्परा और आश्रम-संहिता' लेखमें जिसका जिक्र आया
अमु आश्रम-संहितामें लिखे गये पचास प्रकरणोंकी फेहरिस्त पाठकोंकी
जानकारीके लिये नीचे दे रहे हैं ।]

- १ प्रार्थना
- २ व्रत-प्रायश्चित्त
- ३ परिग्रह
- ४ शरीरश्रम
- ५ स्त्री-पुरुष सम्बन्ध
- ५ स्वाध्याय
- ७ सामान्य-विवेक
- ८ नित्यकर्म
- ९ यज्ञ
- १० दपतर
- ११ हिसाब
- १२ समयका रोजनामचा और खाताबही
- १३ समय-पालन
- १४ रुग्णालय
- १५ शुश्रूषा-अुपचार
- १६ तेल-कूद-व्यायाम
- १७ अुद्योग-चर्मालय, तुनाओका वायुमण्डल

१८० आश्रम-संहिता

- | | |
|-----------------------------|------------------------------|
| १८ यत्र | ८५ कुत्त, बन्दर त्रि० |
| १९ अखवार | ८६ मुसाफिरी |
| २० पुस्तकाध्य | ८७ अन्त त्रिया |
| २१ सभा समितिषी | ८८ यथस्थापक जीर सत्पायवावा |
| २२ श्रुत्तव | मम्बध |
| २३ बजुग | ८९ आश्रम-समाचार |
| २४ बच्च | ९० आश्रमवा अतिहास त्रिव रखना |
| २५ पडासी | |
| २६ विपद्ग्रस्तोका मद | |
| २७ मकान | |
| २८ दुग्धाध्य | |
| २९ मनी | |
| ० वाजार | |
| ३१ आहार | |
| २ रमाश्राधर | |
| ३३ भोजनगाग | |
| ३४ कोठार | |
| ३५ अतिथि | |
| १ स्वच्छता-सफाआ | |
| २७ रास्त | |
| ३८ पड पत्त | |
| ३९ कूडकी पवम्पा | |
| ४० पाखान | |
| ४१ स्नान | |
| ४२ पाना और जगगायका व्यवस्था | |
| ४३ मार | |
| ४४ जानवर—त्रिया और मरनक राग | |

परिशिष्ट—४

आश्रम-जीवनके अध्ययनके लिए उपयोगी अन्य किताबें

गुजराती

- (१) आश्रम-जीवन (गाधीजी) (प्रकाशकः नवजीवन प्रकाशन मन्दिर,
अहमदाबाद—१४)
- (२) मगळ प्रभात (गाधीजी) ”
- (३) सत्याग्रहाश्रमनो अतिहास (गाधीजी) ”
- (४) वापूना पत्रो : आश्रमनी वहेनोने ”
- (५) वापूना पत्रो : कु० प्रेमा वहेन कटकने ”
- (६) वापूना पत्रो : श्री छगनलाल जोशीने (छा रहा है) ”
- (७) समूळी क्कान्ति (किशारलाल मश्रूवाला) ”
- (८) आश्रमी केळवणी भाग १ (जुगताराम दवे) ”
- (९) ” ” भाग २ ” ”
- (१०) ” ” भाग ३ ” ”
- (११) जीवननुं परोड (प्रभुदास गाधी) ”

हिन्दी

- (१) सत्याग्रह आश्रमका अतिहास (मूल गुजराती) (गाधीजी)
(नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद—१४)
- (२) आश्रमवासियोसे (गाधीजी) ”
- (३) मगळ प्रभात (मूल गुजराती) (गाधीजी) ”
- (४) आश्रम-जीवन ” ”

१८२ आश्रम पहिता

(५) बापूके पत्र-आश्रमकी बहनको (मूल गुजराती) (गांधीजा)
(नवजीवन प्रकाशन मंदिर जयमदापुरा-१९)

(६) बापूके पत्र—कु० प्रभा बहनके नाम (मूल गुजराती)

(७) बापूके पत्र—गंगा बहनके नाम

(८) बापूके पत्र—मीराके नाम (मूल अग्रजी)

(९) आत्मरचना अथवा आश्रमी निष्ठा—१ (जुगतगाम २३)

(१०)

(११)

”
(मूल गुजराती)

(१२) जीवन प्रभात (मूल गुजराती) (प्रभुगाम गांधी)

(सस्ता माहिय मण्डन लि०)

(१३) जीवन सत्कृतिकी बुनियाद (काका माहय काननकर)

(हिन्दुस्तानी प्रचार सभा लि०)

(१४) गांधीजीके आश्रम—१

(१५)

”

२

(सस्ता माहिय मण्डन लि०)

English

(1) Ashram Observances in Action (Gandhiji)
(Navajivan Trust Ahmadabad 14)
(Transl from Gujarati)

(2) From Yeravada Mandir (Gandhiji)
(Transl from Gujarati)

(3) Bapu's Letters to Ashram Sisters
(Transl from Gujarati)

(4) Bapu's Letters to Mira

चित्र-सूची

(१) काकाका नीम

यह पेड़ काकासाहबकी पत्नीका लगाया हुआ है। जब वह बहुत छोटा था, तब उस पर एक बँलका पैर पडनेसे वह करीबन टूटसा गया था। काकासाहबकी हिफाजतमे वह फिरसे जीवित हो गया। आज यह बडा वृक्ष हो गया है। आश्रमभूमिपर खडे हुअे मब वृक्ष आश्रमवासियो के ही प्रयत्नसे फले-फूले है।

(२) सर्वसाक्षी अिमली (अर्पण-पत्रिका)

अिस भव्य वृक्षने ही सवमे पहले बापूका स्वागत किया। यह पुराण पुरुष आश्रमकी मब छोटी-बडी घटनाओका आज साक्षी है। दाडी सत्याग्रहके पहले ८० मत्याग्रहियोने यहीसे अपना कूच गुरु किया था।

(३) अुपासना-मन्दिर (पृ० ७६)

• चार दिशाअे जिसकी चार दीवारे है और आकाश जिसका गुम्बज है अैसी अिस प्रार्थनाभूमिपर सर्वधर्म-समभावकी प्रार्थना रोज मुवह हुआ करती है। अैसा भव्य मन्दिर आज तक किसीने बनाया नहीं और न कोअी बना मकेगा।

(४) आनन्द-निवास (पृ० ९९)

यह मकान अुपवासवीर श्री० भणसाली भाअीके लिअे तैयार करवाया गया था। अिस मकानमे ही स्व० महादेवभाअी सपरिवार रहने थे। काकीका, काकासाहबकी पत्नीका देहान्त अिसी मकानमे हुआ था।

(५) भोजन शाला (पृ० ११०)

अिस मकानमे आश्रमका रमोटा चलता था। आश्रमके छोटे-बडे सब कार्यकर्ता अिभी मकानमे भोजनके लिअे और भोजन-मामग्री तैयार

१८४ आर्य समाज

परन्तु अजि आया करने थे। अरि मकानक रूपरक भागम
भाजन मितता था और नीरक भागम टुट गाने कारण अरि
नीरक भागम आर्यमका पुस्तकालय रावनालय रहता था।

(६) गोपाला (पृ० ११६)

आर्यमकी यह एक अनाथा गागात्रा ह। आज यह आर्यमकी अ
गाय और बहने रहते है। आर्यमकामियोका तथा गहरक लोग
अस्तालाको यहीग गुड दूध भजा जाता था।

(७) मगन निवास (पृ० ११८)

जिस मकानम रापूत मकम पहने जीर एकनिष्ठ माथी स्व०
मगनलाल गाथा रहते र। आर्यमकी गनारा उड पमानपर अरिहोन ह
प्रथम प्रयोग अरि भूमिपर किया था। अरिनेक स्वगनामम में आर
विधवा उन गया ह अरि अरिदुगार रापूत मुन्से निकल पड थे। धाड
अरि रापूतका वास्तव्य अरि मकानम भी रहा था।

(८) बरह विद्यालय (पृ० १२०)

आर्यम भूमिक रूपर उनो हुआ यह मरत पहने अरिमरत र। एक
धम युद्ध क नामन स्व० जी० महादवभाअरि जितषा उणन किया है
अगो पहने अरि मजदूरागी हडताअरि मजदूरान अरि अरिमरतकी नाम
सापरमनीकी गनो भरकर अरि मकानका बनियाउ नधार का है। अरि
मकानके पूव तरफ कानम पू० रापूतका निवास हातरा माभाअरि अरि
मकानका अरि है। और पश्चिमक कानम अरिमाममाहतरा स्वागत नो
अरियोन किया है। अरिमोम अरिगागागा चरती थी जीर गुनाओरी
अरि रा विद्यालयारा नो जानी था।

(य मर विद्य मावरमता आर्यमक विद्यका अरि रा था दता मर
अरि किय मर पश्चिम स्वचिमपारत गाभार अरि गय है।)

